विचार दृष्टि

वर्ष : 6 अंक : 21 अक्टूबर-दिसंबर 2004 15 रुपये

राष्ट्रीय एकता विशेषांक

राष्ट्रीय स्वाभिमान के चरित्र की विडंबना

आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्र-चेतना

बहुभाषाविद् राष्ट्रकवि : सुब्रह्मण्य भारती

विवेक और कर्त्तव्य बोध

नयी सरकार की नयी भाषा नीति

किशन पटनायक : समाजवाद के प्रति समर्पित चिंतक

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल
के
129वें जयंती-समारोह पर
हमारी शुभकामनाएँ

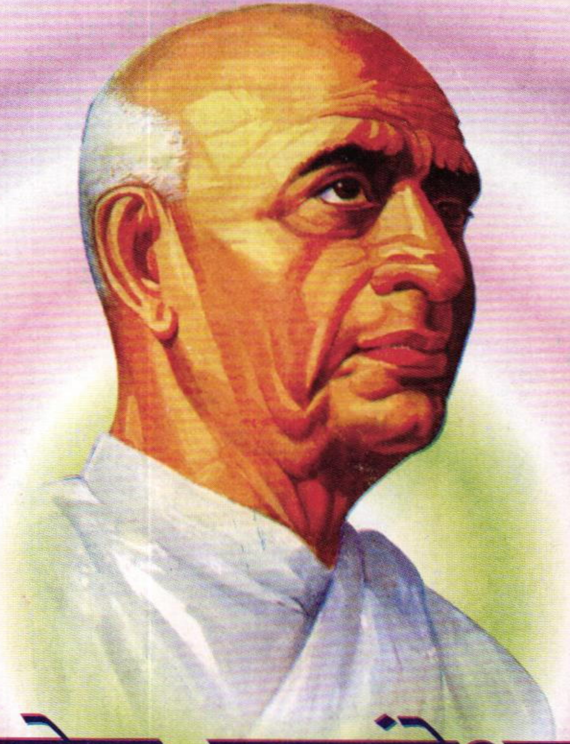

पटेल फाउंडेशन
(सरदार पटेल के विचारों के प्रति समर्पित)

संस्था का ध्येय है –

- सरदार पटेल के विचारों को जन-जन तक पहुँचाना
- राष्ट्रीय एकता व अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखना
- सामाजिक समरसता कायम करना
- सांप्रदायिक सद्भाव का वातावरण बनाना
- पाखंड, अंधविश्वास और रूढ़िवादी प्रवृत्तियों से परहेज करना

तो आइए, आप भी इस अभियान का एक हिस्सा बन इसे अपेक्षित सहयोग प्रदान करें।

147, अंसल चैंबर-II, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली

फोन : 30926763 • मो. : 9891491661

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष-६ अक्टूबर-दिसंबर, २००४ अंक-२१

संपादक व प्रकाशक:
सिद्धेश्वर

संपादकीय सलाहकार : गिरीशचंद्र श्रीवास्तव

प्रबंध संपादक : **सुधीर रंजन**

सहा.संपादक : **मनोज कुमार**

संपादन सहायक : **अंजलि**

साज-सज्जा: दिलीप सिन्हा एवं सुधांशु

शब्द संयोजन : **सोलूसंस प्वायंट**

(दीपक कुमार, अनुज कुमार)

प्रकाशकीय कार्यालय:

'दृष्टि', ६ विचार विहार, यू0-२०७

शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-९२

दूरभाष: (०११) २२५३०६५२, २२०५९४९०

मोबाईल : ९८११२८१४४३, ९८९९१२३८७०३

फैक्स: (०११)२२५३०६५२

E-mail: vichardrishti@hotmail.com

पटना कार्यालय:

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-१

दूरभाष: ०६१२-२२२८५१९

ब्यूरो प्रमुख:

मुम्बई: वीरेन्द्र याज्ञिक ☎ २८८९७९६२

कोलकाता: जितेन्द्र धीर ☎ २४६९२६२४

चेन्नई: डॉ0 मधु धवन ☎ २६२६२७७८

तिरूवनंतपुरम:डॉ0रति सक्सेना ☎ २४४६२४३

बैंगलूर:पी0एस0चन्द्रशेखर ☎ २६५६८८६७

हैदराबाद: डॉ0 ऋषभदेव शर्मा

जयपुर: डॉ0 सत्येंद्र चतुर्वेदी ☎ २२२५६७६

अहमदाबाद : रमेशचंद्र शर्मा 'चंद्र'

प्रतिनिधि:

लखनऊ: प्रो. पारसनाथ श्रीवास्तव,

ग्वालियर: डॉ. महेन्द्र भटनागर

सतना: डॉ. राम सिया सिंह पटेल

मुद्रक: प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड

एक्स-४७, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया,फेज-२, नई दिल्ली-२०

मूल्य: एक प्रति १५ रुपये

द्विवार्षिक: १०० रुपये

आजीवन सदस्य: १०००रुपये

विदेश में:

एक प्रति:**US $3**, द्विवार्षिक:**US $20**,

आजीवन: **US $250**

(पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं)

रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना /2

संपादकीय /4

विचार प्रवाह :

'कामायनी'-पुनर्मूल्यांकन

प्रो. नवल किशोर गौड़ /6

साहित्य :

सलाह-लघुकथा-डॉ. राजनारायण राय /11

तुम्हारे लिए-कहानी

गिरीशचंद्र श्रीवास्तव /12

प्रेमचंद साहित्य की प्रासंगिकता और उसके संबंध में उठे विवाद

-कृष्ण कुमार राय /16

काव्य-कुँज: /18

भगवत दुबे, 'विराट', भदौरिया, वीणा जैन, अलवरी, समीर, राजनारायण, विथिका, 'आरोही', संजय जोशी, मुनि मोहजित कुमार, कुंदन तथा नलिनी कांत

व्यंग्य :

हाय! हिमालय

-डॉ. श्याम सुंदर घोष /23

राष्ट्र-चेतना:

विवेक और कर्त्तव्य बोध

-सिद्धेश्वर /24

आधुनिक हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

- डॉ द्रवेन्द्र आर्य /27

हिंदी का बाल साहित्य और राष्ट्रीय चेतना

- डॉ किशोर काबरा /29

राष्ट्रीयता एवं राजभाषा हिंदी

- डॉ० बालशौरि रेड्डी /32

समीक्षा :

बीसवीं सदी का तेलुगु साहित्य

- डॉ० ऋषभदेव शर्मा /34

समाज की समस्याओं का विशद चित्रण करते सेनूर्यू काव्य संग्रह

- डॉ० सुधा गुप्ता /36

सम्मान :

गाँधी सेवा पुरस्कार /38

शख्सियत :

सरदार पटेल : भारत के एलब्य

डॉ० हेमंत पटेल /40

बहुभाषा विद् राष्ट्र कवि : सुब्रहमणय

डॉ. परमानंद दोषी /43

दक्षिण दृष्टि :

नयी सरकार की नयी भाषा नीति

-डॉ०पी०के० बालासुब्रहमण्यन /46

हैदराबाद की चिट्ठी /47

चेन्नई की चिट्ठी /48

राजनीतिक नजरिया :

बापू से पाठ ले कांग्रेस परिस्कार करे /49

गतिविधियाँ :

अणुव्रत का अधिवेशन /52

सरदार पटेल का 129वाँ जयंती-समारोह /54

संस्मरण : उदयराज, प्रो० शास्त्री तथा किशन पटनायक /58

शिक्षा :

वर्तमान इतिहासकारों की बेचैनी... /65

श्रद्धांजलि : /68

साभार-स्वीकार : /71

जयंती

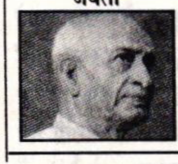

सम्मान

संस्मरण

संस्मरण

श्रद्धांजलि

पत्रिका-परामर्शी

❑ पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह'शशि' ❑प्रो रामबुझावन सिंह ❑श्री गिरीशचंद्र श्रीवास्तव, ❑श्री जियालाल आर्य ❑डॉ0 बालशौरि रेड्डी ❑डॉ0 सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ❑श्री बाँकेनन्दन प्रसाद सिन्हा ❑प्रो0 धर्मेन्द्र नाथ 'अमन' ❑डॉ0 एल. एन. शर्मा

रचनाकारों के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पाठकीय पन्ना

तिलक-दहेज की आवंछनीयता

जूलाई-सितंबर, 2004 की 'विचार-दृष्टि' में आपने अपने 'संपादकीय' अग्रलेख में कांग्रेसनीत 'संप्रग-सरकार की प्राथमिकताओं का विमोचन अच्छा किया है- ग्रामीण श्रेत्रों की समस्याओं, जनसंख्या नियंत्रण, विदेश नीति, बेरोजगारी, धर्म-निरपेक्षता, महिलाओं की प्रगति आदि पर संप्रग' सरकार का ध्यान आकृष्ट किया जाना प्रासंगिक है। अच्छा होता कि तिलक-दहेज की अवांछनीयता की ओर भी सरकार का ध्यान आकृष्ट किया गया होता। संप्रति तिलक-दहेज की अवांछनीयता समाज का कलंक, मातृजाति के जीवन का भीषण अभिशाप बना हुआ है जिसके चलते कन्याओं का विवाह विकट समस्या बना हुआ है। विवाहिताओं की हत्या, भ्रूण-हत्या आदि तिलक-दहेज की अवांछनीयता के कुपरिणाम हीं हैं। 'विचार दृष्टि' द्वारा इस समस्या के निराकरण पर अधिकाधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। यह समाज की ज्वलंत समस्या है। दहेज निषेध अधिनियम कारगर नहीं हो रहा है।

विचार दृष्टि में प्रकाशित व्यंग्य रचनाएँ, 'जमाना है फिदा जल्व-ए-सर पर' और 'जमुनादास की कुर्सी' अच्छी लगी। दोनों में चुटीला व्यंग्य कसा गया है, परंतु, इनमें से पक्की रचना में जो 'श्रृंगार' शब्द (पृ०28) अनेक बार आया है वह गलत है, उसे शृंगार' होना चाहिए। यदि 'प्रेस' (कम्प्यूटर) में टाइप न हो तो श्रृंगार' शब्द शृंगार' के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता हैं 'श्रृंगार' के रूप में कतई नहीं।

आशा है भविष्य में इस पर अपेक्षित ध्यान रखा जाएगा।

डॉ0 डोमन साहु 'समीर', देवघर

ताकि भ्रम न हो....

आपका 'विचार दृष्टि' जूलाई-सितम्बर 2004 अंक पढ़कर अच्छा लगा। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर पर परमानंद दोषी का आलेख सुंदर लगा, पर उसमें दिनकर जी के जीवन के संबंध में कुछ जानकारियों से भ्रम हो सकता है। उसकी ओर आपका एवं लेखक का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। कृपया इसे अन्यथा न लेंगे। दिनकर का जन्म 23 सितंबर को हुआ था जबकि दोषी जी ने अपने आलेख में इसे 23 दिसंबर बताया है। दिनकर जी बी० ए० आनर्स थे वह भी इतिहास में। जब उन्हें लंगट सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर में हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष का पद सौंपा जाने लगा तो सरकार ने उन्हें एम० ए० की डिग्री लेने को कहा था। दिनकर जी एम० ए० की परीक्षा देने का मन बना रहे थे। जब यह बात जय प्रकाश नारायण को मालूम हुआ तो वे दिनकरजी के पास गये और उनसे कहा कि वे एम० ए० की परीक्षा न दें। यह राष्ट्रकवि के लिए शोभा नहीं देती है, आपकी कॉपी की जाँच कौन करेगा? सारा देश आपको राष्ट्रकवि मानता है और सम्मान देता है। हरिऔंध जी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में प्राध्यापक थे पर कहाँ थे एम० ए०। शिवपूजन सहाय भी तो एम० ए० नहीं थे पर छपरा कॉलेज में प्रोफेसर थे ही। दिनकर जी ने एम० ए० की परीक्षा देने का विचार छोड़ दिया । सरकार ने उन्हें 1950 में लंगट सिंह कॉलेज में हिंदी के विभागाध्यक्ष का पद सौंपा जिसपर दिनकरजी 1950-1952 तक रहे। बाद में 1953 में सांसद (सदस्य, राज्य सभा) हो गए। दिनकर जी प्रिंसपल के पद पर कभी न थे। 1964 में उन्होंने संसद छोड़ा। 1962 में भागलपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें डी० लीट० की मानद उपाधि दी थी। पर प्राध्यापक तो वे 1950-54 तक रहे उस समय उनकी डिग्री मात्र बी० ए० आनर्स ही थी। 1959 में राष्ट्रपति द्वारा इन्हें 'पदम्‌भूषण' प्रदान किया गया।

1965 में दिनकरजी भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति हुए। दिनकरजी प्राध्यापक के बाद सांसद हुए और सांसद के अनेक वर्ष बाद कुलपति हुए। 1973 में उन्हें 'उर्वशी' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। इसका उल्लेख इस आलेख में नहीं है। दिनकरजी का देहांत 24 अप्रैल 1974 में मद्रास (चेन्नैई) में रात्रि के समय हुआ। उसी 24 अप्रैल को दिनकरजी गंगाशरण सिंह (सांसद) के साथ तिरूपति से बालाजी का दर्शन करके लौटे थे। दोनों व्यक्ति मद्रास में रुके थे। 25 अप्रैल 1974 को पटना की धरती पर राष्ट्रकवि का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ हुआ था। एक और भी उल्लेखनीय घटना की चर्चा करना अति आवश्यक है। बालाजी (व्यंकटेश्वर) के दर्शन के लिए प्रस्थान करने से पूर्व दिनकरजी जयप्रकाश बाबू से मिलने गये। जयप्रकाश जी बहुत बीमार थे जीवन मरण का प्रश्न था। दिनकरजी ने जयप्रकाश बाबू से कहा 'आपको मेरी उम्र लग जाए। मैं जा रहा हूँ बालाजी के दर्शन के लिए तिरूपति। वहाँ भगवान से यही प्रार्थना करूँगा कि मेरी जिंदगी के बाकी वर्ष आपको मिल जाएं।' वहाँ से दर्शन करने के बाद वे मद्रास (चेन्नै) पहुँचे और उसी रात वहाँ उनका प्राणांत हो गया। दिनकरजी को श्रद्धांजलि देते समय यह घटना सुना कर पटना में जयप्रकाश जी बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोए थे, 'दिनकर ने अपनी उम्र मुझे दे दी'।

दिनकरजी के शब्दों में

'तुमने दिया देश को जीवन,
देश तुम्हें क्या देगा।
अपनी आँच तेज करने को,
नाम तुम्हारा लेगा।

आजातशत्रु , पटना

राजनीतिज्ञ भी त्यागी?

राजनीतिज्ञ त्यागी हो ही नहीं सकता, अंक 20 में आपके द्वारा लिखित 'अंतरात्मा की आवाज' शीर्षक पढ़ा। इस शीर्षक के द्वारा वस्तुतः सोनिया गाँधी के तथाकथित त्याग को आपने उकेरा है। सचमुच में, एक राजनीतिज्ञ ऋषि-मुनि जैसा त्यागी हो ही नहीं सकता। ऐसी स्थिति में सोनिया गाँधी भी इससे अलग नहीं हो सकती। निश्चित रूप से उनका यह त्याग उनकी मजबूरी थी। आपने इस लेखन के द्वारा निर्भीकता, तटस्थता एवं स्वस्थ पत्रकारिता का परिचय दिया है। मैं कामना करता हूँ कि आपकी लेखनी सतत् क्रियाशील रहते हुए लोगों को जागरूक बनाये रखे।

– रामसुजान यादव, पटना

रचनाओं पर आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत है, क्योंकि वे ही हमारे संबल हैं। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं। हमें इस पते पर लिखें--

पाठकीय पन्ना, 'विचार दृष्टि'
यू०-207, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-92

राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संवाहिका

आपके द्वारा संपादित पत्रिका वाकई राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संवाहिका है। बहुत प्रसन्नता हुई इसे पढ़कर व पाकर। इसके लिए आपका आभारी हूँ।

इसमें साहित्य के साथ-साथ आपने राजनीति व सामाजिक विषयों को भी बड़ी कुशलता से समाहित किया है। इसके विस्तार व उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित।

सतीश मराठा, गुड़गाँव

विचार दृष्टि का हर अंक ममस्तोसकर

'विचार दृष्टि' इतने कम दिनों में ही कई अच्छी पत्रिकाओं से आगे निकल गई है और सफलता की उन उँचाइयों को छूने लगी है, जिनकी आशा उसे आपसे थी। इस बार भी साहित्यिक तथा राजनैनीतिक हलचलों को कलम बद्ध किया है। आलेख, कहानी, गीत, ग़ज़ल और सूचनाओं से भरापूरा यह अंक एक गुलदस्ता है। आपका संपादकीय भी हर बार की तरह सार्थक और सटीक है। अंतरात्मा की आवाज में आपने जो विश्लेषणात्मक विचार व्यक्त किए हैं, वह तो अद्‌भूत है, वहाँ तक बहुत कम लोगों की दृष्टि गई होगी।

परमानंद दोषी का राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर पर आलेख अच्छा है। गिरीश चंद्र श्रीवास्तव की कहानी भी प्रभावोत्पादक है। व्यंग जमुनादास की कुर्सी भी मजेदार है। पुस्तकों पर संगोष्ठियाँ भी सार्थक एवं सूचनापरक हैं। डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव ने विलकुल सही कहा है- 'समकालीन राजनीति एवं साहित्य की समानांतर स्थिति - परिस्थिति के जिज्ञासु पाठकों के लिए विचार दृष्टि का अंक ममस्तोसकर होगा, इसमें संदेह नहीं। परतु मैं तो कहूँगा कि कोई एक अंक ही क्यों 'विचार दृष्टि' का हर अंग ममात्तोसकर है।

'विचार दृष्टि' के लिए मेरी शुभकामनाएँ तथा एक के बाद दूसरा हाइकु संकलनों के लिए आपको बधाई।

सतीश प्रसाद सिन्हा, पटना

सामग्री पाठनीय एवं संग्रहणीय

इस पत्रिका में छपनेवाली सामग्री पठनीय और संग्रहणीय होती ही है, साथ में विचारणीय एवं चिंतन पैदा करनेवाली है। इस कारण इस पत्रिका में विचारों पर दृष्टि डालने के लिए पाठक को मजबूर कर देती है।

चंद्र मौलेश्वर प्रसाद, सिकंदराबाद

प्रस्तुति उत्कृष्ट कोटि की

"विचार दृष्टि" का जुलाई-सितम्बर 2004 अंक मिला। पत्रिका की प्रस्तुति उत्कृष्ट कोटि की है। इसमें राजनीति और साहित्य की संतुलित अभिव्यक्ति है। अपने संपादकीय में बड़े बेवाक ढंग से जहाँ भाजपा नीत सरकार की "फीलगुड और भारत उदय" की बखिया उघेड़ी है वहीं नयी सरकार को उनके उत्तरदायित्व के प्रति अगाह किया है। अपने आलेख में डॉ० अमर सिंह "बधान" ने सूचना प्रौद्योगिकी की सकारात्मक भूमिका पर विचार किया है। परमानन्द दोषी एक जाने-माने जीवनीकार हैं उनकी लेखनी से राष्ट्रकवि दिनकर पर लिखा आलेख महत्वपूर्ण है। श्रीकान्त व्यास, रीतेश कुमार, आनन्द कुमार तिवारी, डॉ० जसवन्त सिंह, राजभवन सिंह, डॉ० रामलखन राय की ग़ज़लें पूरे जनमानस को छूती हैं। इसमें साहित्यिक से जुड़े सामाचार भी हैं। डॉ० श्याम सुन्दर घोष ने नारियों को संकल्पबद्ध होकर अपनी स्वतंत्र भूमिका निश्चित करने का आह्वान किया है। डॉ० रमा शंकर श्रीवास्तव ने "जमना दास की कुर्सी" के माध्यम से भारतीय राजनीति की सच्चाई व्यक्त कर दी है। डॉ० श्याम सुन्दर घोष की एक और रचना "सरकार सांसदों विधायकों को भ्रष्ट न करे" सत्य की अनुभूति से भरी रचना है। आज सांसद और विधायक द्वारा विकास मद के रुपये को व्यक्तिगत सम्पत्ति की तरह उपयोग किया जाना सरकारी रूपयों का दुरुपयोग है और भ्रष्टाचार की जननी है। आये दिन ऐसी चर्चा होती है कि 30% से अधिक राशि सिर्फ जनप्रतिनिधियों के कमीशनखोरी में चली जाती है। पहले लाख-दो लाख रुपये आवंटन दिया जाता था ताकि जनप्रतिनिधि कहीं देखें कि किसी आवश्यकता की भारी उपेक्षा हो रही है तो वहाँ विकास कार्य कराया जाय, लेकिन अब तो विकास की राशि उनके माध्यम से ही अनुशंसित होती है। भारत के अवसरवादी, बेईमान राजनीतिज्ञों से ईमानदारी की उम्मीदें नहीं की जा सकती। इसे रोके तो कौन? इसे तत्काल प्रभाव से समाप्त किया जाना लोकहित में है।

ऐसे उत्कृष्ट पत्रिका-प्रकाशन के लिए "विचार दृष्टि" परिवार को साधुवाद।

डॉ प्रभु नारायण विद्यार्थी, राँची

जरा इनकी भी सुनें

विदेश में पैसा कमाने के लिए जानेवालों को होड़ में पड़ने की बजाय देश के बारे में भी सोचना चाहिए।

- आशुतोष गोवारिकर अप्रवासी भारतीयों पर

लेखकों ने अपनी कलम के माध्यम से हमेशा दोस्ती, भाईचारे का संदेश दिया है।

- पूर्व प्रधान मंत्री, वी॰पी॰ सिंह

बिहार एवं उ॰प्र॰ के लोग दिल्ली के आर्थिक विकास में रीढ़ की हड्डी की तरह हैं।

- मुख्यमंत्री शीला दीक्षित

महाराष्ट्र के हाल ही में हुए विधान सभा के चुनाव में "मैन ऑफ द मैच शरद पवार हैं न कि सोनिया गाँधी"

-सुषमा स्वराज, भाजपा नेता

लेखक दिल की आवाज को शब्द देता है।

- इंतजार हुसैन (पाकिस्तान)

शांति प्रक्रिया में अमेरिका और ब्रिटेन की भूमिका नहीं है।

- इंद्रकुमार गुजराल

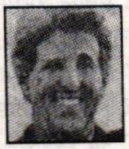

राष्ट्रपति जार्ज बुश जनता से कटे हुए हैं और परिवर्तन के प्रति उनमें कोई रूचि नहीं है।

-राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार जॉन केरी

इस बार भाजपा की वापसी का आधार राष्ट्रवादी स्वरूप और उसकी विचारधारा होगी।

-भाजपा के नए अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी

राष्ट्रीय स्वाभिमान के चरित्र की विडंबना

भारत के पूर्व रक्षा मंत्री और राजग के संयोजक जार्ज फर्नांडीस का अमेरिका के हवाई अड्डे पर वहाँ के सुरक्षा एजेंसियों द्वारा सन् 2002 और 2003 में दो बार जामातलाशी ली गयी। कहा तो यहाँ तक जाता है कि उनके जूते तथा कपड़े भी उतारे गए थे और दोनों हाथों को ऊपर उठाने को कहा गया था, किंतु जार्ज साहब ने कपड़े उतारने की खबर का खंडन किया है। यह वाक्या तब हुआ जब भारत के रक्षामंत्री की हैसियत से वे अमेरिकी सरकार के अतिथि थे और पहली बार जब यह वाक्या हुआ तो उस समय अमेरिका में भारत के राजदूत ललितमान सिंह भी हवाई अड्डे पर मौजूद थे। राजदूत महोदय ने उनके सरकारी अतिथि और रक्षामंत्री होने की दुहाई दी, किंतु तलाशी लेनेवालों ने उनकी एक न सुनी। जार्ज साहब का कहना है कि इस आशय की शिकायत उन्होंने भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से की थी पर अटल जी ने इस बात से अनभिज्ञता जताई।

प्रश्न यह उठता है कि जार्ज साहब ने अपने साथ किए गए इस अभद्र व्यवहार के मामले को अब तक क्यों नहीं देशवासियों के सामने रखा। इस बात का भंडाभोड़ तब हुआ जब अमेरिका के पूर्व उपविदेश मंत्री स्ट्रोब टालबोट की हाल ही में प्रकाशित 'इंगेजिंग इंडिया: डिप्लोमेसी, डेमोक्रेसी एंड दि बम' पुस्तक में इस बात का जिक्र किया गया। देशवासियों के समक्ष इस मामले में अभी तक जबान न खोलनेवाले पूर्व रक्षामंत्री ने उक्त पुस्तक में जिक्र होने के बाद स्वीकारा कि उनके साथ उपरोक्त व्यवहार हुआ था। यहाँ तक कि उन्होंने कभी अमेरिका न जाने का संकल्प भी ले रखा है। सचमुच उनके साथ यह आहत कर देनेवाली घटना है। देश के नेता एवं यहाँ के खासोआम नागरिकों के द्वारा इस देश के रक्षामंत्री के साथ हुए इस व्यवहार को राष्ट्रीय अपमान की संज्ञा देना स्वाभाविक है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री ने तो इस मामले पर अपनी चुप्पी साध ली ही है दिन-रात राष्ट्रीय स्वाभिमान का बीड़ा उठानेवाली भाजपा और उसके परिवार ने मौन रहना ही उचित समझा।

मामले की गंभीरता के मद्देनजर चाहिए तो यह था कि भारत सरकार के द्वारा अमेरिकी प्रशासन को धमकाया जाता और इस व्यवहार के लिए माफी माँगने के लिए उन्हें बाध्य किया जाता और वैसा नहीं करने पर भविष्य में किसी भी मंत्री को अमेरिका नहीं भेजने की चेतावनी दी जाती और भारत आनेवाले अमेरिकी मंत्रियों के साथ भी यही सलूक करने की चेतावनी दी जाती । लेकिन शायद भारत सरकार को अपने रक्षामंत्री के साथ हुआ दुर्व्यवहार न तब नागवार गुजरा था और न अब उसमें कोई बुराई नजर आती है। कारण स्पष्ट है। भूमंडलीकरण के तहत साम्राज्यवादी ताकतें और भारत में उनके समर्थक जो राष्ट्र बना रहे हैं, वह यहाँ की एक अरब से अधिक की आबादी की कीमत पर दो-चार करोड़ लोगों के लिए है। वैसे जो राष्ट्र बम और परमाणु के बल पर ताकतवर होने का भ्रम पाल लेते हैं उनका अपमान निश्चित होता है।

दरअसल सरकारें हों या सरकारी गैर-सरकारी स्वयं सेवी संस्थाएँ या शोध संस्थान, विदेशी पैसा खाने या न खाने की नीयत रखनेवालों के राष्ट्रीय स्वाभिमान का यही हश्र होता है। कर्ज पर चलनेवाली सरकारें और भाड़े पर लगा बौद्धिक कर्म जिस राष्ट्रवाद का दंभ भरता है वह परीक्षा की घड़ी आने पर वैसे ही नंगा होने के लिए अभिशप्त हैं, जैसे जार्ज साहब को होना पड़ा। नंगा-झाड़ा की जलालत से गुजरनेवाले जार्ज एक प्रतीक हैं, इस तरह के स्वाभिमान के।

इस संदर्भ में यह बताने की आवश्यकता नहीं कि अमेरिकी राष्ट्रपति उनके मंत्री और अधिकारी जब किसी दूसरे देश में जाते हैं तो अपनी निजी सुरक्षा व्यवस्था साथ लेकर चलते हैं। केंद्र में राजग सरकार के दौरान भारत के दौरे पर आनेवाले अमेरिकी राष्ट्रपति और उनका दल अपना खुद का सुरक्षा घेरा लेकर आए थे। भारत को यह स्पष्ट कह दिया गया था कि उन्हें यहाँ की सुरक्षा व्यवस्था पर विश्वास नहीं। उन्होंने अपनी सारी कार्यवाइयाँ कूटनीतिक, खाना-पीना और नाच-गाना आदि अपने सुरक्षा घेरे में ही संपन्न किए। भारत की सुरक्षा एजेंसियाँ मात्र तमाशबीन ही बनी रहीं। उस वक्त पक्ष-विपक्ष के न तो किसी नेता ने राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रश्न उठाया और न ही किसी प्रबुद्धजन या सुरक्षा विशेषज्ञ ने ही यह सवाल उठाया कि एक संप्रभुता संपन्न देश की सुरक्षा व्यवस्था का स्थान विदेशी सुरक्षा व्यवस्था कैसे ले सकती है। प्रचलित राष्ट्रीय स्वाभिमान के चरित्र की यह विडंबना काबिले गौर है।

निश्चित रूप से पूर्व रक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडीस की अमेरिका-यात्रा के दौरान कपड़े-जूते उतारकर तलाशी लिया जाना शर्मनाक है। राजनयिक शिष्टाचार की मर्यादाओं का सरेआम उल्लंघन किया जाना यह दर्शाता है कि अमेरिका की निगाह में भारत की कोई हैसियत नहीं है। सच तो यह है कि यह अपमान किसी व्यक्ति विशेष तक सीमित नहीं है। यह पूरे राष्ट्र पर प्रहार था। अटल जी जैसे अनुभवी नेता ने इस बात को नजरअंदाज कर दिया और जहाँ अमेरिका से संबंधों में विस्तार के प्रयास होते हैं तो वहीं दूसरी ओर उसी देश में हमारे देश के रक्षामंत्री के साथ ऐसा शर्मनाक व्यवहार किया जाता है। यह पूरे देश का अपमान है।

सच मानिए तो तलाशी लेना साम्राज्यवादी शक्तियों का पुराना रवैया रहा है। जार्ज की तलाशी कोई नई या अलग-थलग घटना नहीं है। यह एक राष्ट्रीय परिघटना है। बापू को भगवान के ओहदे से उतार दें तो वह अमेरिका जा सकते हैं। आज के भारतवासी डॉलर के लालच में ही हर कीमत पर अमेरिका जाने के लिए संघर्षरत हैं। अमेरिकी दूतावास में वीजा हासिल करने में होनेवाले अपमान बोध की कथाएँ अक्सर सुनने को मिलती हैं। पुरानी कहावत है- 'कर्ज या खैरात का पैसा आदमी के आत्मसम्मान को खा जाता है।' आपको याद होगा पिछले दिनों अमेरिका के रिचर्ड आर्मिटेज जब भारत की यात्रा पर आए तो उन्होंने हँसते हुए जार्ज की घटना पर माफी मांगने की खानापूर्ति की। यह भी साम्राज्यवादी ताकतों की ऐंठन का द्योतक है। तलाशी लिए जाने पर मातहतों को होनेवाले अपमान बोध की एक घटना की याद हो आई जिसे आपके समक्ष रखना मैं आवश्यक समझता हूँ। प्रेमचंद की ख्यातिप्राप्त कृति 'गोदान' (1936) में ब्रिटिश साम्राज्यवादी

सत्ता का प्रतीक दारोगा होरी के घर की तलाशी का ऐलान करता है। ऐलान होते ही होरी को अपनी इज्जत बचाने की फिक्र पड़ जाती है। वह गाँव के साहूकारों से रुपया कर्ज लेकर तलाशी के अपमान से बचना चाहता है। जैसे ही वह अँजुरी भर रुपया लेकर दारोगा को रिश्वत देने के लिए चलता है, उसकी पत्नी धनिया बीच में कूद पड़ती है। वह धक्का मारकर होरी के हाथ के रुपए जमीन पर गिरा देती है। होरी को ललकारते हुए कहती है, 'ऐसी बड़ी है तेरी इज्जत जिसे कर्ज की घूस से बचाने चला है।' उसका चंडी रूप देखकर एक बारगी दारोगा भी सकते में आ जाता है और बिना तलाशी लिए वापस लौट जाता है। यहाँ यह गौरतलब है कि साम्राज्यवादी शिकंजे में फंसे होने के बावजूद धनिया का विवेक दारोगा द्वारा किए गए तलाशी के ऐलान को सरेआम सफल चुनौती दे डालता है, लेकिन साम्राज्यवादी ताकतें आजाद भारत के रक्षामंत्री का एक नहीं, दो-दो बार नंगा-झाड़ा तलाशी लेती हैं और वह चूँ तक नहीं करता। यहाँ तक कि आजाद भारत की सरकार कोई प्रतिरोध भी दर्ज नहीं करती। यही है यहाँ के राष्ट्रीय स्वाभिमान के चरित्र की विडंबना।

खैर जो जो, पूर्वरक्षामंत्री के साथ अमेरिकी सुरक्षा एजेंसियों द्वारा की गई बदसलूकी की घटना अत्यंत शर्मनाक, दुर्भाग्यपूर्ण और राष्ट्रीय स्वाभिमान पर चोट पहुँचानेवाली घटना है। जिस देश में अतिथियों का आदर-सत्कार देवी-देवताओं की भांति किया जाता हो उस देश के शीर्षस्थ नेता के साथ ऐसा व्यवहार इस बात को दर्शाता है कि इक्कीसवीं सदी के दौरान भी अमेरिका में भेदभाव की नीति बरकरार है। जार्ज साहब के मामले से ठीक विपरीत कल्पना करें कि यदि किसी अमेरिकी मंत्री, उद्योगपति अथवा किसी बड़े अधिकारी के साथ इस तरह का व्यवहार भारत में किया जाता तो क्या बुश प्रशासन आसमान सिर पर नहीं उठा लेता? हलांकि जिस प्रकार जार्ज साहब ने कभी अमेरिका न जाने की कसम खाई है, उससे लगता तो यही है कि आपसी टीस भी गहरी है। संभव है कि उस वक्त सोसलिस्ट इंटरनेशनल आड़े आ गया हो या तहलका के बीच बड़ी मुश्किल से दोबारा पकड़ में आई रक्षामंत्री की कुर्सी। अब जब दोनों नहीं है, तो शायद आपका जख्म फिर से हरा हो रहा है। आखिर तभी न 'राष्ट्रीय स्वभिमान मंच' स्थापित करने की आवश्यकता आपने महसूस की है। ऐसा प्रतीत होता है कि इनका सोया राष्ट्रीय स्वाभिमान अब जागने की स्थिति में आ गया है। खैर आप जानें और आपका ज़मीर जाने।

जहाँ तक अमेरिका का प्रश्न है उसे पूरी दुनिया ही अब आतंकी नजर आ रही है। कभी इसी शक में अफगानिस्तान की पहाड़ियों में सिर पटकता है, कभी इराक के रेगिस्तानों में पिटता है। कभी ईरान, उत्तरी कोरिया को 'शैतान की धूरी' बताता है तो कभी मेहमानों को भी 'शैतान' समझने लगता है। दरअसल अमेरिका को शक की बीमारी हो गई है। कुल मिलाकर उसका मर्ज-ए-शक बुलंदियों पर है। और आज के दिन, दुनिया ने तमाम मर्जों का इलाज खोज निकाला, पर शक आज भी लाइलाज है। इसके चलते न जाने कितनी तलवारें खींची, लाशें गिरीं, पीढ़ियों के लिए भाई-भाई दुश्मन बन बैठे, पर शक न खत्म होना था और न हुआ। मुझे स्मरण हो आती है, ब्रेख्त की एक प्रसिद्ध कहानी, जिसमें हिटलरी शासन से बेजार माँ-बाप काफी देर से लापता अपने ही बेटे पर शक करते हैं कि कहीं वह बदनाम खुफिया-एजेंसी गेस्टापो को उनके बारे में खबर देने तो नहीं चला गया? इसी शक का आज ताजा शिकार अमेरिका है जिसका खमियाजा जार्ज साहब को भुगतना पड़ा और जिसने हमारे देश के राष्ट्रीय स्वाभिमान की पोल खोली। देश के स्वाभिमान की रक्षा हेतु बेहतर तो यह होता कि अपनी जामा तलाशी देने की जगह जार्ज साहब हवाई अड्डे से ही भारत वापिस लौट आते। देशवाशियों को यह जानने का अधिकार तो है कि आखिर ऐसी कौन सी मजबूरी थी कि वे देश के स्वाभिमान पर होनेवाले इस हमले का साधन बन गए? क्या इससे देश की सेनाओं का मनोबल ऊँचा होगा या देशवासियों का सिर शर्म से झुकेगा? उल्लेख्य है कि रक्षामंत्री देश की तीनों सेनाओं का प्रतिनिधित्व भी करता है। बेशक केंद्र की वर्तमान संप्रग सरकार को भी इससे सबक लेने की जरूरत है ताकि देश के स्वाभिमान को ठेस पहुँचानेवाली ऐसी घटना दोबारा न घटे। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आजादी के बाद से किसी भी मंत्री का विदेश में इतना घोर अपमान कभी नहीं हुआ। देश के हर दल, हर नेता को यह समझ लेना होगा कि देश के गौरव व गरिमा के साथ कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए। यह बात ठीक है कि 11 सितंबर की घटना के बाद ट्रेड टॉवर के दूध से जला हुआ अमेरिका यदि जार्ज की छाछ को फूँक-फूँक कर पी रहा था, पर उसे यह भी पता होना चाहिए था कि जार्ज उस वक्त सिर्फ सोसलिस्ट फर्नांडीस नहीं, भारत के रक्षामंत्री भी थे। पता नहीं जार्ज साहब का जज़्बा कहाँ चला गया था। उन्हें तो अपने गुरु, लोहिया जी से सबक ले लेना चाहिए था। क्या उन्हें यह स्मरण नहीं कि जब डॉ. लोहिया अमेरिका गए थे तो उन्होंने कितना हंगामा खड़ा कर दिया था। जरा सी अवहेलना के तिल को उन्होंने ताड़ बना दिया था, क्योंकि वे खुद्दार और सिद्धांतवादी आदमी थे। बापू को जब रेल में से धक्का देकर उतार दिया गया था तो उन्होंने ब्रिटिश राज को ही सिंहासन से उतार दिया। यदि जार्ज सिर्फ अमेरिकी हवाई अड्डे से ही भारत वापस आ जाते तो निश्चित रूप से अमेरिकी प्रशासन का बुखार चढ़ जाता और बुश प्रशासन को याहआलम हो जाता।

राष्ट्रीय एकता विशेषांक

'विचार दृष्टि' का यह अंक 'राष्ट्रीय एकता विशेषांक' है जिसमें राष्ट्रीयता के विविध आयामों को संजोया गया है। देश के नागरिकों में विशेषकर राजनीति के कर्णधारों में जिस प्रकार तेजी से राष्ट्रीयता की भावना का ह्रास होता चला जा रहा है उसमें यदि देश के जाने-माने चिंतक-विचारकों के सारगर्भित देशभक्ति की भावना के उद्घोष लोगों में राष्ट्र-चेतना और राष्ट्रीय स्वाभिमान जगा सके तो इस अंक की सार्थकता सिद्ध होगी।

'कामायनी'- पुनर्मूल्यांकन

प्रो. नवल किशोर गौड़

प्रस्थान-सूत्र-कामायनी की मूल पाण्डुलिपि एवं मुद्रित ग्रंथ

1971 के वे दिन 'कामायनी' के पाठकों के हर्ष और उल्लास के दिन थे, क्योंकि उन्हीं दिनों 'कामायनी' की मूल पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि का मुद्रित प्रकाशन हुआ था और पुस्तक विक्रेताओं की नई पुस्तकों के बुक-रैक पर प्रदर्शन एवं विक्रय के लिए उसका विज्ञापन हुआ था। हिंदी जगत् की यह एक विस्मय-जनक अभूतपूर्व घटना थी क्योंकि उसके पूर्व हिंदी के किसी ग्रंथ की पाण्डुलिपि का प्रकाशन नहीं हुआ था। हर्ष और उल्लास की उसी पाठकीय उत्सुकता से 'कामायनी' की मूल पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि की एक प्रति मेरे अध्ययन-कक्ष में आ गई। तब से 'कामायनी' के प्रथम संस्करण, 1947 के संस्करण और 1995 में 'प्रसाद' जी के सुपुत्र श्री रत्नशंकर प्रसाद-द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण की 'छाया-प्रति' की वह सँगिनी बनी हुई है।

संभवत: हिंदी काव्य में अब तक 'कामायनी' की ही पाण्डुलिपि का प्रकाशन हुआ है। आज पाण्डुलिपि और मुद्रित ग्रंथ का तुलनात्मक पाठ-शोधन (टेकस्चुयल क्रिटिसिज्म) एक महत्वपूर्ण विषय है। पाठ-शोधन के अंतर्गत पाण्डुलिपि और मुद्रित ग्रंथ के केवल पाठांतरों पर ही विचार नहीं, वरन् मेरी धारणा है कि दोनों ग्रंथों में किन्हीं विशेष शब्दों की आवृति कितनी बार और किन विशेष अर्थों में हुई है, इस पर भी प्रकाश डाला जाए, जैसे 'जीवन' शब्द का 'कामायनी' में 98 बार, 'नील' शब्द का 38 बार, 'पुरुष-प्रकृति' का 29 बार, 'शून्य का 17 बार, 'अंतरिक्ष' का 12 बार, 'आवरण' का 10 बार आदि शब्द ऐसे हैं जो कवि की चिंतन-प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हैं। ऐसे प्रयोगों के मर्म तक पहुँचना और कवि की भाव-भूमि का उद्घाटन करना वास्तविक पाठ-शोधन होगा। यह कार्य श्रम-साध्य, समय-साध्य और ज्ञान-साध्य है, इसमें संदेह नहीं। मैं अपनी अल्पज्ञता से परिचित हूँ। नब्बे वर्ष का यह अस्थि-पंजर कब चरमरा कर गिर जाएगा, कहा नहीं जा सकता। अभी कुछ दिनों पूर्व चार-पाँच दिनों तक अचेतावस्था (कोमा) में था। प्रभु की कृपा और डाक्टरों की दक्षता से चेतना जैसे गई थी वैसे ही लौट भी आई। काम करने योग्य अभी भी नहीं हूँ, पर बन्धुवर नृसिंह पण्डितजी को मैने आश्वासन दिया था कि 'कामायनी-पुर्नमूल्यांकन' की यह श्रृंखला टूटने नहीं पाएगी। इस आश्वासन का पालन कर रहा हूँ। इस श्रृंखला के कम-से-कम चार निबंध - अधिक भी हो सकते हैं - अभी शेष हैं - (1) प्रबंधकाव्य-कला का नया प्रतिमान (2) कामायनी का वैदिक परिदृश्य (3)'कामायनी' में प्रत्यभिज्ञा की प्रतिध्वनि और(4) कामायनी में नटराज का शब्द-चित्र। ये मेरी प्राथमिकताएँ हैं।

'प्रसाद' जी की हस्तलिपि सुंदर, सुगठित और सुपाठ्य है- यह तो पाण्डुलिपि का प्रत्येक पृष्ठ बोलता है। पता नहीं कि पाण्डुलिपि शब्द का अभिधेयार्थ (पीत-वर्णी लिपि) कभी साहित्य में प्रयुक्त होता था या नहीं। यह भी ज्ञात नहीं कि कब 'पाण्डु' शब्द का अर्थ 'हस्त' में परिणत हो गया। आज 'पाण्डुलिपि' का जो अर्थ हिंदी में प्रचलित है, वह है- किसी लेखक द्वारा अपनी हस्तलिपि में अपनी रचना का प्रस्तुतीकरण। इसी अर्थ में यहाँ हम 'कामायनी' की मूल पाण्डुलिपि पर विचार कर रहे हैं।

पाण्डुलिपि के प्रथम पृष्ठ पर ग्रंथ का नाम 'कामायनी' (श्रद्धा) 'प्रसाद' जी की हस्तलिपि में अंकित है जिसके नीचे 'प्रसाद 'जी का हस्ताक्षर है। तिथि है श्री पंचमी, 1984 (सन् 1928)। पाण्डुलिपि के अंतिम पृष्ठ पर भी 'प्रसाद' जी का हस्ताक्षर है और तिथि है 'महाशिवरात्रि, 1992 (सन् 1936)। निष्कर्ष यह कि कामायनी की रचना और पाण्डुलिपि की प्रस्तुति में लगभग आठ वर्ष लगे। इन आठ वर्षों में 'प्रसाद'जी के स्वाध्याय, चिंतन-मनन और रचना-प्रवृति में जो अंतर आए उनका स्पष्ट प्रमाण यह पाण्डुलिपि है जिसमें अनेक शब्द और वाक्यांश स्थानांतरित हुए हैं और बीसियों पंक्तियाँ काटी हुई हैं और एक-दो स्थान पर बिल्कुल अपाठ्य हैं।

पाण्डुलिपि और मुद्रित ग्रंथ के प्रकाशन के आकार-प्रकार में भी बहुत अंतर है। पाण्डुलिपि 24 X 18 सेन्टीमिटर के इमिटेशन आर्ट पेपर पर छपी है। प्रत्येक पृष्ठ के फोटोप्रिंट की प्रतिलिपि मुद्रित की गई है। पाण्डुलिपि की पंक्ति-व्यवस्था भी मुद्रित ग्रंथ से भिन्न है। पाण्डुलिपि की पहली पंक्ति इस प्रकार है-

हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह,

एक पुरुष भींगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह।

'निर्वेद', 'दर्शन' और 'आनंद' को छोड़कर संपूर्ण कामायनी में उपर्युक्त प्रकार की पंक्ति - व्यवस्था अपनाई गई है। पाण्डुलिपि में 'आमुख' (मुद्रित ग्रंथ की भूमिका) नहीं हैं। इस प्रकार 294 पृष्ठों में मुद्रित ग्रंथ की पाण्डुलिपि सिमट कर केवल 155 पृष्ठों में रह गई है।

'कामायनी' की पाण्डुलिपि या मुद्रित ग्रंथ पर विचार करते समय हमें यह बात ध्यान में रखनी है कि 'कामायनी' की कथावस्तु का विभाजन प्राचीन काव्याचार्यों- द्वारा निर्दिष्ट 'सर्ग-बद्ध' नहीं वरन् 'भाव-बद्ध' है। 'कामायनी' की कथावस्तु के विभिन्न अंशों को 'प्रसाद' जी ने न अपने 'आमुख' में और न कहीं अन्यत्र 'सर्ग' की संज्ञा दी है। किंतु हिन्दी आलोचना में प्राय: 'चिंता सर्ग', 'वासना सर्ग' का प्रयोग किया जाता है। 'सर्ग' शब्द का एक विशेष अर्थ होता है। उस अर्थ में 'कामायनी' सर्ग-बद्ध रचना नहीं है। इस विषय पर हम इस श्रृंखला के अगले निबंध 'प्रबंधकाव्य-कला का नया प्रतिमान' में विचार करेंगे। यहाँ तो इतना ही कहना है कि 'कामायनी' की कथावस्तु भाव-स्तंभों पर खड़ी है, सर्गो पर नहीं। इसलिए इनके लिए हम 'भाव-स्तंभ' शब्द का प्रयोग करना उचित समझते हैं।

ऊपर कहा गया है कि पाण्डुलिपि और मुद्रित ग्रंथ के पाठ-शोधन में कला-रचना की दृष्टि से बहुत से विषयों पर विचार किया जा सकता है। इस निबंध में हम इस ग्रंथ की पाण्डुलिपि और मुद्रित ग्रंथ में शीर्षकों के संबंध में जो विसंगतियाँ दिखाई देती हैं, उनके औचित्य-अनौचित्य पर विचार कर रहे हैं पाण्डुलिपि और मुद्रित ग्रंथ में शीर्षकों का यह अंतर कई दृष्टियों से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसलिए

उन पर विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है। ये विसंगतियाँ मुख्यत: चार नामकरणों के संबंध में हैं जो निम्नलिखित हैं।-

पाण्डुलिपि का नामकरण
मुद्रित ग्रंथ का नामांतरण

1. यज्ञ
कर्म

2. इला (बुद्धि)
इड़ा

3. युद्ध
संघर्ष

ग्रंथ का शीर्षक कामायनी (श्रद्धा)
कामायनी

1. पाण्डुलिपि के 'यज्ञ' शीर्षक का 'कर्म' में नामांतरण

पाण्डुलिपि में 'लज्जा' भाव-स्तंभ के बाद कथावस्तु का शीर्षक 'यज्ञ' दिया गया है। मुद्रित ग्रंथ में इसका नामांतरण 'कर्म' किया गया है। नि:संदेह, यह परिवर्तन प्रूफ-संशोधन के अवसर पर स्वयं 'प्रसाद' जी द्वारा किया गया है। एक शब्द का यह परिवर्तन अतीन्द्रिय प्रतिभा का चमत्कार है। 'यज्ञ' (यजन) में 'प्रसाद' जी के अति प्राचीन भारतीय मनुष्य की जीवन-पद्धति का गहरा ज्ञान झलकता है। 'कर्म' में महच्चेतना की क्रिया-शक्ति का भौतिक स्वरूप परिलक्षित होता है। 'यज्ञ' से 'कर्म' में परिवर्तन यह भी सिद्ध करता है कि 'कामायनी' की कथावस्तु के विभिन्न भागों के शीर्षक भाव के स्तर पर समान है। एक शब्द के इस परिवर्तन में 'प्रसाद' जी की शब्द-कला की सूक्ष्मता का परिज्ञान भी प्रकट होता है।

मानव-विकास क्रम में यह बात सिद्ध हो चुकी है कि स्तनपायी चतुष्पद जीव से द्वि-पद मनुष्य (हामो इरेक्टस) का विकास हुआ और यह द्वि-पद मनुष्य ही काल-क्रम में प्रज्ञ मानव (होमो सेपियन्स या थिंकिंग मैन) के रूप में विकसित हुआ । पाश्चात्य नेतृत्त्व विज्ञान (ऐन्थ्रोपोलोजी) एवं जीव-विज्ञान (माइक्रोबायोजोजी) अब यह भी स्वीकार करने लगा है कि इस पृथ्वी पर प्रज्ञ -मानव का विकास सर्व-प्रथम एशिया और अफ्रिका में हुआ और तत्पश्चात यूरोप में, एशिया में वैदिक साहित्य न केवल भारत का ही वरन् विश्व का प्राचीनतम वाड.मय है। ऐसे वाड.मय का विकास केवल प्रज्ञ-मानव ही कर सकता है। भारत में आर्य-जाति कहीं बाहर से आई थी, यह विचार अब खण्डित हो चुका है। अपने प्रसिद्ध नाटक 'स्कन्दगुप्त' में मातृगुप्त के प्रसिद्ध गीत में 'प्रसाद' जी ने कहा था - 'कहीं से हम आये थे नहीं, हमारा रहा पालना यहीं। 'प्रसाद'जी की यह उक्ति अब सर्वमान्य हो रही है 'कामायनी' में उनकी यह उक्ति भी वैज्ञानिक दृष्टि से मान्यता प्राप्त कर चुकी है-

'यह मनुष्य आकार चेतना का है विकसित,
एक विश्व अपने आवरणें में है निर्मित।'
-संघर्ष'

अपने 'पालने' से उतरकर गुहा-निवासी द्विपद भारतीय मानव जब उपत्यकाओं में आया तो उसे हिम-ताप-वर्षा से सुरक्षा के लिए गुहा-सदृश आवास की आवश्यकता प्रतीत हुई। बाहर वन थे और ऊँची-नीची भूमि। वनों को काट कर भूमि का समतल करके आवास का निर्माण किसी एक द्विपद मनुष्य के बूते की बात नहीं थी। तब तक भाषा का भी प्रारंभिक निर्माण हो चुका था। गुहावासी उस द्विपद मनुष्य ने पुकार लगायी यजन! तीन वर्णो के इस शब्द का अर्थ था -

य ' आओ, इकट्ठा हो, एकत्र आओ (संस्कृत का य धातु)

ज - निर्माण करो, उत्पन्न करो

न - तृतीय पुरुष बहुवचन की क्रिया-विभक्ति

द्विपद आर्यो के विकास का यह प्रथम चरण था। 'यजन' शब्द उनकी सभी सामूहिक क्रियाओं (गृह-निर्माण, कृषि आदि) का उच्चार -शब्द (कौल-वर्ड) बन गया। विकसित प्रज्ञ-मानव (वैदिक आर्यो) को 'यजन' शब्द द्विपद आर्यो से विरासत में मिला था। अपनी विकसित प्रज्ञा और परिष्कृत भाषा में उन्होने 'यजन' के 'यज्ञ' में परिणत कर लिया। भौतिक निमार्ण और कर्त्तव्य का जो सामूहिक या सामुदायिक शब्द था वह अब आकाशीय देवताओं की पूजा- प्रार्थना का शब्द बन गया। 'यजन' व्यक्ति-परक शब्द नहीं था, 'यज्ञ' भी व्यक्ति-परक शब्द नहीं है - याज्ञिक, पुरोहित, ऋत्विज, उद्‌गाता, अध्वर्यु के बिना 'यज्ञ' नहीं होता था और न आज होता है। 'यजन' और 'या' दोनों व्यक्तिगत नहीं, समष्टिगत क्रियाएँ हैं। कालांतर में दैविक और आध्यात्मिक यज्ञ पर भौतिक सत्ता अधिकार करने लगी, जैसे राजसूय यज्ञ आदि, पर उसका जो दैविक स्वरूप था वह ज्यों-का-त्यों बना रहा, किंतु कर्म-काण्ड में फंस गया।

प्रसाद जी ने 'यज्ञ' के अंतर्गत, यजन, पाक-याज्ञ, कर्म-यज्ञ (पशु-बलि) आदि का प्रयोग कर के याज्ञिक जीवन-पद्धति का रूप प्रस्तुत किया है। श्रद्धा' किंतु मनु हैं कि -

'यज्ञ यज्ञ की कटु प्रकार से रह न सके अब धिर वे।' - 'कर्म'

उनकी कामना है कि -

'कर्म - यज्ञ से जीवन के सपनों का स्वर्ग मिलेगा

इसी विपिन में मानस की आशा का कुसुम खिलेगा।'
- 'कर्म'

असुर-पुरोहित किलात आकुलि के पौरोहित्य में वे कर्म-यज्ञ करते हैं जिसमें श्रद्धा के पालित मृग-शावक की बलि दी जाती है। इस यज्ञ की समाप्ति का दृश्य है-

'यज्ञ समाप्त हो चुका तो भी धधक रही थी ज्वाला

दारुण दृश्य! रुधिर के छींटें! अस्थि-खण्ड की माला।' - 'कर्म'

श्रद्धा को प्रसन्न करने के लिए मनु ने यह यज्ञ किया था। किंतु वह रिक्त होकर अपने शयन-कक्ष में यह विभत्स दृश्य देखकर खिन्न पड़ी थी। सोम-रस-पान से उन्मत्त मनु उसे मनाने के लिए जब उसके कक्ष में पहुंचते हैं तब वह उन्हें यज्ञ का वास्तविक स्वरूप बतलाती है-

'रचना-मूलक सृष्टि - यज्ञ यह यज्ञ-पुरुष का जो है,

संसृति - सेवा भाग हमारा उसे विकसने को है।' - 'कर्म'

श्रद्धा के शब्दों में यह है 'प्रसाद' जी की 'यज्ञ' की परिकल्पना!

वैदिक काल के प्रारंभ में 'यज्ञ' की जो रूप-रेखा थी वह उत्तर वैदिक काल में कर्मकाण्ड के बोझ से दब गई और बुद्ध - काल तक आते-आते वह हिंसात्मक - यज्ञ में परिणत हो गई। बौद्ध - धर्म के उत्थान के कारणों में याज्ञिक हिंसा भी एक मुख्य कारण था। ऊपर की पंक्तियों में 'प्रसाद' जी की दृष्टि में यज्ञ पुरुष है- 'पुरुष ये वेद यच्च सर्व उद्‌भूतं यच्च भाव्य' - ऋक्

पुरुष - सूक्त, 107.90। यह सृष्टि उसकी रचना है अत: सृष्टि यज्ञ है।

स्वभावत: 'कामायनी' के प्रूफ-संशोधन के अवसर पर प्रसाद' जी की काव्य - प्रतिभा ने यह अनुभव किया है यज्ञ शब्द इस कथांश के शीर्षक के लिए उपयुक्त नहीं है। 'कामायनी' के अन्य खण्डों के शीर्षक जीवन- गत भावों पर आधारित हैं। 'यज्ञ' कोई स्वाभाविक मानव भावना नहीं है। यह उसका आरोपित सामाजिक - धार्मिक कर्म है। कर्म जीवन का स्वाभाविक धर्म है, 'इच्छा -ज्ञान - क्रिय-युक्त:' महच्चेता की भौतिक अभिव्यक्ति है। इसीलिए सारी सृष्टि और मनुष्य कर्ममय है। अत: यज्ञ शीर्षक का 'कर्म' में नामांतरण उपयुक्त है।

2. इला (बुद्धि) का इड़ा में नामांतरण

'कामायनी' के 'आमुख' में (जो नि:ससंदेह पाण्डुलिपि के बाद लिखा गया था) 'प्रसाद' जी ने सर्वत्र 'इड़ा' शब्द का प्रयोग किया है। इस प्रसंग में जो भी वैदिक उद्धरण 'प्रसाद' जी ने आमुख में दिए हैं, उनमें 'इड़ा' शब्द ही प्रयुक्त है, 'इला' नहीं, जैसे 'इड़ामकृण्वन्मनुषस्य शासनीम्' (ऋक -1.31.11) एवं 'आना यज्ञ भारती तूयनोत्यिड़ा मनुष्यदिह चेतयन्ती (ऋक् -10.110.8) में सप्ष्टत: 'इड़ा' शब्द ही आया है। 'आमुख' में केवल एक बार 'इला' शब्द आया है-

'लौकिक संस्कृत में 'इड़ा' शब्द पृथ्वी अर्थात् बुद्धि वाणी आदि का पर्यायवाची है। 'गो भू वाचस्विड़ा इला:' (अमर कोश)-आमुख पृ. 7

इसके अतिरिक्त 'आमुख' में 'प्रसाद' जी ने जहाँ कहीं भी उसका उल्लेख किया है, वहां 'इड़ा' शब्द का ही प्रयोग किया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि पाण्डुलिपि प्रस्तुत करते समय 'प्रसाद' जी के मस्तिष्क पर लौकि संस्कृत-कोश की 'इला' छाई हुई थी। मेरा यह अनुमान इस बात से सिद्ध होता है कि पांडुलिपि के 'इला बुद्धि' भाव-स्तंभ में मनु को अपने परिचय में वह स्वयं कहती है- 'मैं हूँ इला' (पांडुलिपि, पृ. 70)। इतना ही नहीं। 'निर्वेद ' भाव - स्तंभ में आठ बार और 'दर्शन' में तीन बार 'इला' शब्द का प्रयोग हुआ है। प्रूफ-संशोधन के अवसर पर 'प्रसाद' जी ने इन सारी त्रुटियों का परिमार्जन कर मुद्रित 'कामायनी' में सर्वत्र 'इला' के स्थान पर 'इड़ा' कर दिया है।

मुद्रित ग्रंथ के 'इड़ा' भाव-स्तंभ में जब इड़ा का अविर्भाव होता है तो उसे देखकर मनु की पहली प्रतिक्रिया होती है- 'आलोकमयी स्मित चेतना आई यह हेमवती छाया' - (मुद्रित ग्रंथ, पृ. 169)। उमा हैमवती की कथा केनोपनिषद के तृतीय खण्ड में वर्णित है। देवताओं को दंभ हो गया था कि उन्होंने अपनी शक्ति के बल पर असुरों पर विजय पाई है। उनकी शक्ति की परीक्षा करने के लिए ब्रह्म स्वयं एक यक्ष के रूप में प्रस्तुत हुए। जब एक-एक कर अग्नि, वायु अदि देवता अपनी शक्ति की परीक्षा में असफल सिद्ध हुए तब अंत में स्वयं इन्द्र शक्ति-परीक्षा के लिए उपस्थित हुए। किन्तु उनके आते ही वह यक्ष अंतर्धान हो गया और उसके स्थान पर उमा हैमवती प्रकट हुई जिसने इन्द्र को यक्ष का वास्तविक परिचय देते हुए ब्रह्म की शक्ति का परिज्ञान कराया! 'प्रसाद' जी ने इड़ा की 'हेमवती की छाया' की उपमा दी है। यह सत्य ही है क्योंकि इस छाया से मनु को जो भी प्रेरणा प्राप्त हुई वह मात्र बैद्धिक थी, उसमें भाव-तत्त्व का समावेश नहीं था। इसलिए मनु के लिए वह हैमवती की 'छाया' मात्र थी। 'प्रसाद' जी की काव्य-प्रतिभा में गहरे उतरने पर ऐसा प्रतीत होता है कि पाण्डुलिपि की रचना करते समय उनके मस्तिष्क पर लौकिक संस्कृत की 'इला' भले ही छाई हुई हो, किन्तु उनकी परा-वाक् में 'इड़ा' (बुद्धि-तत्त्व) की जो भाव-प्रतिभा बैठी हुई थी, वह उनकी वैखरी वाणी की इन पंक्तियों में उतर आई है-

बिखरी अलकें ज्यों तर्क- जाल

वह विश्वमुकुट-सा उज्वलतम शशि खण्ड सदृश था स्पष्ट भाल।

हृदय-स्थल प एकत्र धरे संसृति के सब विज्ञान-ज्ञान

था एक हाथ में कर्म-कलश वसुधा जीवन-रस सार लिये

दूसरा विचारों के नभ को था मधुर अमय अवलंब दिये।

चरणों में थी गति भरी चाल।

-इड़ा

'इड़ा' का यह शब्द- चित्र 'कामायनी' के अनुपम शब्द-चित्रों में से एक है। जब कवि की लेखिनी चित्रकार की तूलिका बन जाए और चित्रकार की विविध-वर्णी तूलिका कवि की लेखिनी में उतर आए, तभी साहित्य में ऐसे दुर्लभ शब्द-चित्रों की सृष्टि होती है। 'प्रसाद' जी इस कला में पारंगत है। पाण्डुलिपि की इला अंधकार में विलीन हो जाती है। यह है कलाकार की सजग अवधनता!

3. पांडुलिपि के 'युद्ध' का संघर्ष में नामांतरण

मुद्रित 'कामायनी' की कथावस्तु के विभिन्न भागों का नामकरण मानव-जीवन के विभिन्न स्थाई भावों के आधार पर हुआ है क्योंकि इस रचना का लक्ष्य जीवन-तत्त्व की विकास-प्रक्रिया को अभिव्यक्त करना है। पाण्डुलिपि में कथावसतु के एक अंश का शीर्षक 'युद्ध' है जिसका मुद्रित ग्रंथ में नामांतरण 'संघर्ष' के रूप में हुआ है। 'युद्ध' मानव-जीवन का कोई स्थाई भाव नहीं है, वह एक अस्थाई स्थिति है। वह एकपक्षीय भी नहीं है, उभय या बहुपक्षीय होता है। 'युद्ध' सृजनात्मक नहीं, विध्वंसक क्रिया है। 'कामायनी' में 'युद्ध' जैसी कोई स्थिति भी नहीं है। इसमें जो स्थिति है वह प्रजापति मनु का अतिचार (इड़ा पर बलपूर्वक अधिकार) की स्थिति है। इड़ा देवताओं की स्वसा (बहन) है। इसलिए उस पर हुए अतिचार के प्रति देवताओं का क्रुद्ध होना स्वाभाविक ही है। उनके क्रोध के कारण प्राकृतिक उत्पात होता है जिससे प्रजा संत्रस्त है। वह त्राण के लिए प्रजापति के पास आती है।

वहाँ पहुँच कर प्रजा देखती है कि उसकी रानी इड़ा वन्दिनी की स्थिति में है। स्वभावत: उनमें रोष उत्पन्न होता है। मनु यह समझ नहीं पा रहे है। कि यह प्राकृतिक उत्पात क्यों हो रहा है। प्रजा की परित्राण-याचना को वे अपने विरूद्ध विद्रोह मान लेते है। और उसका दमन करने के लिए वे राजदण्ड उठाकर आक्रमण कर बैठते है। रोष-युक्त प्रजा प्रतिरोध करती है। रक्तपात होता है। तभी देव-कोप के कारण रूद्र के नाराच से छूटा हुआ वाण मनु को लगता है और वे आत होकर धराशायी हो जाते हैं।

यह युद्ध तो नहीं है, एक संक्षिप्त संघर्ष अवश्य है। इस संघर्ष का मूल कारण मनु की एकाधिकार -ग्रस्तता है जिसके वशीभूत होकर वे इड़ा पर अधिकार करने चाहते हैं।

जीवन में स्पर्धा और प्रतियोगिता का महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्पर्धा में संघर्ष अनिवार्य होता है। किंतु 'संघर्ष' का अर्थ 'युद्ध' तो नहीं होता । मनु की एकाधिकार - ग्रंथी उन्हें शिश्नोदर - जीविता के गढ़े में ढकेल देती है - स्वयं प्रजापति अतिचारी बन जाता है और देवताओं

का कोप-भाजन बनता है।

'प्रसाद' जी ने 'कामायनी' के 'आमुख' में देव-कोप का संकेत दिया है। तदनुसार प्रूफ-संशोधन के अवसर पर उन्होंने 'युद्ध' का 'संघर्ष' में नामांतरण कर दिया है।

4. ग्रंथ का शीर्षक 'कामायनी'

पाण्डुलिपि में ग्रंथ का शीर्षक 'कामायनी (श्रद्धा) है किंतु मुद्रित गंथ में 'श्रद्धा' विलोपित हो गई है और अकेले 'कामायनी रह गई है।

निस्संदेह श्रद्धा इस ग्रंथ की सबसे क्रियाशील सूत्रधारिणी है। भारतयी साहित्य में जीवन-तत्त्व के विकास की कथावस्तु का सूत्रधार (नायक) पुरुष रहता आया है। पुरुषार्थ - धर्मार्थकाममोक्षाणाम् - भारतीय संस्कृति का मूलाधार रहा है और पुरुष ही पुरुषार्थ का संवाहक माना जाता रहा है, नारी नहीं। शैव-दर्शन ही एक ऐसा भारतीय दर्शन है जो सृष्टि को महच्चेतना का आभासन मानता है और महाच्चेतना के आभासन में नर-नारी का भेद नहीं है। दोनों में चैतन्य- तत्त्व समान रूप से परिव्याप्त है। दोनों की आकृति-प्रकृति में जो अन्तर है वह उनके निर्माण के जीव-वैज्ञानिक भौतिक तत्त्वों के कारण है। पुरुष को उत्तम और नारी का निम्न कोटि में निर्धारण पुरुष-प्रधान समाज ने कर रखा है। नैसर्गिक और प्राकृतिक रूप से चैतन्य - तत्त्व दोनों में समान है।

भारतीय साहित्य के इतिहास में एक-मात्र 'कामायनी' ही नारी -प्रधान प्रबंधकाव्य है। इतना ही नहीं। श्रद्धा (भाव-तत्त्व) और इड़ा (बुद्धि -तत्त्व) के सहारे कर्म-तत्त्व (मनु) के माध्यम से मानवता के विकास की रूप-रेखा प्रस्तुत करना इसका मुख्य उद्देश्य है। भारतीय इतिहास का प्राचीनतम अतीत इसकी पृष्ठभूमि और मानवता का सुदूरतम क्षितिज इसका गन्तव्य है। यह यात्रा केवल मनु, श्रद्धा और इड़ा की ही नहीं, समसत मानवता की महा-यात्रा है, और इस यात्रा की सूत्रधरिणी है- श्रद्धा।

भारतीय चिंतन-मनन और 'दर्शन' में प्रकृति 'पुरुष' की शक्ति मानी गई है, भले ही 'पुरुष' को चेतन और 'प्रकृति' को अचेतन माना गया हो, पुरुष को विज्ञ और प्रकृति के संयोग से ही व्यक्त सृष्टि का अविर्भाव होता है। 'प्रकृति' शास्वत' और 'प्रधान' भी है। पुरुष-प्रकृति ही भौतिक धरातल पर यह सत्य विस्मृत हो गया, और नारी नर की सबलता नहीं, उसकी दुर्बलता मान ली गई। यह एक भ्रम है और 'कामायनी' उस भ्रम का निराकरण है। 'कामायनी' में श्रद्धा की महत्ता इतने से ही सिद्ध नहीं होती कि इस ग्रंथ में उसके नाम के शीर्षक से एक स्वतंत्र अध्याय है और अन्य अध्यायों में उसकी प्रमुख भूमिका है और सारे ग्रंथ में उसका नामोल्लेख 55 बार हुआ है, वरन अपनी आकृति -प्रकृति, रूप- रंग, शील-स्वभाव, चिन्तन-मनन एवं दर्शन में वह अद्वितीय है- केवल 'कामायनी' में ही नहीं, रामायण के बाद के समस्त हिन्दी प्रबंधकाव्यों में भी।

श्रद्धा, मनु और इड़ा 'कामायनी' के यह तीनों पात्र वैदिक स्रोत से आए हैं। किन्तु वहां उनके नामोल्लेख के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता। उनका रेख-चित्र भी कहीं नहीं मिलता जिसमें रंग भरा जा सके। अत: 'प्रसाद' जी ने इन पात्रों की जो प्रतिमाएं गढ़ी हैं, उनकी कलात्मक प्रतिभा के सृजन की मौलिकता है। इन नामों के आधार पर जिस काव्य की रचना उन्होंने की है, उसका उद्देश्य भी वैदिक इतिवृत प्रस्तुत करना नहीं है। परिवेश और वातावरण वैदिक हैं अवश्य, किंतु उनके आधार पर मानव-जीवन का विकास प्रस्तुत करना उनका लक्ष्य है। अत: उनके व्यक्तित्व का सृजन 'प्रसाद' जी की मौलिक प्रतिभा की देन है।

पौरुष, कर्मठता और कर्मोत्तेजन मनु का व्यक्तित्त्व है। मनु भारतीय मानव -प्रजाति के आदि-पुरुष है जो जीवन की 'ज्वालामुखियों को संदर्प कुचलते हुए (श्रद्धा) आगे बढ़ते जाते है। इड़ा अरूप बुद्धि-तत्त्व की वह कर्मशलिनी प्रतिमा है जो अव्यवस्था में व्यवस्था उत्पन्न करके जीवन का एक नया रूप प्रस्तुत करती है। और , श्रद्धा भारतीय चिंतन-मनन और परमतत्त्व (महच्चेतना) को व्यावहारिक भाव-भूमि पर उतारने की सूत्रधारिणी है। उसकी प्रेरणा में केवल भौतिक विकास नहीं, सामरस्या कल्याण और मंगल की शक्ति है। ये तीनों चित्र कला-प्रतिभा के अदभुत चमत्कार है। उनके चरित्र और व्यक्तित्त्व के अनेक पहलू है। उनके रूप-रंग, आकृति-प्रकृति, चिंतन मनन, इच्छा - क्रिया आदि में भौतिक और अभौतिक दोनों का मणिकांचन संयोग है। अत: वे कला की अनुपम कृतियाँ है।

श्रद्धा एक विलक्षण कृति है। उसका मानवीय रूप-सौंदर्य है-

> नील परिधान बीच सुकुमार
> खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
> खिला हो ज्यों बिजली का फूल,
> मेघ-वन बीच गुलाबी रंग।

- श्रद्धा

उसकी आकृति 'प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्ति' (श्रद्धा) है। उसके व्यक्तित्त्व में पांचों तन्मात्राएँ (रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द) घनीभूत हो उठी हैं। उसकी वाणी में 'महाचिति' का उच्चार है, उसके क्रिया-कलापों में जीवन का सदाचार है और उसकी अंतरत्मा महाच्चेतना के विचारों से परिपूर्ण हे। वैदिक स्रोत में, तो श्रद्धा एक ऋषिका है जिसके एक-मात्र सूक्त (श्रद्धा हृदय याकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु - पाण्डुलिपि, पृ. 1. 'प्रसाद' जी द्वारा उद्धृत), किन्तु 'प्रसाद' जी ने श्रद्धा को जीवन और जगत के बहु-आयामी 'सृष्टि-यज्ञ' की सूत्रधारिणी बनाकर नारी के पूर्णत्व पर पहुँचा दिया है। 'लज्जा' में रति की प्रतिकृति उससे कहती है-

> नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पगतल में।
> पीयूष स्रोत-सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।
> देवों की विजय, दानवों की हारों का होता युद्ध रहा,
> संघर्ष सदा उत-अंतर में जीवित रह नित्य विरूद्ध रहा।
> आँसू की भींगे अंचल पर मन का सब कुछ रखना होगा,
> तुमको अपनी स्मित रेखा से यह संधि-पत्र लिखना होगा।

-'लज्जा'

ऐसा है श्रद्धा का व्यक्तित्त्व जिसे 'प्रसाद' जी ने मनु के शब्दों में व्यक्त किया है-

> हुई केंद्रीभूत-सी है साधना की स्पूर्ति,
> दृढ़ सकल सुकुमारता में रम्य नारी मूर्ति।

-'वासना'

श्रद्धा दिव्य है, स्वतंत्र है, स्वावलंबी है, महाचिति की प्रवक्ता है और जीवन की सूत्रधारिणी है। 'कामायनी' में एक मात्र श्रद्धा ही है जिसकी वाणी में शुष्क प्रत्यमिज्ञा दर्शन की रसात्मक प्रतिध्वनि सुनाई देती है। 'कामायनी' में श्रद्धा की परिधि अपरिमेय है। नाम-रूप के धरातल

पर अपरिमेय भी परिमेय हो जाता है। श्रद्धा नाम-रूप-धरिणी नारी है। वह मनु-पुत्र मानव की जननी है। नारी अरूप, अनाम और इन्द्रियातीत प्रकृति है जो प्रत्यामिज्ञा-दर्शन में शिव या महाच्चेतना की अभिन्न क्रिया-शक्ति है। इस भौतिक परिधि को लाँघ कर श्रद्धा 'कामायनी' बन जाती है।

पाठक यह न समझें कि 'श्रद्धा' और 'कामायनी' दो व्यक्ति है क्योंकि उनके दो भिन्न नाम हैं। वस्तुत: 'कामायनी' श्रद्धा की ही विस्तृति (एक्सटेंशन) है। सायण के हम ऋणी है जिन्होंने कहा है - 'कामगोत्रजा श्रद्धानमर्षिका।' (प्रसाद, आमुख प1. 5) । काम कोई गण-गोत्र हो या न हो, पर 'प्रसाद' जी ने 'काम' और 'रति' को कामायनी में 'एक-एक पूरा अध्याय ही दिया है। प्रलय के पूर्व आर्यावर्त में देव-संस्कृति की प्रधानता थी। देवगण 'चिर-कुमार-वय नित्य विलासी' (चिन्ता) व्यक्ति थे। काम और रति उनके सहचर थे। प्रलय में देव-सृष्टि विध्वस्त हो गई। देवगणों के साथ काम - रति का भी शरीर-पात हो गया। किन्तु वे 'अनंग' होकर भी जीवित रहे 'काम' अनंग रूप में और रति अपनी प्रतिकृति 'लजा' के रूप में । 'काम' और 'लज्जा', 'कामायनी' के इन दो अध्यायों का यही महत्व है।

सायण की उक्ति ने 'प्रसाद' जी को ऋग्वेद के प्रसिद्ध 'नासदीय-सूक्त' में पहुँचा दिया जहाँ ऋषि पूछते हैं कि जब न सत् था और न असत्, जब न प्रकाश था और न अन्धकार, तब इस सृष्टि की रचना के पूर्व क्या था? इसी सूक्त में वे स्वयं ही उत्तर भी देते हैं-

काम: तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेत: प्रथमं यदासीत,

सतो बन्धुमसति निरविन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा। - ऋक् -10.11.129

(सृष्टि की रचना के पूर्व परमसत्ता के मन का प्रथम रेत (बीज) वह काम था जो सृष्टि-रचना की प्रेरणा बनी।

काम का अर्थ है- अरूप सूक्ष्म कामना या इच्छा जिसे उपनिषदों में इस प्रकार पल्लवित किया है- अरूप सक्ष्म कामना या इच्छा जिसे उपनिषदों में इस प्रकार पल्लवित किया है-

1. अथो खलु आहु: काममय एवायं पुरुष इति - वृहदारण्यक, 4.4.5.

2. सोऽकाम्यत द्वितीयो य आत्मा जायते इति - वृहदारण्यक, 1.1.4.

3. सोऽकाम्यत बहुस्यां प्रजायेयेति - तैत्तिरीय, शिक्षा- वल्ली

4. स ईक्षत लोकात्रु सृजा इति - ऐतरेय, प्रथम अध्याय

5. स ईक्षां चक्रके - प्रश्नोपरिषद, षष्ठभाग, 3

भारतीय दर्शन के अनुसार परमसत्ता की इच्छा (काम) ही सृष्टि की रचना और उसकी सभी क्रियाओं की प्रेरक शक्ति है, चाहे वह तुलसी की 'रामायण' हो, रवीन्द्र की 'गीतांजलि' हो, गांधी का 'सत्य के प्रयोग' हो या आइन्सटीन का 'सापेक्षता-सिद्धांत' (थियोरी ऑफ रिलेटिविटी) या 'प्रमात्रा-सिद्धान्त (क्वान्टम थियोरी) हो । विश्व की प्रत्येक मानव-क्रिया का उत्स 'लिबिडो' का ऊर्जा केंद्र है, यह पाश्चात्य मनोविज्ञान भी मानता है।

'लिबिडो' प्राथमिक जीव-वैज्ञानिक ऊर्जा है, इसे जीव-विज्ञान (बायोलॉजी) भी स्वीकार करता है। अत: काम की शक्ति या ऊर्जा विश्वजनीन तत्त्व है, यह सर्वमान्य है।

कम् + घञ् (काम) - काम + अय् + ल्युट (कामायन) + ड.ीप (नी) से व्युत्पन्न 'कामायनी' शब्द भाषा का एक नया शब्द है। यह शब्द न तो वैदि संस्कृत में और न लौकिक संस्कृत में उपलब्ध है। 'प्रसाद' जी के पूर्व के हिंदी एवं अन्य किसी आधुनिक भारतीय साहित्य में भी यह शब्द उपलब्ध नहीं है। इस शब्द की संरचना का श्रेय साहित्य -मनीषी जयशंकर 'प्रसाद' को है। इतना ही नहीं। इस शब्द को और उसमें सन्निहित विराट अर्थ को उन्होंने अपनी सर्वोत्तम रचना के शीर्षक के रूप में अधिष्ठित किया है।

आदि कवि वाल्मीकि के पूर्व 'राम' शब्द भी था और 'अयन' शब्द भी। किन्तु दोनों शब्दों, को संयुक्त करके आदि कवि ने 'रामायण' शब्द की जो संरचना की उस शब्द की अर्थाभिव्यक्ति भारतीय राष्ट्र के प्राणों में रमी हुई है। 'शकुन्तला' शब्द भी ऐसे ही बना है। विश्वामित्र की तपस्या भंग करने के पश्चात् इन्द्र द्वारा प्रेषित अप्सरा मेनका अपनी नव-जात कन्या को मालिनी नदी के तटवर्ती वनों में छोड़कर इन्द्र-लोक को चली गई। शकुन (चील) पक्षी वन्य-पशुओं से उसकी सुरक्षा कर रहे थे। मालिनी नदी में स्नान कर लौटते हुए महर्षि कण्व की दृष्टि उस बालिका पर पड़ी। उसे उठा कर वे अपने आश्रम में ले आए और चूंकि शकुन पक्षियों -द्वारा अब तक वह सुरक्षित रही थी, इसलिए उन्होने उसे 'शकुन्तला' नामित कर दिया। महर्षि व्यास 'महाभारत' के आदि-पर्व में ऐसा ही उल्लेख करते हैं।

हजारों वर्षों के बाद कवि-मनीषी कालिदास की प्रतिभा के सपतवर्णी इन्द्रधनुष में वह वालिका उनके 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में इस प्रकार उद्दीप्त हो उठी कि वह विश्व-साहित्य की एक दिव्य नारी बन गई। 'शकुन्तला' नाम शकुन पक्षियों के आधार पर पड़ा था। 'कामायनी' नाम की संरचना विश्व-सृष्टि के रचयिता महाच्चेतना के मन के प्रथम स्पंदन' काम के आधार पर ही नहीं, वह स्वयं उसकी आत्मजा है, उस आधार पर हुई है। काम विश्व-व्यापी तत्त्व है, इसमें कोई सन्देह नहीं। शब्द पारिजात है और अर्थ उसकी सुगंध। कौन कह सकता है कि विश्व एक दिन इस श्ब्द-पारिजात की सुगन्ध से विमुग्ध नहीं हो पाएगा?

'कामायनी' की रचना और प्रकाशन के अभी सत्तर वर्ष भी नहीं हुए हैं। हिन्दी भारत की लोक-भाषा है और राज्य-भाषा भी है। पर अभी उसे भारत की राष्ट्रभाषा और विश्व के राष्ट्र-संघ की भाषा की स्वीकृति नहीं मिल पाई है। वह उस ओर अग्रसर है। किंतु भारत के प्राय: सभी विश्वविद्यालयों और विश्व के अनके देशों में उसके उच्चतम अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था हो चुकी है। जहाँ-जहाँ ऐसी व्यवस्था हो चुकी है वहाँ-वहाँ 'कामायनी' का प्रवेश हो चुका है। सत्तर वर्ष काल के महाप्रवाह में एक क्षण भी नहीं होता, किंतु इतनी कम अवधि में 'कामायनी' का इतना अधिक प्रसार उसकी महत्ता की स्वीकृति का प्रमाण ही है। पंतजलि के 'महाभाष्य' के 'प्रयोगेण अभिज्वलित: शब्द:' के अनुसार 'कामायनी' वैश्विक भाषा के धारा-प्रवाह के साथ बहती चली जा रही है और उसकी सांस्कृतिक सुगंध भी फैलती जा रही है।

संपर्क: 19, गोकुल नगर,
उदयपुर-313001
(राजस्थान)

लघु कथा

सलाह

डॉ. राज नारायण राय

प्राध्यापक डा. राकेश के स्टडी रूम में श्रीमती वर्मा अपने चिकित्सक पति डा. प्रकाश वर्मा के साथ दनदनाती आ घुंसी। उन्होंने शोधपरक निबंध - लेखन छोड़ मुस्कुराते हुए स्वागत किया 'आइए । बैठिये....।'

डा. वर्मा बोले, 'लगता है, गलत समय में आ गया।'

'नहीं ऐसी कोई बात नहीं।'

पत्नी की ओर मुखतिब होते हुए बोले, 'तुम बैठो। दस मिनट में मिलकर आता हूँ अपने कलिग डा. परेश से।'

मिसेज वर्मा ने चारो ओर नज़रें घुमाईं तो लगा कि यह कमरा नहीं, पत्रिकाओं, पुस्तकों से ठसाठस भरा स्टोर रूम है। झट पूछ बैठीं, ' क्या राकेश जी इस कूड़े-कबाड़ के बीच रहते हैं।

'मूझे तो इन शोध पत्रिकाओं, विद्वानों की लिखी किताबों के साथ बात करने में, सोचने में बड़ा मज़ा आता है। इट इज़ ए ग्रेट प्लेज़र फॉर मी।'

'बरसात में तो स्टिंक करता होगा यह रूम।' सोने की ज्वेलरी में सजी युवती का वाक्य उछला।

' नहीं। मुझे तो नहीं करता। जो ए. सी. कमरे में रहता है, ए. सी. कार में घुमता है उसे तो स्टिंकिंग लगना ही चाहिए।'

'इसी बीच डॉ. राकेश की पत्नी तृप्ति आ गई, ट्रे में स्क्वैश लेकर। गिलास थमाती बोली, 'इन्हें तो सिर्फ किताबों का ही शौक है - न कहीं तीर्थाटन करने का, न सिनेमा देखने का, क्रिकेट भी नहीं भाता।

एक घूँट ले मिसेज वर्मा ने पूछा, 'आपने यहाँ जमीन ले ली होगी?'

'अभी कहाँ खरीदी। पता नहीं, किस्मत में रिटायरमेंट के बाद कहाँ रहना लिखा है।'

'क्यों कब आए यहाँ?'

'1970 में ।'

'अरे तीस साल से हैं। लिया नहीं एक-दो एकड़ का प्लॉट।'

'नहीं ।'

'बड़ी भारी भूल की'। कह मिसेज वर्मा ने राकेश पर नज़र टिका दी। अगर ले लिया होता तो अब तक करोड़पति बन जाते।

'वक्त निकल गया। अब क्या फिक्र करना।'

'राकेश जी ! किस विषय की टिचिंग करते हैं'

'जिस विषय को बंक कहा जाता है यानी इतिहास का' कह हो.. हो.. कर हंस पड़े।

'टिचिंग में क्या रखा है? आप हिस्ट्री के स्टुडेंट रहे तो पी.सी.एस. या आई.ए.एस. करना था।

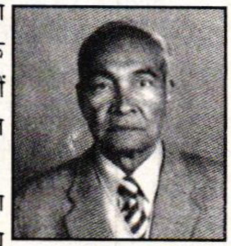

'हाँ, करना चाहिए था लेकिन प्रशासनिक कार्यों में रूचि जो नहीं है इनकी।' मिसेज तृप्ति ने स्पष्ट उत्तर दिया।

'वैसे इंजिनियरिंग या डाक्टरी पढ़ते तो ज्यादा अच्छा होता।' आप तो ब्लंडर पर ब्लंडर करते गए हैं ज़िंदगी में।'

राकेश के क्रोध का पारा ऊपर चढ़ रहा था। अत्यंत संयत स्वर में कहने लगा, भाभीजी, इनके अलावे एक ब्लंडर और किया है - भारी ब्लंडर। इज़ाजत दें, तो कहूँ।'

'आप होशियार, दूरदर्शी, अल्ट्रा मॉडर्न और खूबसूरत हैं। काश! विवाह कर लिया होता आप से। सही समय पर ठीक सलाह मिलती। क्या कहूँ, किस्मत ही खराब रही शुरू से ।'

मिसेज़ वर्मा खिलखिला पड़ीं अपनी तारीफ सुन।

कुछ ही मिनटों में डा. राकेश अपनी नयी किताब में खो गए।

संपर्क: 227, पंडितवाड़ी, फेज-1
देहरादून-248007

सरदार पटेल की १२९वीं जयंती पर
शुभकामनाओं सहित

मे0 न्यू पायल रेस्टूरेन्ट

मखनियाँ कुआँ रोड, चरक छात्रावास के सामने,
ओंकार पैलेस, पटना-800004

उपलब्ध सुविधाएं

वातानुकूलित चैम्बर तथा परिवार के लिए केबिन की व्यवस्था।
विद्यार्थियों के लिए विशेष लंच पैकेट की व्यवस्था माहवार उचित मूल्य पर।
शादी-विवाह एवं अन्य आयोजनों के लिए भोजन एवं अल्पहार की समुचित व्यवस्था।
विद्यार्थियों के लिए विशेष सुविधा एवं उत्तम प्रबंध।

संपर्क करें :- रामेश्वर प्रसाद, मोबाइल- ९८३५४७४९८८

कहानी

तुम्हारे लिए

गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव

शहर में दंगा हो गया। कुछ ही घंटों में शहर के अनेक क्षेत्रों में कर्फ्यू लगा दिया गया। संतरी ने आकर आरती से कहा--

'मैडम, कंट्रोल रुम से खबर आई है कि दंगों के चलते कर्फ्यू लग गया है। आप सावधान रहिये। बिना जाने दरवाजा मत खोलिए।'

शाम होते ही आरती मुंह हाथ धोकर तैयार होकर बैठ गई और अपने पति अविनाश के लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। अविनाश अधिकतर घर देर से ही लौटता था और अब तो दंगे के कारण कब लौटेगा कुछ पता नहीं। तभी फोन की घंटी बज उठी। फोन पर अविनाश ही था। उसने कहा--

'आरती, मुझे आने में देर हो जाएगी। तुम घर बंद करके अंदर ही रहना।'

उसने कहा--

'संतरी बता रहा था कि दंगा हो गया है और कर्फ्यू लग गया है। क्या बात है आप ठीक तो हैं।'

वह बोला--

'मैं बिल्कुल ठीक हूं। एहतियात के तौर पर कर्फ्यू लगा दिया गया है। घबराने की कोई बात नहीं है।'

फिर फोन कट गया। आरती का मन घबराने लगा। अविनाश शहर का डी.एस.पी. था, आये दिन इस तरह की घटनाएं हुआ करती थी जब वह घर देर से आया करता था, लेकिन इधर कर्फ्यू कभी नहीं लगा था। तरह तरह की आशंकाओं से आरती चिंतित हो उठी। टी.वी पर चल रहे कार्यक्रम में मन लगाने की चेष्टा की, लेकिन मन जैसे उचट सा गया और रह रह कर वर्षों पहले घटी हुई पुरानी घटनाओं में उलझ गया।

उस दिन भी तो दंगा हो गया था और सुबह/दोपहर/शाम का कुछ समय छोड़कर समूचे शहर में चौबीस घंटे का कर्फ्यू लगा दिया गया था। उन दिनों पापा बहुत बीमार चल रहे थे और उनके लिए बिस्तर से उठना आदि कठिन हो गया था। दिन भर तो अम्मा उनके पास रहतीं और उनकी देख-भाल किया करती पर रात के समय आरती उनके सिरहाने सोफे पर बैठकर उनकी निगरानी करती। पापा कहते--

'अभी कितना और जीना है पता नहीं। बेटी तुम्हारे हाथ भी पीले नहीं कर सका। अगर मैं नहीं रहूं तब तुम लोगों का क्या होगा?'

उनके मुंह पर हाथ रखते हुए आरती कहती--

'पापा, ऐसी अशुभ बातें मत बोलिए।

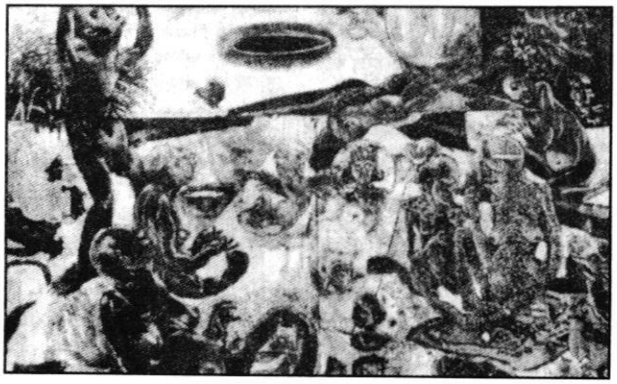

आप ठीक हो जाएंगे। डाक्टर का इलाज तो चल रहा है न।'

पापा चुप हो जाते पर वह जानती थी कि बिस्तर पर लेटे-लेटे वह चुपचाप आंसू बहाते रहते थे। अम्मा आकर उन्हें खाना खिलातीं और कहतीं--

'कैसी तबीयत लग रही है?'

वह कुछ नहीं बोलते थे। थोड़ी देर बैठकर अम्मा भीतर चली जाती।

पापा की बीमारी भी ऐसी थी जिसमें ठीक होने की संभावना बहुत कम रहती है और मरीज धीरे धीरे अपाहिज होता जाता है। डाक्टर ने कहा था--

'दवाओं से इनकी तकलीफें कम की जा सकती हैं लेकिन यह बिल्कुल ठीक हो जाएं यह आशा बहुत कम है।'

एक दिन आरती ने अम्मा से कहा था--

'अम्मा, पापा को किसी और बड़ी जगह ले जाकर क्यों न दिखाया जाए। किसी और अच्छे डाक्टर की दवा से शायद कोई सुधार हो।'

और एक दिन पापा को दिल्ली ले जाकर वाहँ के अपोलो अस्पताल में दिखाया गया था। तमाम परीक्षणों के बाद डाक्टर ने कहा था--

'आप की डाइग्नोसिस और दवाइयां ठीक है। मैं कुछ दवाइयां बढ़ा रहा हूँ और कुछ रेगुलेट कर रहा हूं। दवाइयां बराबर खानी होगी और 3-4 महीने पर चेकअप कराना होगा।'

तब से पापा का इलाज निरंतर चल रहा था किंतु उनकी सामान्य दशा में कोई सुधार नहीं दिखई पड़ रहा था। तीन चार महीने के भीतर उनका चलना फिरना मुश्किल हो गया और वह बिस्तर से लग गये थे। शेखर भइया ने कहा था--

'पापा की तबीयत संभल जाती तो उन्हें दिल्ली ले जाकर एक बार फिर डाक्टर से पूछा जाता।'

अम्मा ने कहा था--

'हां बेटा, लेकिन क्या बताऊं उनकी तबीयत तो दिन पर दिन गिरती ही जा रही है।'

आरती ने पापा की ओर देखते हुए कहा था--

'अम्मा कुछ दिन और देख लेते हैं।'

वह बोले थे--

'अगली बार मैं दशहरे की छुट्टियों में आऊंगा तब पापा को दिल्ली ले चलूंगा।'

शेखर भइया अपनी नौकरी पर चले गए थे और तभी शहर में दंगा हो गया था।

दिन भर घर में बैठ कर मुहल्ले की अफवाहों की दहशत में रहने और रात के सन्नाटे में जरा सा शोर सुन कर सांस रोक कर दुबके हुए बिस्तर में लेटे रहने के सिवा अन्य कोई उपाय नहीं था। पडोस के अनवर भाई का बेटा असलम आता और पापा की तबीयत का हाल पूछ जाता। वह अम्मा से कहता--

'अम्मा जी, किसी बात की जरूरत हो तो तकल्लुफ मत कीजिएगा। हमें अपना ही

समझिएगा।'

अम्मा कहती थी--

'हां बेटा, तुम्हीं लोगों का ही तो आसरा है नहीं तो क्या हम लोग यहां चैन से रह पाते।'

आरती समझ गई थी कि अम्मा का इशारा किस ओर था और चुपचाप पापा को दवाई देने के बहाने उठ गई थी।

असलम और शेखर भइया कॉलेज के दिनों में साथ-साथ पढ़ते थे और शेखर ने असलम का परिचय कराते हुए कहा था--

'आरती, यह असलम है, अनवर भाई का बेटा। हम लोग साथ कॉलेज में पढ़ते हैं।'

असलम ने मुस्कुराते हुए अपनी आँखे झुका ली थी। जब चाय लेकर आरती आई थी तब असलम ने उठते हुए कहा था--

'अच्छा, शेखर अब मैं चलता हूं। फिर आऊंगा।'

शेखर ने उसे रोकते हुए कहा था--

'अरे रुको न असलम, चाय तो पीते जावो। आरती चाय लेकर आई है।'

असलम आरती की ओर छिपी दृष्टियों से देखने लगा। तभी आरती ने उसकी ओर देखा था। असलम झेंपते हुए बैठ गया और चाय का प्याला उठा लिया था।

असलम बड़ा शर्मीला था। एक बार भी पूरी निगाह उठाकर आरती की ओर देखने का प्रयास नहीं करता था। धीरे धीरे संकोच और शर्म की परतें उतरने लगीं और असलम का उसके घर में आना जाना बढ़ता गया। आरती भी उसके व्यवहार और सज्जनता से दिन पर दिन प्रभावित रहने लगी थी।

जब शेखर भइया का एक्सीडेंट हो गया था और वह पंद्रह दिन तक अस्पताल में पड़े रहे थे तब इसी असलम ने दिन रात एक करके उनकी कितनी सेवा की थी। सुबह शाम अस्पताल में खाना नाश्ता ले जाना, दवाइयां ले आना और अम्मा को अपने स्कूटर पर बिठाकर अस्पताल पहुंचाना उसीके जिम्में था। रात के समय पापा अम्मा अस्पताल में रहते और दिन में आरती रहती। एक दिन अम्मा की तबीयत खराब हो गई और पापा घर पर उनके पास रह गए तब आरती अस्पताल में रहने के लिए चली आई थी।

असलम उसी समय वहीं बैठा था। उठते हुए वह बोला था--

'बैठो आरती, अभी अभी डाक्टर इंजेक्शन देकर गया है। शेखर सो रहा है।'

अस्पताल में उस समय सन्नाटा था और वह चुपचाप चेयर पर बैठ गयी थी। थोड़ी देर बाद बोली थी--

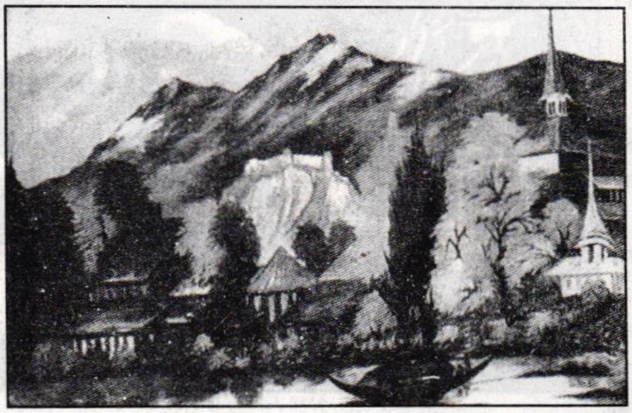

'बैठिये न क्या बात है? जा रहे हैं क्या?'

वह बोला था--

'नहीं तो मैं तो बस यूं ही.....।'

वह चुपचाप बैठा था। थोड़ी देर बाद बोला था-

'कैसी हो आरती?'

आरती को असलम के थरथराते स्वर कुछ अनोखे रस में सने लगे थे, वह बोली थी--

'ठीक हूँ।'

फिर खामोशी। आरती मन ही मन असलम के थरथराते स्वरों की मिठास का रसपान करती रही।

तभी वह बोला था--

'अच्छा, मैं चलता हूँ। लेकिन क्या अम्मा जी आएंगी?'

वह बोली थी--

'अम्मा की तबीयत ठीक नहीं है। आज वह नहीं आ पायेंगी। रात तक पापा आयेंगे।'

वह उठकर दरवाजे की ओर गया और बोला था--

'एक बात कहना चाहता था आरती।'

उसके पास आकर आरती बोली थी--

'हां, कहिये न।'

आरती का हृदय बड़ी जोर जोर से धड़कने लगा और उसके समस्त स्नायु-तंतु असलम के अंतर की ओर उन्मुख हो गए थे। वह बोला था--

'नहीं रहने दीजिए।'

उसने असलम की ओर देखा और बोली थी--

'क्या बात है कहिए न?'

वह बाहर बरामदे में आ गया। आरती भी उसके पीछे आकर खड़ी हो गई। बाहर चाँद की दूधिया रोशनी पेड़ों से छन छन कर असलम के चेहरे पर पड़ रही थी। आरती ने पूछा था--

'असलम, बोलो न क्या बात है?'

उसने लंबी सांस खीचीं थी और बोला था---

'नहीं आरती, कुछ नहीं। जो होना नहीं उसके बारे में सोचने से क्या फायदा? मैं चलता हूँ।'

असलम चला गया था और आरती बड़ी देर तक उसी बरामदे में खड़ी रह गई थी। असलम का व्यवहार, उसकी बातचीत का ढंग और फिर आज अपने मन की बात को परोक्ष में कहने का उसका वह अंदाज आरती को फूलों की भूलभुलैया में डूबता उतरता छोड़ गया। काफी देर तक वह उसी के ख्यालों में डूबी हुई एक मधुर अहसास के हिंडोले में हिचकोले खाती रही थी। उसके मन में बिजली की तरह एक प्रश्न कौंधा था- क्या असलम के मन में उसके प्रति कुछ है? और उसे लगा था जैसे वह हवा के उड़नखटोले में उड़ी जा रही है और कोई सुकोमल मोर पंखी से उसके स्नायु-तंतुओं को धीरे-धीरे सहला रहा है। अस्पताल के बरामदे में चाँदनी रात में उसे प्रथम प्रेम का अहसास हुआ था।

तभी पापा की बीमारी आ गई थी और असलम का घर में आना जाना और भी बढ़ गया था। फिर कर्फ्यू की वह अविस्मर्णीय रात आई। कर्फ्यू का दूसरा दिन था और पापा की तबीयत काफी खराब थी। दिन भर हत्या और गोली चलने की वारदातों से दहशत में पड़े हुए सभी लोग घर के खिड़की दरवाजे बंद करके जाग रहे थे। बाहर वाले कमरे में पापा लेटे हुए थे और आरती उन्हीं के पास बैठी हुई कोई

पुस्तक पढ़ रही थी।

अचानक पास कुछ शोर सुनाई पड़ा। पापा ने पूछा था--

'क्या हुआ आरती?'

वह खिड़की से कान लगाकर खड़ी हो गई थी। धीरे-धीरे शोर पास आता जा रहा था और ऐसा लगने लगा कि शोर गली के मोड़ पर ही है। अब शोर बढ़ता जा रहा था और लोगों के नारे लगाने की आवाजें भी कुछ कुछ स्पष्ट हो रही थी--

'मारो मारो.......
आग लगा दो'

पापा चौक पड़े थे और थर-थर कांपने लगे थे। आरती ने उन्हें संभालते हुए कहा था--

'पापा, आप सोने की कोशिश कीजिए।'

वह शून्य में ताकते रह गए थे। शोर बढ़ता गया और आरती को लगा था जैसे उसके घर के बाहर ही शोर हो रहा है। उसने खिड़की की फांको से झांक कर देखा। काफी लोग हाथों में लाठियां, चाकू, आदि लिए हुए खड़े थे और 'मारो मारो' चिल्ला रहे थे। आरती समझ गई कि अब शायद उनका अंत समय आ गया है। तभी दरवाजे पर धक्के पड़ने लगे। अम्मा भी आ गई और दरवाजे की तरफ भागी। अम्मा ने कहा--

'नहीं आरती, मत खोलना।'

वह पीछे हट गई और दरवाजे की झिरी से चुपचाप झांकने लगी थी। अचानक भीड़ को चीरता हुआ असलम आ गया और लोगों को चुप कराने का प्रयास करने लगा। लोग उसकी बात मानने को तैयार नहीं थे। उसने कहा--

'आप सब हमारे बुजर्ग है और मैं आप की इज्जत करता हूँ। यह घर भी मेरे एक ऐसे ही अजीज का है जिनका इन झगड़ों से कोई वास्ता नहीं है।'

कोई सुनने का तैयार नहीं था। तब असलम बोला--

'ठीक है अगर आप को प्रोफेसर साहब के घर पर हमला करना है तब आप को हमारी लाश के ऊपर से जाना होगा।'

और धीरे धीरे लोग वापस चले गए थे। तभी असलम ने धीरे धीरे दरवाजा खटखटाते हुए कहा था--

'मैं हूँ जरा खोलना आरती।'

आरती ने बढ़कर दरवाजा खोला था। भीतर जाकर असलम बोला था--

'अम्माजी, आप लोग घबरायें नहीं। लेकिन रात के समय बिना पहचान के दरवाजा नहीं खोलें।'

वह आरती की ओर देखता हुआ बोला था--

'आरती, अपना ध्यान रखना।'

उसने कहा था--

'तुम नहीं आते तो न जाने क्या हो जाता।'

बह बोला था--

'अच्छा मैं चलता हूँ। ख्याल रखना।'

फिर अचानक असलम गायब हो गया था। अनवर भाई पापा के पास दौड़े हुए आये और बोले थे--

'असलम कहीं गायब हो गया है। किसी से कुछ कह कर भी नहीं गया।'

अम्मा ने उन्हें ढाढ़स बंधाते हुए कहा था--

'आप परेशान न हों। समझदार है आ जाएगा। उस दिन उसी की वजह से ही हम लोगों की जान बची।' लेकिन धीरे धीरे समय बीतता गया और उसका कुछ पता नहीं चला। तीन चार महीने बाद अनवर भाई फिर आए थे और बोले थे--

'गजब हो गया, अब मेरा असलम कभी नहीं आयेगा।'

अम्मा ने पूछा था--

'क्यों क्या हुआ?'

उन्होंने कहा था--

'कुछ लोग आये थे कह रहे थे कि वह किसी टेररिस्ट ग्रुप में शामिल हो गया है। मुझे पूरा यकीन हो गया है कि मेरा बेटा अब मुझे कभी नहीं मिलेगा।'

अनवर भाई की आँखों में आँसू थे। काफी समय बीत गया लेकिन उसकी कोई सूचना नहीं मिली।

एक दिन असलम और आरती के बीच कुछ हुआ था लेकिन अब इतने दिनों के बाद वह सब कुछ सपने जैसा लगने लगा था। अस्पताल के बरामदे में चाँदनी रात के समय रस की तरह टपके हुए कुछ शब्द धीरे धीरे समय के थपेड़ों में उड़ गए थे। आरती का ब्याह हो गया, पापा नहीं रहे और शेखर भइया अम्मा को साथ लेकर अपनी पत्नी के साथ उस छोटे से शहर को छोड़कर चले गए थे। उस छोटे से शहर में उस छोटी सी उम्र में दो युवा हृदयों के बीच कौनसी अनजानी भाषा में प्यार का अंकुर फूटा और बिखर गया कोई नहीं जान पाया।

कितनी ही पुरानी घटनाएं उसकी आँखों के आगे से गुजरने लगी। तभी उसे लगा जैसे उसके कमरे के पिछले दरवाजे की ओर कोई हल्की दस्तक दे रहा है।

कौन है?

उसने आवाज दी।

फिर वही हल्की दस्तक। वह दरवाजे के पास आकर बाहर की ओर देखने लगी लेकिन बाहर बगीचे का अंधेरा फैला हुआ था और कुछ भी दिखाई नहीं पड़ा। दिसम्बर के महीने की ठंड का कोहरा भी चारों तरफ छाया था इसलिए दरवाजे की कांच से कुछ भी दिखाई नहीं पड़ा। आरती टार्च लेकर आई और दरवाजे से झांकने लगी।

अंधेरे में उसने जो देखा उसके कारण उसका तन बदन सिहर उठा। वह असलम ही था, दरवाजे के बाहर मुंह के बल गिरा। शायद बेहोशी की हालत में पड़ा था। उसने जल्दी से दरवाजा खोला और असलम के पास जाकर

बोली--

'अरे असलम, तुम यहां और इस हालत में?'

उसने आँखे खोली और सामने आरती को देखकर कहा--

'अरे आरती, तुम यहां?'

वह बोली--

'चलो, भीतर आवो तुम्हे बहुत चोट लगी है थोड़ी देर के लिए आ जावो, मैं तुम्हारे घाव पर दवा लगा दूँ।'

असलम पीछे पीछे आ गया। आरती ने असलम को सेटी पर लिटाया और कमरे का दरवाजा भीतर से बंद किया। फिर दवाई का बक्सा लाकर उसके घाव धोए और दवा लगा कर पट्टी बांधने लगी। आंख बंद किए हुए ही उसने कहा--

'आरती, मुझे नहीं पता था कि यह तुम्हारा घर है नहीं तो नहीं आता। पुलिस मेरे पीछे है।'

उसकी ओर बिना देखे हुए उसने कहा--

'असलम, पुलिस क्यों तुम्हारे पीछे है, तुम्हें क्या हो गया है।'

वह बोला--

'यह एक लंबी दास्तान है। मैं एक ऐसे जाल में फंस गया हूँ जिसकी मंजिल सिर्फ मौत है।'

वह बोली --

'असलम, अभी भी समय है। तुम कोशिश करो तो अब भी सब कुछ बदल सकता है।'

वह बोला--

'नहीं आरती, अब इतनी दूर ऐसे रास्ते पर निकल आया हूँ जहां से वापस आना भी चाहूँ तो नहीं हो सकता। अब्बू अम्मी सभी छूट गए। अब तो बस इंतजार है कब गिरफ्तार हो जाऊँ या पुलिस की गोलियों से मार दिया जाऊँ।'

आरती आश्चर्य चकित थी। क्या यह वही पुराना असलम है जिसने आगे बढकर उसकी और उसके पापा अम्मा आदि की जान बचाई थी।

तभी फोन की घंटी बजी--

फोन पर अविनाश ने कहा--

'आरती, मैं दस मिनट में घर पहुंच रहा हूँ।'

उसने फोन रख दिया और असलम से बोली--

'असलम, अब तुम यहाँ से चले जावो और अपनी जिंदगी एक नये सिरे से शुरू करने की कोशिश करो।

मेरे पति यहां के डी.एस.पी. है वह आने ही वाले हैं तुम यहाँ से निकल जावो।'

असलम ने आरती की ओर देखा और कहा --

'क्या मुझे गिरफ्तार नहीं करवाओगी।'

असलम को उठाते हुए उसने कहा--

नहीं असलम। यह मैं नहीं कर सकती। अब तुम जावो अपने लिए न सही मेरे लिए ही सही।'

असलम दरवाजा खोलकर अंधेरे में लंबे लंबे डग भरता हुआ गायब हो गया। आरती का चेहरा एक विचित्र आत्मतुष्टि से चमक रहा था।

संपर्क: बी-23, यारोज अपार्टमेंट्स
सी. 58/5,
सेक्टर-62 नोयडा-201301(उ.प्र.)

सरदार पटेल जयंती की शुभकामनाओं के साथः-

मे० न्यू रामप्यारे सिंह एण्ड सन्स

केसी सुपर, ए.सी.सी, लफार्ज सीमेंट और छड़ के थोक एवं खुदरा बिक्रेता

मीठापुर, खगौल रोड
पटना - 800001

प्रेमचन्द साहित्य की प्रासंगिकता और उसके संबंध में उठे विवाद

कृष्ण कुमार राय

दलितों, गरीबों और किसानों की पीड़ा को आवाज देनेवाले, आम इंसान विशेषकर निम्नवर्गीय समाज के शोषण, दर्द और संघर्ष को वाणी देनेवाले तथा जिंदगी की सच्चाइयों को शब्दों में ढालनेवाले जिस अमर कथा-शिल्पी प्रेमचन्द की 125वीं जयंती इस वर्ष पूरे देश में उत्साह के साथ मनाई जा रही है, उनकी गणना न केवल हिंदी बल्कि उर्दू के भी शीर्ष कथाकारों में की जाती है और दोनों ही भाषा-भाषियों के बीच उन्होंने समान रूप से लोकप्रियता अर्जित की है। तुलसीदास के बाद यदि भारत में कोई सर्वाधिक लोकप्रिय रचनाकार हुआ है तो वह निस्संदेह प्रेमचन्द हैं। राज्यों के घर-घर और जन-जन के बीच न केवल उन्होंने अपनी पैठ बनाई है, बल्कि पूरे विश्व के कथा-साहित्य में उनकी कालजयी कृतियाँ अपनी जीवंतता और मानवीय मूल्यों के कारण आदर की दृष्टि से देखी और पढ़ी जाती हैं।

हिंदी में मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन का सभारंभ वास्तव में प्रेमचन्द ने ही किया। उनकी रचनाओं में जो ताजगी, पठनीयता और प्रासंगिकता अपने रचनाकाल के समय थी वह आज भी यथावत बनी हुई है। इतना अवश्य है कि विगत सात-आठ दशकों में देश के राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य में बदलाव आ जाने के कारण उनकी कृतिपाय रचनाओं को उस समय के परिदृश्य और परिस्थितियों को ध्यान में रखकर पढ़ना होगा। इधर कुछ वर्षों से साहित्यिकों या समीक्षकों के लिये ही नहीं लिखता, वह तो पाठकों के वृहदसमुदाय के लिये लिखता है। इस बात का निर्णय करने का अधिकार केवल एक वर्ग विशेष को नहीं है कि प्रेमचन्द साहित्य अब भी प्रासंगिक है या नहीं। इसका असली निर्णायक तो सुधी पाठकों का वह बहुत बड़ा समूह है जो आज भी प्रेमचन्द को उसी चाव से पढ़ता है। जबतक पाठक वर्ग प्रेमचन्द साहित्य को पढ़ना जारी रखेगा, उसे कभी अप्रासंगिक नहीं कहा जा सकता। जिस दिन पाठक उनके साहित्य को बासी और अपाच्य मान लेगा, वह स्वयं ही उससे मुँह मोड़ लेगा और अन्य सुरूचिपूर्ण, सामयिक और सुपाच्य रचनाओं का आनंद लेने लगेगा। केवल एक वर्ग द्वारा अपने विचार और दृष्टिकोण पाठकों पर थोपकर उन्हें प्रेमचन्द साहित्य पढ़ने से नहीं रोका जा सकता। इस दृष्टि से यह बहस मेरे विचार से निरर्थक है।

प्रेमचन्द का यथार्थवादी साहित्य अपने समय के समाज, घटनाक्रमों और परिस्थितियों

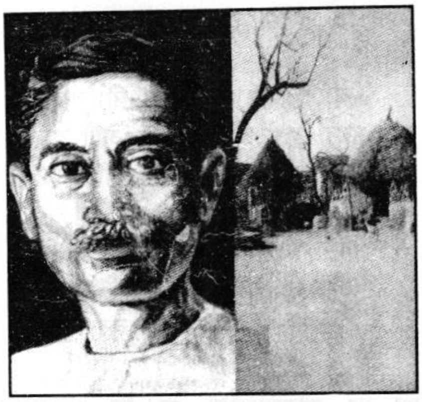

का दर्पण तो है ही, सुदूर भविष्य के संबंध में भी उनके विचार और दृष्टिकोण सत्य की कसौटी पर आज शत-प्रतिशत खरे उतर रहे हैं। बीसवीं सदी के आरंभ से चौथे दशक तक भी तमाम ज्वलंत समाजिक और राजनीतिक समस्याओं, यथा विदेशी शासकों द्वारा किया जा रहा जुल्म और अत्याचार, प्रशासन-तंत्र की जड़ों तक समाया भ्रष्टाचार जमींदारों सेठ-साहूकारों तथा महाजनों द्वारा दलितों, किसानों और गरीबों का उत्पीड़न, बाल-विवाह, विधवा विवाह, जाति और वर्ग भेद, दहेज की कुप्रथा, नारी की व्यथा, आदि विविध विषयों पर प्रेमचन्द ने पुरजोर तरीके से कलम चलायी है। इतना ही नहीं आज देशमें विस्फोटक रूप धारण कर चुकी जनसंख्या-वृद्धि जैसी ज्वलंत समस्या के गंभीर परिणामों के प्रति भी उस दूर-द्रष्टा ने भावी पीढ़ी को उसी समय अपने कथा-पात्रों के माध्यम से आगाह कर दिया था, जबकि सात-आठ दशक पहले इस संबंध में न कहीं चर्चा होती थी और न कभी किसी बुद्धिजीवी ने इस बारे में चिंतन ही किया था।

प्रेमचन्द वास्तव में समूचे देश के लेखक थे। उनकी कथाओं में सारे भारत की व्यथा कथा, सुख-दु:ख और जीवन-मरण की परिव्याप्ति है। केवल मनोरंजन और रस का ही आस्वाद उनकी रचनाओं में नहीं है, बल्कि उनमें शोषण और हर प्रकार के सामाजिक व्यवस्था जन्य अत्याचार से छटपटाते राष्ट्र की बेचैन आत्माका करुण मूक चीत्कार भी है। उनके आदर्शवाद में भी कटु सामाजिक यथार्थ की तीक्ष्ण वेदना और सिसकन है। उनका कथा-शिल्प, लेखन-शैली वर्ण्य विषय के साथ उनका धुला-मिलापन उनकी रचनाओं को जनप्रिय बना देता है। उनके साहित्य में जीवन की अर्थवत्ता है, मानवीय संदेश है। वह संदेश है सभी प्रकार के शोषण की समाप्ति का और एक ऐसे आदर्श समाज के निर्माण का जो सच्चे आचरण और नैतिक मूल्यों पर आधारित हो। सामाजिक और आर्थिक शोषण के सारे रूपों का प्रेमचन्द को पूर्ण ज्ञान था, गहरी अनुभूति थी। ग्राम्य जीवन से संबंधित उनकी अधिसंख्य कहानियाँ और उपन्यास इसी दु:ख-दैन्य और शोषण के रोमांचक दस्तावेज हैं। जिस सामाजिक दासता का चित्रण करने में प्रेमचन्द ने अपनी अंतरात्मा की सारी ऊर्जा लगा दी थी वह अपनी सारी कुरूप विषमताओं के साथ आज भी यथावत बनी हुई है। प्रेमचन्द ध्येय निष्ठ रचनाकार थे जो साहित्य को सोद्‌देश्य और सामाजिक प्रयोजन से प्रेरित मानते थे। उनकी प्रगतिशीलता के बहुविधि स्रोत थे। सोवियत रूस की साम्यवादी अर्थ-व्यवस्था और क्रांतिकारी परिवर्तन ने यदि उनके मन में क्रांति के रूप को साकार किया तो दूसरी तरफ गाँधीवाद में निहित नैतिक राष्ट्रीय भावनाओं से भी वे प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। ऐसी तीव्र ग्रहणशील संचेतना हिंदी ही क्या देश की अन्य भाषाओं के कम ही रचनाकारों में देखने को मिलती है। इस दृष्टि से वे अप्रतिम थे।

बड़े खेद का विषय है कि विगत कुछ वर्षों से प्रेमचन्द साहित्य घटिया राजनीति का शिकार बन गया है। अभी विगत वर्ष

प्रेमचन्द का उपन्यास 'निर्मला केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्य-क्रम से हटा दिया गया था और उसके स्थान पर मृदुला सिन्हा का एक उपन्यास लगा दिया गया था। सारे देश में हो-हल्ला मचा, संसद में भी आवाज उठी। शासन को झुकना पड़ा और उसने दोनों पक्षों को संतुष्ट करने के लिये बीच का रास्ता अपनाकर दोनों ही रचनाओं को पाठ्य-क्रम में बनाये रखने का निर्णय लिया। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द और मृदुला सिन्हा को एक ही तराजू पर तौला गया, या यह कह लीजिये कि सूर्य के प्रकाश और दीपक की रोशनी को एक समान माना गया। इस वर्ष फिर प्रेमचन्द के उपन्यास 'रंगभूमि' को लेकर जिसे वे स्वयं 'गोदान' की रचना से पहले तक अपनी सर्वश्रेष्ट औपन्यासिक कृति मानते थे, नया विवाद उठ खड़ा हुआ है। कहा जाता है कि उपन्यास में एक जाति विशेष के नाम के उल्लेख को लेकर दलित समाज आक्रोशित है और इस पुस्तक को भी विश्वविद्यालय के पाठय-क्रम से खारिज करने का निर्णय लिया गया है। कैसी विडंबना है कि दलितों के मसीहा को ही स्वयं दलित समाज ने आज कठघरे में खड़ा कर दिया है। जिस वर्ग के लिये प्रेमचन्द ने सबसे अधिक कलम चलायी और आँसू बहाये, जिनकी पीड़ा को निरंतर उजागर किया, उसी वर्ग के कुछ लोग उस कालजयी रचनाकार की कृतियों की आलोचना और अनादर कर रहे हैं। जिस साहित्य मनीषी ने आधुनिक कथा साहित्य में अपने देश का मस्तक ऊँचा किया और मान बढ़ाया, जिसने अपनी लेखनी द्वारा सदैव दलित वर्ग के उत्थान और समृद्धि के लिये समाज और सरकार का ध्यान आकृष्ट किया, आज वही अपने समाज और शिक्षा से तिरस्कृत और बहिष्कृत हो रहा है। जाति के नाम पर राजनीति करनेवाले उन्हें विवादास्पद बनाने की कोशिश कर रहे हैं। अरे, जिस व्यक्ति के मन में पशु-पक्षियों के प्रति भी करुणा हो सकती है, वह भला किसी जाति के लोगों का अपमान क्या करेगा। यह केवल समझ का फेर है। ऐसे विरोधों से प्रेमचन्द का कद घटाया नहीं जा सकता।

किसी जाति विशेष के नाम का उल्लेख करना और वह भी काल्पनिक गल्प साहित्य में, कोई अपराध नहीं कहा जा सकता/वर्ण व्यवस्था तो हमारे देश में युगों से चली आ रही है। उसके समाप्त होने की कोई संभावना अभी दूर-दूर तक नजर नहीं आती। जातियों, उप-जातियों और वर्गों के नाम पर यहाँ न जाने कितने नगर, गाँव, मुहल्ले-टोले और पुरने बसे हुए हैं। हम कहाँ-कहाँ से जातियों के नाम मिटा सकते हैं। फिर किसी कथा-साहित्य से एक जाति विशेष के नाम का उल्लेख हटा देने मात्र से क्या उस जाति का अस्तित्व समाप्त हो जायगा? जातियों के नाम का उल्लेख तो हमारे संविधान में भी है और उसी के आधार पर दलित समाज और पिछड़े वर्ग को आरक्षण की सुविधा प्राप्त है और वे न जाने कितनी अन्य सुविधाओं का उपभोग कर रहे हैं। क्या दलित समाज देश के संविधान से भी जातियों के नाम का उल्लेख समाप्त कराकर आरक्षण तथा अन्य सुविधाओं का लाभ त्यागने को तैयार है? यदि नहीं तो फिर किसी काल्पनिक कथा-साहित्य में जाति विशेष के नाम के उल्लेख मात्र पर इतना बवाल क्यों? मेरा तो मानना है कि यदि प्रेमचन्द का आविर्भाव वर्तमान समय में हुआ होता तो उनकी भी सोच और नजरिया कुछ और होता और वह भी जमाने के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में किसी से पीछे न रहते। उनकी मृत्यु के सात दशक बाद अब इस तरह के तर्कहीन विरोधों पर विराम लगना चाहिए और वर्गवाद तथा जातिवाद के नाम पर इस प्रकार का उपहास साहित्य से समाप्त होना चाहिए।

संपर्क : ए-51, अर्दली बाजार,
(अधिकारी होस्टल के पास, वाराणसी

MAHESH HOMOEPATHIC LABORATORY
&
GERMAN HOMOEO STORES
Saket plaza, Jamal Road,
Patna-800001
Ph:(0612) 2238292 (O) 2674041 (R)
Offers a wide range of mother Tinchers,
Dillutin Biochemic Tablet patents, Globels
Dr. Mahesh Prasad **D.M.S. (Patna)**
Dr. Arun kumar **D.H.M.S (Patna)**
Spcialist in chronic Diseases

काव्य-कुंज

जनता भी आक्रोश छिपाये बैठी है

आचार्य भगवत दुबे

सत्ता अपने दोष छिपाये बैठी है
जनता भी आक्रोश छिपाये बैठी है
कायरता क्यों ओढ़ रखी इस पीढ़ी ने
किस डर से वह रोष छिपाए बैठी है
माँ को है मालूम कि बेटा खूनी है
होता है अफसोस, छिपाये बैठी है
दवा नशीली बांटेगी सरकार पुनः
कर देगी मदहोश छिपाए बैठी है
मातृशक्ति जागी तो प्रलय मचा देगी
नारी अपना जोश छिपाए बैठी है
बड़े-बड़े खूंखार जानवर बचे नहीं
वनस्थली खरगोश छिपाए बैठी है

संपर्कः- विसनहारी मढ़िया के पास, जबलपुर -482003 म. प्र.

आंधी हो या तुफान

चंद्रसेन विराट

आँधी हो या तुफान या भूचाल साथियों
रुकने नहीं दो देश की अब चाल साथियों
माना कि छा रहा है बहुत घोर अँधेरा
दुनियाँ में हर इक रात का लेकिन है सबेरा
बुझने नहीं दो जोश की मशाल साथियों
हिंदू हो मुसलमान हो या सिख या इसाई
ममत्व सभी पे देश की धरती ने लूटाई
सब मिलके एक देश देश है विशाल साथियों
गौतम दिया हमीं ने था गाँधी भी हमारा
जब वक्त आ पड़ा हुए शबनम से अंगारा
दुनियाँ में नहीं कोई भी मिसाल साथियों

संपर्क- 'समय' 121, वैकुण्ठधाम कॉलोनी,औल्ड पलासिया,
खजराना कोठी, आनन्द बाजार के पीछे, इन्दौर-452018, म. प्र.

निर्माणों की ओर चलें

गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'

नई-नई बेला में स्वागत द्वार सजे जग-वंदन के।
बीते वर्ष बिदा के क्षण के, अपगत के अभिनंदन के।।
इस अवसर पर नई हवा ने, खिन्न मनों में पुलक भरी
जीवन से भयभीत दृगो में, आशायें झिलमिला उठीं।
काँटों की हरकत ने हारी, नव कलियाँ खिलखिला उठीं।।

नई लहक लहका करके, दिशा-दिशा महका करके।
मन पंछी चहका करके, भ्रमरों को बहका करके।।
रातों को कर चुकी पराजित, उसी भोर की ओर चलें।
आओ कदम बढ़ाते आओ, निर्माणों की ओर चलें।।

जीव मात्र की साँस रोक, जो घोर नाश की ओर मुड़े।
वे भी पास प्रलय के पहुँचे, किंतु सृजन की ओर मुड़े।।
'जिओ और जीने दो' वाली, उक्ति जहाँ बल पाती है।
बाधाओं की बहिन आपदा आने से घबराती है।।
उजियारों के जिन बेटों ने, अँधियारों से टक्कर ली।
आँधी ने अनुशासित होकर, घर जा उन्हें बधाई दी।।

कर्म-विवेक बढ़ा करके, व्यापक धर्म निभा करके।
श्रम को मीत बना करके, व्यापक धर्म निभा करके।
जहाँ जिन्दगी भय खाती है, उसी क्षितिज के छोर चलें।
आओ कदम बढ़ाते आओ, निर्माणों की ओर चलें।।

जाते हुए साल के पौधों के पत्ते संकुचित हुए।
नयी धूप की अगवानी में, नये बीज अंकुरित हुए।।
नव सपनों की नई पताका, फहर उठी भू पर तनकर।
सरस भाव लेकर हरियाली, लहक उठी सूखे मन पर।।
पुलकित है आसेतु हिमालय, धरती अन्न उगलने को।
माँ हुलसित गोदी का गौरव, किलकी मार उछलने को।।

बैर-विरोध मिटा करके, सबको गले लगा करके।
सरस प्रेम सरसा करके, भेद-विभेद भुला करके।।
भले आग टपाकाये सूरज, घिरे घटा घनघोर चलें।
आओ कदम बढ़ाते आओ, निर्माणों की ओर चलें।।

संपर्क 'वृत्तायन', 957-एफ, स्कीम नं. 51, इन्दौर-6

काव्य-कुँज

क्यों होती है जंग

-✍वीणा जैन

सीमाओं पर बसे गाँवों में, रात
दहशत से गुजर जायेगी।
सज्ञ विधवा दुलहन का रूदन
न रूकने वाली सिसकियाँ
'सूनी कलाइयाँ, मेंहंदी रची हथेलियाँ
किस्मत को कोसती, उजड़ी मांग की सफेदियाँ
क्यों होती है जंग, कभी न समझ पायेंगी।
सीमाओं पर बसे गाँवों में,रात
दहशत से गुजर जायेगी।
बेगुनाह लाड़लों के कत्ल की रातें
हैवानियत पर, मूक बहते आँसुओं की रातें
बुत बनी बैठी माँओं के कलेजों से उठती हुई
हूक की वो काली रातें
क्यों होती है जंग, कभी न समझ पायेंगी,
सीमाओं पर बसे गाँवों में, रात
दहशत से गुजर जायेगी।
युद्ध की विभिषिकाओं में
खो कर, तात, हुऐ अनाथ, अनगिनत नौनिहाल, हताश,
खींचेगे जिन्दगी की डोर, ताउम्र हो बेहाल
आँखों से टपकती अबोध पीड़ा,
क्यों होती है जंग, कभी न समझ पायेगी।
सीमाओं पर बसे गाँवों में, रात,
दहशत से गुजर जायेगी।
सूने गाँवों सूनी गलियाँ, सूने धर-औसारों में
पथरीले पर्वतों पर जमी वर्फ थी परतों में
तोपों की गूंजती गड़गड़ाहटें
ब्योम ताकती, बुजुर्गों की पथराई आँखें,
क्यों होती है जंग, कभी समझ नहीं पायेंगी,
सीमाओं पर बसे गाँवों में रात,
दहशत से गुजर जायेगी।
ये कैसी कुर्बानियाँ, ये कैसी शहादतें
कि, खो कर अपनों को, जर-जमीं को,
भटकते हुए परिवारों की व्यथा,
जिन्दगी के बेनकाब कुरूप चेहरे की कथा,
क्यूं होती है जंग, कभी न समझ पायेगी,
सीमाओं पर बसे गाँवों में रात,
दहशत से गुजर जायेगी।

संपर्क:- एम-13, डायमंड डिस्ट्रीक्ट, कोडीहल्ली,
एयरपोर्ट रोड, बैंगलोर -8 (कर्नाटक)

सर नहीं झुके हैं, नहीं झुकेगें

-✍जय सिंह अलवरी

सर नहीं झुके है, नहीं झुकेगें।
बांग हिंदू के नहीं सुखे है नहीं सुखेंगे।।
गाया उन वीर अमर-शहिदों की
नहीं भूले है, नहीं भूलेंगे।।
हम विजय पथ में, बढ़ने वाले।
नहीं रूके हैं, नहीं रूकेगे।।
हम मातृभूमि पे न्यौछावर होनेवाले।
हंसते-हंसते मौत से खेलेंगे।।
वतन में गद्दार जो भी होगा।
सूरत पे उसकी, मिलके झूकेंगे।।
रग-रग में है, स्नेह वतन का।
मरके भी एक बार जी उठेगे।।
दुश्मन जो लल्लकार रहा है हमे।
घुसके उसके वतन में, घर उसका फोड़ेगे।।
सर नहीं झुके हैं, नहीं झुकेगे।
बांग हिंदू के नहीं सुखे हैं नहीं सुखेंगे।।

संपर्क- दिल्ली स्वीट स्टॉल, बस स्टैंड के पास
सिरूगुप्पा-583121, जिला-बेल्लारी (कर्नाटक)

क्या यह नहीं अँधेरा है?

-✍डॉ. डोमन साहु समीर

अपना देश स्वतंत्र है,
जहाँ आधुनिक विश्व का
अति विशाल जनतंत्र है।
क्यों विचित्र यह हाल है?
ज्यों राष्ट्रीय चरित्र का
भीषण पड़ा अकाल है।
कहाँ न भ्रष्टाचार है?
अनाचार आतंक का
दुर्दम विषम प्रसार है।
क्या यह नहीं अँधेरा है?
जनता दीन निरीह, पर
नेता बना कुबेर है।

संपर्क- टी० विलासी, देवघर, झारखंड

उनको नमन लिखो

-राजनारायण चौधरी

लिखो लेखनी लिखो, बांध कर सर पर कफन लिखो;
जो शहीद हो गए देश पर उनको नमन लिखो।

नहीं झूठ के आगे झुकना धर्म तुम्हारा है;
जगमग जो चमके वह सच्चाई का रतन लिखो।

फौलादी धड़कन, सांसों में ले तूफान सदा
राष्ट्र-अर्चना में पवित्रतम अपना हवन लिखो।

कभी किसी से दबकर नहीं रहेंगे दुनिया में,
राम, कृष्ण, नेता सुभाष का है यह वतन लिखो।

तुम हो देवी क्रान्ति - अग्नि नित सुलगाने वाली
स्याही से ही नहीं, खून से कण-कण चमन लिखो।

तुम स्वतंत्रता की सच्ची निरशंक पुजारिन हो;
अपनी यह धरती, अपना यह सारा गगन लिखो।

तुमको जो आँखें दिखलाए, बढ़े अगर आगे;
काल-ज्वाल में झोंक-झोंक कर उसका दहन लिखो।

संपर्क - प्रोफेसर कॉलोनी
हाजीपुर (बिहार)
पिन-844101

आकर तेरे शहर में

-डॉ0 वन्दना वीथिका

उठाकर हमें वो कब्र से क्यूँ बिस्तर पर सुला दिये
आँखें जो थीं बंद हमारे, क्योंकर वो जगा दिये

मोती ख्वाबों के सजाकर, लाये हमें वो पास बुलाकर
देखने को करीब हुए हम, वो देकर ठोकर गिरा दिये।

वादे पर वादे किये वो, रिश्ते वादे पर जोड़ लिये
वक्त निभाने का हुआ तो सबकुछ वो भुला दिये।

चेहरा अपना खो दिये क्यूँ? शौक सब मिटा दिये
आकर तेरे शहर में हम, 'वीथिका' को भुला दिये।

संपर्क : दरियापुर गोला, पटना-1

गिरता है जब आदमी

-प्रो0 लखन लाल सिंह 'आरोही'

ओस गिरती है तो भरता है,
खेतों में खड़ी फसलों में दाना ।
फैल जाती है धरती पर हरियाली।
शरीर से जब गिरता है पसीना,
मिट्टी में सोया अँखुआता है बीज।
सूरज से गिरती है जब उजली धूप,
धरती पर लहरा उठता है जीवन
कलम से गिरती है जब स्याही,
कागज पर उगती है कविता-कहानी।
पर गिरता है जब दुनिया में आदमी,
कहीं होता इराक, कहीं होती अयोध्या।

संपर्क:- 'ऋतंवरा', खैरा,पो० पतसौरी-खैरा-813107
जिला- बांका (बिहार)

एक आतिशी इंतहा!!

-संजय जोशी 'प्रेमी'

कुभकोणम में कैसा गज़ब ढा गया
दोज़खे आतिशी हादसा हो गया,
बेरहम मौत भी जिससे सिहरा उठी
खिलखिलाता चमन खाकेगाह हो गया।

शारदे तेरे मंदिर में क्रूर मंज़र हुआ
तेरा आँगन माँ क्यूँ कब्रगाह बन गया?
देखती तू रही मौत का ज़लज़ला
तेरा आँचल माँ कैसे कफन बन गया?

गूँजती थी जहाँ रोज़ किलकारियाँ
चीत्कारों से बहरा शहर हो गया,
जिसके साये तले सुकूँ पाते सुमन
सायबान खुद कफन आग का बन गया।

ज़िंदगी के सफर पे वो निकले ही थे
कुछ कदम पे ही फरमाने मौत आ गया,
स्वप्न कितने हुए भस्म उस आग में
बागबां ही चमन से खफा हो गया।

प्रेमी मासूम बच्चों की न थी कुछ खता
मौत है बेवफा ये पता चल गया,
आदमी तो सदा कठपुतली ही था
अब तेरी बेबसी का भी इल्म हो गया।

संपर्क : के-10, आशियाना अपार्टमेंट,
न०-9, वीनस कॉलोनी, 2 री क्रॉस स्ट्रीट,
अलवरपेट, चेन्नई-18

मन से जुड़े अहिंसा

✍ मुनि मोहजीत कुमार

मानव मन में
दिशाहीन विचारों की ये तरंगे
पैदा कर रही हैं पग-पग पर दंगे
फिर चाहे
मंदिर के हों, मस्जिद के हों
गुरुद्वारे के हों या धर्म स्थल के हों
सारे ही बेचैन बनाते हैं
तन को, मन को, चिंतन को
जो उजाड़ रहे हैं
जीवन के मधुवन को
ऐसे विषम परिवेश में
महावीर और गाँधी के
अहिंसावादी देश में
हिंसा का जुनून छाया है
अमूल्य मानवीय अमानत को
नुकसान पहुंचाया है।
इस स्थिति में करें
इसका संज्ञान
कारण कि...
घातक रासायनिकों और जैविकों के
ढेर पर है
मानव की जान
जिसे देख...
हैवानियत हँस रही है
इंसानियत सुबक-सुबक कर रो रही है।
उस संज्ञान के समाधान का
एक ही रास्ता
मानव के मन से जुड़े
अहिंसा से वास्ता
जिससे मानवीय संवेदना जगे
उसी से
हिंसक मस्तिष्क की हो सफाई
समझें एक दूसरे को भाई-भाई।

संपर्क : भिक्षुनगर, महाप्रज्ञ भवन,
सिरियारी ,जिला-पाली,
राजस्थान-306027.

नगमे गायेंगे

कुन्दन कुमार

भारत माँ की मान के खातिर नगमे गायेंगे,
गीता, कुरान, गुरूग्रंथ, बाइबल को अपनायेंगे।

मंदिर में चाहे घंटा बाजे, हो मस्जिद में अजान
चर्च में चाहे कैंडिल साजे, हो गुरूद्वारा गान
सभी जगह पर ईश एक हैं इसे बतायेंगे
भारत माँ की मान के खातिर नगमे गायेंगे।

चाहे राम-रहीम कहो तुम, चाहे वाहे गुरू, ईसा
भेदभाव न रहे धर्म में, कहते हैं भाई मूसा
जाति-धरम से ऊपर उठकर देश चलायेंगे
भारत माँ की मान के खातिर नगमें गायेंगे।

एक बाग के फूल हैं सारे, एक हमारा माली
तन से, मन से, रहें प्यार से, माँ की हो रखवाली
दुश्मन फिर कैसे सीमा पर चढ़कर आयेंगे
भारत माँ की मान के खातिर नगमे गायेंगे।

धर्म सिखाता नहीं किसी को, आपस में कभी लड़ना।
विश्व शांति का झंडा लेकर भारत को है बढ़ना
सर्वधर्म समभाव में शामिल सब हो जायेंगे
भारत माँ की मान के खातिर नगमे गायेंगे।

संपर्क : 'ऊँ विन्ध्य वासिनी निवास'
शास्त्रीनगर, रोड नं०-4
मुंगेर (बिहार) - 811201

खुशबू का गाँव बसा लो

✍ नलिनी कांत

फूल खिला दो
ढेरों कि खुशबू का
गाँव बसा लो।
काँटे खुद लो
दूसरों की झोली में
कुसुम डालो।
औरों का दुःख
झेलकर कुछ तो
खुशियाँ पा लो।
सुबह शाम
पंछी के संग गीत
प्रभु का गा लो।
पेड़ बन के
आँधी तूफां तमाम
अरे थाम लो।

संपर्क:- अंडाल-613321 (पं. बंगाल)

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Fact. Add. :Plot No. 10, Dewan&Sons Udyog Nagar,
Taluka Palghar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Phone No.: (952525) 55285èk54471, Fax: 55286

&

DANBAXY

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
(SOFT GELATIN)

Fact. Add: Plot No. K-38, MIDCTarapur,

Boisar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Office Address:

1, Anurag Mansion, Ashokvan,
Shiv Vallabh Raod, Dahisar (E),
Mumbai-400068
Phone No.: 8974777, Fax: 8972458

MR. DEVENDRA KUMAR SINGH, C.M.D

हाय! हिमालय

✍ डॉ श्यामसुन्दर घोष

हिमालय की सर्वोच्च चोटी एवरेस्ट पर मानव के विजय अभियान के पचास वर्ष पूरे हुए। इस उपलक्ष्य में बड़े-बड़े समारोह हुए, आज भी हो रहे हैं, शायद आगे भी हों। इस अवसर पर पर्वतारोहियों के कई-कई दल एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचे, वहाँ उन्होंने अपनी जीत का डंका बजाया, अपने शौर्य के झंडे गाड़े, फहराये। शायद आगे भी वे ऐसा करते रहें।

देश में जो मुख्य समारोह आयोजित हुआ, उसमें प्रथम एवरेट पर्वतारोही और एवरेस्ट के सह-विजयी नायक एडमंड हिलेरी भी, सपत्नीक, शामिल हुए। भारत के कवि-प्रधानमत्री का बड़ा जोरदार भाषण हुआ। इस अवसर पर, मैं अपने को क्या कहूँ, बहुत क्षुब्ध और दुःखी हुआ।

मनुष्य की यह विशेषता है कि वह अपनी, छोटी से छोटी उपलब्धि को भी बहुत बढ़ा-चढ़ा कर देखता है, उसका ढिढोरा पीटता है। इस विजय-उल्लास में वह दूसरे पक्ष को बिल्कुल भूल जाता है। मैं हिमालय को एक पर्वत मात्र नहीं, उसकी चोटी को एक चोटी मात्र नहीं मानता । वह प्रकृति की विराटता और अभेद्यता का प्रतीक तो है ही, वह भारतीय अस्मिता और गौरव का भी प्रतीक है। कवि कुलगुरू कालिदास ने हिमालय को पृथ्वी का मानदंड यों ही नहीं कहा है। वह सही में हमारा और पृथ्वी का मानदंड है भी। वह निर्जीव पर्वत नहीं, हमारा सजीव पासवां है।

मैं अक्सर सोचता हूँ कि जिस दिन मनुष्य ने एवरेस्ट की चोटी पर अपने पाँव रखे, और अपने पाँव रखने का गर्व-स्फीत स्वरों में एलान किया, उस दिन एवरेस्ट ने क्या महसूस किया होगा चिर अजेय अविजीत शिखर विजित हो गया। क्या किसी ने उसके लिए सहानुभूति के दो शब्द कहे? अपने आँसू की एक भी बूँद बहाई क्या? वहाँ अपने सिर झुकाये? साष्टांग दंडवत किया? मुझे तो इसके साक्ष्य नहीं मिलते । मनुष्य के दर्प और अहंकार की हद है। आज भी यह सिलसिला जारी है, जो कि आज एवरेस्ट चुनौती नहीं है। वैज्ञानिक साधनों और उपकरणों के विकास ने आज पर्वतारोहण बहुत आसान कर दिया है। आज तो पर्वतारोहण का वाकायदा प्रशिक्षण दिया जाता है। पर्वतारोही महीनों अभ्यास करते हैं और तब आकर हिमालय विजय की बात सोचते हैं।

आम चुनौतियाँ दूसरी हैं, आतंकवाद एक बड़ी चुनौती है, बुश और ब्लेयर जैसे नेताओं का दर्प और अहंकार जो न केवल अपने देश की जनता का, वरन् विश्व जनमत की भी अवहेलना कर, संयुक्त राष्ट्र संघ की अवज्ञा और अवहेलना कर, किसी निरीह और लगभग गिड़गिड़ाते हुए राष्ट्र पर, एकतरफा निरंकुश हमला करते हैं चुनौती आज ऐसे लोग हैं। अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र संघ में, इराक पर प्रतिबंध प्रस्ताव पास कराकर उसकी रीढ़ लगभग तोड़ ही थी, वह संयुक्त राष्ट्र के अस्त्र-शस्त्र निरीक्षकों से सहयोग कर रहा था। फिर भी उस पर हमला हुआ। आज शक्ति संपन्न गर्वदीप्त राष्ट्रों का ऐसा उद्यत आचरण चुनौती हैं। पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ विश्व के सामने एक चुनौती है जो अपने झुठ और छल-फरेब से दुनियां को अंगूठा दिख रहे हैं। भंयकर मानव और सभ्यता-विनाशक अणु आयुद्य पर कारगर नियंत्रण एक चुनौती है। आज अंतरिक्ष के अनेक ग्रह मनुष्य के सामने चुनौती बनकर खड़े हैं। अब जमाना पर्वताभियान का नहीं, अंतरिक्ष अभियान का है। चुनौतियों के ऐसे दूसरे-दूसरे क्षेत्र मनुष्य ढूँढ़े, उस दिशा में अपने कदम बढ़ाये। अब एवरेस्ट को बार-बार पद दलित करने का झुठा दंभ वह न पाले।

भारत में, जैसे विद्या में विनय, आवश्यक माना गया है वैसे वीरता में भी विनय की एक परंपरा रही है। खेद के साथ लिखना पड़ता है कि हमारे वीर और जांबाज पर्वतारोहियों ने यह परंपरा नहीं निभाई है, आज भी नहीं निभा रहे हैं। वे एवरेस्ट पर पाँव रखने की बात तो करते हैं, पर वहाँ सिर रखने की बात नहीं करते। मनुष्य अपनी महान उपलब्धियों पर विनत होता है। इसे अपनी व्यक्तिगत उपलब्धि न मानकर दैवी कृपा मानता है। ऐसा कुछ भाव एवरेस्ट-विजेताओं में रहा है। क्या उन्होंने रोकर, अकुलाकर, श्रद्धा विचलित होकर, एवरेस्ट की चोटी पर अपने सिर रगड़े है? शायद नहीं। उनमें मानवीय अहं ही सर्वोपरि रहा है।

एवरेस्ट का एक नाम सागर माथा भी है। सागर और पर्वत ये ही तो दो विराट प्राकृतिक उपहार हमें मिले हुए हैं। दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। दोनों में अभिन्न संबंध है। तभी तो एवरेस्ट को सागरमाथा कहा गया है। यह हमारे इतिहास, संस्कृति और गौरव का सिर भी है। मुझे पता नहीं पर्वतारोही आधार शिविर से रवाना होने के पूर्व हिमालय के चरणों में झुककर पूजा-पाठ, कीर्तन या अभिवादन करते रहे हैं, या नहीं। यदि अब तक ऐसा नहीं होता रहा है, तो अब से ऐसा होना चाहिए। हमें कठिन शर्तों का पालन करने के लिए देखी-विदेशी पर्वतारोही को बाध्य करना चाहिए। उनसे किसी मान-पत्र या शपथ पत्र पर साक्ष्य लेना चाहिए कि एवरेस्ट पर पहुँचने का उनका कार्य किसी भी अर्थ में पर्वतराज हिमालय की अवमानना नहीं है। वे उनकी समस्त गौरव-गरिमा को स्वीकारते हुए, उसे प्रणाम करते हुए, उसकी सर्वोच्च चोटी पर इस भाव से आरोहण करना चाहते हैं जैसे शिशु माँ की छाती से लग कर धमाचौकड़ी मचाता है, अपना हर्ष और उल्लास व्यक्त करता है। माँ उसकी इस चेष्टा का बुरा नहीं मानती, या जैसे बेटा बाप के कंधों पर सवार होता है, उसके सिर का तबला बजाता है, खिलखिला कर हँसता, किलकता है।

मुझे सबसे ज्यादा निराशा कवि प्रधानमंत्री के रवैये और वक्तव्य से हुआ। उन जैसा संवेदनशील व्यक्ति, प्रधानमंत्री, हिमालय के पक्ष को क्यों नहीं समझ सका? जिस हिमालय को लेकर कवि दिनकर ने अपनी प्रसिद्ध कविता की पंक्तियाँ लिखी थी- 'मेरे नगपति, मेरे विशाल' साकार दिव्य गौरव विराट पौररुष के पूंजीभूत ज्वाल मेरी जननी के हिम-किरिट मेरे भारत के दिव्य भाल युग-युग अजेय निर्बंध मुक्त युग-युग गर्वान्नत, नित महान। नस्सीम ब्योम में तान रहा युग से किस महिमा का वितान।

उस हिमालय की अर्भ्यथना में कवि प्रधान के अरुण अधरों से स्नेह समादर के कुछ बोल तो फूटे होते। तब मुझे ये पंक्तियाँ न लिखनी पड़ती।

हिमालय अजेय है, अजेय रहेगा। जिन्होंने उस पर अपनी विजय का झंडा गाड़ने और फहराने का दावा किया है वे कबाल के गाल में समा गए, या समा जाएंगे। उनकी कीर्ति-कथा के रूप में अखबार और संदर्भ ग्रंथ में कुछ छापने, कुछ चमकीले सुंदर छपे प्रमाण पत्र कुछ सोना व चाँदी के पानी चढ़ाये तमगे, उनके कुछ और उपकरण मात्र रहेंगे, जबकि हिमालय इसी रूप में, उदांत्त और अजेय रूप में, युग-युगों तक हमारे बीच रहेगा। उसकी जो छवि हर भारतीय के हृदय में है उस पर कोई कभी पाँव नहीं रख सकता, उसे पद दलित नहीं कर सकता।

संपर्क: ऋतंभरा
गोड्डा, झारखंड-814133

विवेक और कर्त्तव्य-बोध

-डॉ सिद्धेश्वर

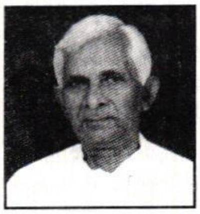

शिक्षा अगर विवेक और कर्त्तव्य बोध नहीं जगाती तो उससे वह अशिक्षित और अनपढ़ ही बेहतर है जो अपने कर्त्तव्य बोध को निभाता है। पिछले दिनों तमिलनाडु में तंजापुर जिले के मंदिरों के शहर कुंभकोणम स्कूल में भीषण आग में झुलसकर जिस प्रकार लगभग एक सौ मासूम बच्चों की दर्दनाक मौत हुई उससे विवेक और कर्त्तव्य बोध पर एक प्रश्न चिह्न खड़ा होना स्वाभाविक है। सूत्रों के अनुसार दोपहर में जब स्कूल के बच्चे भोजन का इंतजार कर रहे थे, रसोईघर में आग लगने से प्राथमिक कक्षाओं के फूस की छत भी उसकी चपेट में आ गई और उसके ढहकर गिरने से बच्चे उसी में जिंदा जल गए। कहा गया कि उच्च और माध्यमिक कक्षा के बच्चे तो भाग निकले, किंतु प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे इसलिए भी भाग न सके कि एक शिक्षक ने बच्चों से कहा कि वे अपनी कक्षा में ही बैठे रहें। आग बहुत मामूली है और उसे बुझाया जा रहा है। यहीं नहीं पुलिस के अनुसार यह खबर है कि शिक्षक ने अंत तक बच्चों से कहा कि घबराने की जरूरत नहीं है और अपनी जगह चुपचाप बैठे रहो। इस कल्पना से ही रूह कांपने लगती है कि शिक्षक के डर से ही बच्चे अपनी कक्षा में बैठे रहे। अगर अध्यापक का इतना डर न होता तो संभव है वे भागकर बच भी सकते थे। यह तो हुई 'अध्यापक की विवेकहीनता की बात ।

आग की खबर में लोकप्रिय दैनिक 'द हिंदू ने प्रत्यक्षदर्शियों के हवाले से लिखा कि आग लगने के बाद सबसे पहले भागनेवालों में स्कूल के अध्यापक थे। सवाल यह उठता है कि आग की इस भीषण दुर्घटना के मौके पर शिक्षकों ने पहले बच्चों को बचाने का रास्ता न दिखाकर वे भाग निकले। यह हुई अध्यापक की कर्त्तव्यहीनता की बात। क्या यह विवेक और कर्त्तव्य बोध का सवाल आज भी अनुत्तरित नहीं है? खासकर तब जब इस देश में सर्वाधिक धर्म पर चर्चा होती है और अपनी भारतीय संस्कृति का इतना गुणगान होता है। ऐसा भी नहीं कि इस देश में बलिदानियों और त्यागी मनीषियों की कमी रही है। ढेरों को उनके कर्त्तव्य बोध के लिए याद किया जाता है। गणेश शंकर विद्यार्थी को सच्चा सत्याग्रही मानते हुए उनके बलिदान से शिक्षा लेते थे। अपने साथियों से बापू कहा करते थे कि उनकी मृत्यु कर्त्तव्य निभाते हुए हुई। वे नोआखाली में गणेश शंकर विद्यार्थी बनकर ही घुसे थे।

समाज के वर्तमान परिदृष्य पर जब हम नजर दौड़ाते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि समाज के लोगों में विवेकहीनता और कर्त्तव्यहीनता अधिक बढ़ती जा रही है। उपहार सिनेमा कांड में मेन गेट पर सबसे ज्यादा दर्शक एक दूसरे के ऊपर गिरकर दरवाजा पिटते-पिटते इसलिए मृत्यु के शिकार हुए कि टॉकिज के गेटकीपर ने धुआँ देखकर निकासी गेट पर कुंडी चढ़ा दी ताकि धुआँ हाल में न जा सके। बहुत से घायलों की मौत तो इसलिए हो गयी क्योंकि एम्स और सफदरजंग अस्पतालों में आक्सीजन सिलिंडर ही नहीं थे। किंतु इसी उपहार दुर्घटना में दिल्ली फायर ब्रिगेड के तत्कालीन सर्वोच्च अधिकारी श्री ढेरी लोगों को बचाते-बचाते वे स्वयं बुरी तरह घायल हो गये थे। वे चाहते तो स्टॉफ को निर्देशित करते रहते क्योंकि उनका काम नेतृत्व प्रदान करना था और वे स्वयं सुरक्षित रह सकते थे पर उन्होंने जान की बाजी लगाकर एक बड़ा आदर्श हमारे सामने रखा जिसके लिए देश के ढेरों लोगों द्वारा आज उनके कर्त्तव्य के लिए उन्हें याद किया जाता है।

कर्त्तव्य बोध का दूसरा उदाहरण उस वक्त देखने को मिला जब बिहार में हुई राजधानी एक्सप्रेस की दुर्घटना के बाद रात में दस बजे भीषण दुर्घटनाग्रस्त गाड़ी के यात्रियों को पास के गाँववाले मिट्टी के तेल की डिबरियाँ लाकर सारी रात बचाते रहे और किसी यात्री का एक भी सिक्का गायब नहीं हुआ। इसके ठीक विपरीत फिरोजाबाद शहर में हुई ट्रेन दुर्घटना में नोच-खसोट हुई थी। शहर और गाँव के लोगों की कर्त्तव्य भावना के अंतर का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता हैं।

सच कहा जाए तो आज साक्षरता और संचार में लगातार वृद्धि के बावजूद समाज में कर्त्तव्यबोध की कमी यदि तेजी से हो रही है तो इसकी वजह यही है कि आदर्श के दीप स्तंभ बुझते जा रहे हैं।

तमिलनाडु की घटना के पश्चात् सरकार और समाज भी सिहर उठे तो देश का भला हो सकता है, लेकिन सरकार के लिए तो अग्निकांड में मरनेवाले लोग फिल्म में मरनेवाले लोग जैसे होते हैं और उनके बचाव की व्यवस्था और कानून न लागू होने पर दिन-प्रतिदिन लोग मरते रहते हैं। इस लोमहर्षक घटना के पश्चात् इस बात की पड़ताल की जानी चाहिए थी कि शिक्षकों ने ऐसी उदासीनता क्यों दिखाई, वह आग को मामूली क्यों समझते रहे, बच्चों को क्लास में बैठे रहने की हिदायत देकर वे खुद बाहर क्यों चले गए, दरवाजे को बाहर से बंद क्यों किया गया और आग के फैलने पर शिक्षक इन बच्चों को बचाने क्यों नहीं आए। यह मात्र लापरवाही नहीं, बल्कि संवेदनहीनता की सटीक मिसाल है। यह एक ऐसी बीमारी है जो पूरे देश में फैल रही है। भावनाओं की यह गरीबी अब दिल्ली, मुंबई, कोलकाता जैसे महानगरों तक सीमित नहीं है, बल्कि हर छोर तक पहुँचने लगी है। असलियत यह है कि सदियों से भावनाओं पर टिके इस देश में अब ज्यादातर लोगों को भावनाएँ छूती ही नहीं। घटनाओं की विद्रुपता से किसी का मन नहीं पसीजता, किसी की आँख से आँसू नहीं छलकता। दरअसल यह संवेदनहीनता सदैव व्यवसाय की मजबूरियों से पनपती और पुख्ती होती है। आखिर तभी तो तमिलनाडु के कुंभकोषम स्कूल के छोटे बच्चों को अनुदान के लिए तीसरी मंजिल पर बिठाया गया था। 16 जुलाई को कथित रूप से अंग्रेजी माध्यम के छात्रों को भूतल से हटाकर तमिल माध्यम की कक्षाओं में ऊपरी मंजिलों में स्थानांतरित कर दिया गया था ताकि शिक्षा विभाग से अनुदान लेने की शर्त को पूरा किया जा सके। नियम के अनुसार तमिल माध्यम के खंड में हर 40 बच्चों पर

एक अध्यापक होना चाहिए तभी स्कूल को दोपहर के भोजन की योजना के अंतर्गत सहायता प्रदान की जाती है।

स्कूल के प्राथमिक खंड में तमिल माध्यम से पढ़नेवाले छात्रों की संख्या बहुत कम थी इसलिए निचली मंजिल में बैठनेवाले अँग्रेजी माध्यम के प्राथमिक व नर्सरी खंड के बच्चों को तीसरी मंजिल पर बिठाया गया था, क्योंकि तमिलनाडु सरकार के सहायक शिक्षा अधिकारी को उसी दिन स्कूल का निरीक्षण करना था। इसीलिए नर्सरी और अँग्रजी माध्यम के छात्रों की बर्दियाँ, जूते और टाई बदल ही गई थी ताकि वह उसी कक्षा के बच्चे दिखाई दें। स्कूल के शिक्षक एवं बच्चे सहायक शिक्षा अधिकारी का इंतजार ही कर रहे थे कि निचली मंजिल पर रसोई घर में लगी आग तीसरी मंजिल तक जा पहुँची और इस मंजिल की फूस की बनी छतें बच्चों पर आ गिरी। कई अभिभावकों और अग्निकांड के गवाह छात्रों का आरोप है कि स्कूल में यह अक्सर होता था कि निरीक्षण के समय अँग्रजी माध्यम के छात्रों को तमिल माध्यमवाले खंड में बिठा दिया जाता था।

भले ही यह सच कड़वा लगे पर सच्चाई यही है कि मौजूदा दौर में इस देश की जनता भी सो रही है। जरूरत इस बात की है कि जिस देश की जनता की आपसी भावनाएँ ही जुड़ी न हों उसे बाहरी ताकतों से ज्यादा अंदरूनी कमियों से डरना चाहिए।

निश्चित ही तमिलनाडु के कुंभकोणम के श्रीकृष्ण स्कूल का यह हादसा शिक्षण संस्थानों, सरकारी प्रशासकों व प्रबंधकों द्वारा बच्चों की सुरक्षा के प्रबंधन में विफलता, सुरक्षा प्रबंधों के प्रतिघोर लापरवाही, सार्वजनिक भवनों में आग बुझाने के पर्याप्त साधन व उपाय का घोर अभाव तथा नियम-कानूनों के पालन पर प्रशासकों का रत्तीभर भी ध्यान न देने को स्पष्ट उजागर करता है। दिक्कत यह है कि ऐसे हादसे के बाद दो-चार अधिकारियों का निलंबन तथा संबंधित अधिकारियों को नियमानुसार काम करने की चेतावनी देकर सरकार अपने दायित्व का इतिश्री कर देती है। थोड़े समय तक लोग चेतते हैं, पर समय गुजरने के साथ ही सब कुछ पहले जैसा ही हो जाता है। आपको याद होगा कि सन् 1995 में हरियाणा के सिरसा जिले के डबवाली कस्बे में ऐसे ही एक हादसे में चार सौ से ज्यादा बच्चों की मौत हुई थी और आए दिन छोटे-बड़े हादसों की खबरें मीडिया में आती रहती हैं, पर हमने किसी हादसे से कोई सबक नहीं लिया और न हम सुरक्षा के प्रति चेते। अधिकारी व कर्मचारी भी अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा नहीं दिखा पाते हैं। सरकार भी शिक्षा को लाभदायक व्यापार के रूप में बढ़ावा देने से कहाँ बाज आ पा रही है? क्या सरकार किसी भी हादसे में मृत या घायलों के परिवार को रुपए बाँटने की रस्म अदायगी कर अपनी जिम्मेदारी से बच सकती है? तमिलनाडु के कुंभकोणम जैसी ही हृदय विदारक घटना दिसंबर 1995 में हरियाणा के डबवाली में हुई थी। इन दोनों घटनाओं में दु:ख और वेदना एक जैसी थी। पर कुंभकोषम में अध्यापकों की निर्दयी भावशून्यता के सामने डबवाली के कुछ नायक हमें चरित्र की शक्ति के बारे में सोचने पर विवश करते हैं। कुंभकोणम के श्रीकृष्ण स्कूल में जैसे ही आग लगी वहाँ के अध्यापक सबके सब उन नन्हें-नन्हें बच्चों को आग में जलने के लिए छोड़कर भाग गए। उनमें से एक ने भी उन बच्चों को बचाने का प्रयास नहीं किया या बच्चों को सावधान कर बाहर की ओर दौड़ने के लिए नहीं कहा। वे स्वयं इस तरह बाहर भाग गए मानो उस विद्यालय या बच्चों से उनका कभी कोई संबंध ही नहीं था। कैसे होंगे ये शिक्षक, उनके संस्कार, उनके जीवन-मूल्य या कुल मिलाकर उनका जीवन-चरित्र? ऐसे अध्यापक किस प्रकार के चरित्रवान विद्यार्थियों का निर्माण करेंगे, इसकी मात्र कल्पना की जा सकती है।

दूसरी ओर डबनाली घटना में जब आग की लपटों में बच्चे भस्म हुए जा रहे थे तो वहीं अकूतेक कुमार बढ़ेरा नामक एक युवक लपटों में घिरे बच्चों को एक-एक कर बाहर निकालने लगा और इसी क्रम में वह स्वयं आग की चपेट में आ गया और जिंदा वापस न लौटा। उसे बच्चों को बचाते देख उसकी 18 वर्षीया बहन बबीता और 13 वर्षीया भतीजी पारूल भी बच्चों को निकालने में आग की भेंट चढ़ गई।

कहना नहीं होगा कि चरित्र की शक्ति का स्रोत अक्षर ज्ञान में नहीं, बल्कि आत्मबल में होता है, देशभक्ति की तपन और निर्भयता में होता है। कौन दे रहा है ये संस्कार?

संपर्क :- 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

रचनाकारों से

(१) रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।
(२) राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित तथा वैचारिक रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।
(३) रचना एक तरफ/कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड अथवा सुवाच्य स्पष्ट लिखी होनी चाहिए।
(४) रचना के अंत में उसके मौलिक अप्रकाशित व अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ रचनाकार का नाम व पूरा पता अवश्य लिखा होना चाहिए।
(५) रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की श्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।
(६) प्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जाती, कृपया उसकी प्रति अवश्य रख लें।
(७) प्रकाशित रचनाओं पर फिलहाल पारिश्रमिक देने की कोई व्यवस्था नहीं है, हाँ, रचना प्रकाशित होने पर अंक की प्रति अवश्य भेजी जाएगी।
(८) किसी भी विधा की गद्य रचनाएं १५०० शब्दों अथवा दो पृष्ठों की मर्यादा में ही स्वीकार्य होंगी।
(९) समीक्षार्थ पुस्तक की दो प्रतियां भेजना आवश्यक है।
(१०) रचनाएं कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड कराकर उसे इन्टरनेट पर भेजें जिसका E-mail - vichardrishti@hotmail.com

सिद्धेश्वर
सम्पादक, विचार दृष्टि दृष्टि ६, विचार बिहार,
यू-२०७, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-९२,
दूरभाषः (०११) २२५३०६५२

बीसवीं सदी का तेलुगु साहित्य

--डॉ. ऋषभदेव शर्मा

डॉ. आई. एन. चंद्रशेखर रेड्डी तेलगु साहित्य के मर्मज्ञ आचार्य हैं। उन्होंने जहाँ एक ओर 'हिंदी व्यंग्य साहित्य'(1989), तथा 'व्यंग्य: सृजन और संवेदना' (2001) जैसी शोध परक समीक्षा-कृतियों से हिंदी भाषा और साहित्य पर अपने अधिकार की पुष्टि की है, वहीं तेलुगु ज्ञानपद रामायणमु' (1993), 'आंध्र: लोक साहित्य एवं संस्कृति'(1994), 'आंध्र लोकसाहित्य में उत्तर रामायण'(1997) तथा आंध्र के मिथकीय लोककथा गीत और संस्कृति(2003) जैसी तेलुगु व हिंदी कृतियों के माध्यम से सही अर्थ में तेलुगु लोक और हिंदी लोक के मध्य साहित्य सेतु के निर्माण-कार्य में अविस्मरणीय योगदान किया है। इसी भूमिका को निभाते हुए अब उन्होंने अत्यंत महत्वपूर्ण कृति 'बीसवीं सदी का तेलुगु साहित्य'(2003) प्रस्तुत की है। यह पुस्तक केंद्रीय हिंदी निदेशालय की वित्तीय सहायता से प्रकाशित की गयी है। इस हेतु निदेशालय साधुवाद का पात्र है।

'बीसवीं सदी का तेलुगु साहित्य' हिंदी में प्रस्तुत किए जाने के पीछे मात्र यही उद्देश्य नहीं है कि, इससे विवेच्य साहित्य के विविध रूपों, धाराओं और प्रवृत्तियों का ऐतिहासिक विश्लेषण हो सके बल्कि इसका लक्ष्य रचना और रचनाकारों के ऐसे दस्तावेज को लिखना रहा है जिससे भारत की आजादी की लड़ाई का, आजादी के पहले के समग्र सामाजिक जीवन और आजादी के बाद के पचास वर्षों के भारतीय जीवन का मर्मांकित बोध हो सके। इस इतिहास को राष्ट्रभाषा हिंदी में प्रस्तुत करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि इससे विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य में परिलक्षित बीसवीं शताब्दी की प्रवृतियों का तुलनात्मक अध्ययन संभव हो सके। उम्मीद की जानी चाहिए कि हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य का 'बीसवीं सदी का ऐसा ही लेखाजोखा केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रस्तुत किया जायेगा। यदि ऐसा हो सका तो इस श्रृंखला को 'भारतीय साहित्य' को सुनिश्चित रूपाकार प्रदान करने का श्रेय प्राप्त हो सकेगा। ऐसा करके ही हिंदी को भारतीय लेख्कों की आम भाषा बनाया जा सकता है।

डॉ. आई. एन. चंद्रशेखर रेड्डी का यह ग्रंथ कुल छह सोपानों में नियोजित है। आरंभ में भूमिका के अंतर्गत यह स्पष्ट किया गया है कि इस ग्रंथ में आधुनिक तेलुगु साहित्य का इतिहास साहित्यिक मूल्यांकन, साहित्यिक रसास्वादन, ऐतिहासिक आकलन, परिवेश सापेक्ष गुणांकन, नवीन विचारों की उत्प्रेरणा, गवेषणात्मक नवीन सूचनांकन आदि के आलोक में प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम खंड में आधुनिक काल के पूर्व के तेलुगु साहित्य पर एक विहंगम दृष्टिपात किया गया है जिसकी वास्तव में आवश्यकता थी।

समीक्ष्य पुस्तक : 'बीसवीं सदी का तेलुगु साहित्य'
लेखक : डॉ आई. एन. चंद्रशेखर रेड्डी,
आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्री वेकटेश्वर विश्वविद्यालय,
तिरूपति- 517502 आ. प्र.
समीक्षक : डॉ० ऋषभदेव शर्मा
प्रकाशक : केंद्रीय हिंदी निदेशालय शिक्षा विभाग,
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय)
पश्चिम खंड-7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110 066

दूसरे खंड में आधुनिक तेलुगु साहित्य के प्रेरणा स्रोतों की चर्चा है जो लगभग वे ही है जिनकी चर्चा हिंदी के आधुनिक साहित्य के संदर्भ में की जाती है।

तीसरा खंड विशेष रूप से अंग्रेजों एवं ईसाई मिशनरियों की तेलुगु साहित्य सेवा को समर्पित है। इसी खंड में आधुनिक साहित्य के युग प्रवर्त्तक तिरूपति वेंकट कवि, कंदुकूरि वीरेशलिंगम पंतुलु तथा गुरजाडा अपाराव के साहित्य का मूल्यांकन किया गया है। वस्तुत: यह खंड दूसरे खंड का ही विस्तार है इसलिए इसका अलग से शीर्षक नहीं दिया गया है।

हिंदी पाठक के लिए यह जानकारी रोचक हो सकती है कि तिरूपति वेंकट कवि कविद्वय हैं। दिवाकर्ल तिरूपति शास्त्री (सन् 1871-1919) और चेल्लापल्ली वेंकट शास्त्री (1870-1950) दोनों मिलकर तेलुगु में तिरूपति वेंकट कवि के रूप में लोकप्रिय हुए। इन्होंने ही तेलुगु में आधुनिक काव्य का सूत्रपात किया और परम्परागत 'ग्रांथिक भाषा' तथा व्याकरण के नियमों का विरोध करके 'व्यावहारिक भाषा' का प्रारंभ किया। वीरेश लिंगम ने तेलुगु साहित्य को भारतेंदु जैसा विधा वैविध्य प्रदान किया जबकि गुरजाडा ने 'कन्याशुल्कम्' जैसे कालजयी नाटक सहित अनेक कृतियों की रचना करते हुए आधुनिकता, राष्ट्रीयता और लोक प्रतिबद्धता के संतुलन का आदर्श रूप प्रस्तुत किया। यह भी विचारणीय है कि आधुनिक काल के इन युग प्रवर्त्तकों की रूचि भी व्यंग्य के प्रति उसी प्रकार की दिखायी देती है जैसी हिंदी में भारतेंदु युग के रचनाकारों की थी।

चौथे खंड में सही अर्थ में बीसवीं शताब्दी का प्रवेश होता है। इस काल में नवीन काव्य प्रयोगों का प्रचलन रहा। 'भावकविता' यदि छायावादी काव्य के संमातर चली तो 'अभ्युदय कविता' प्रगतिवादी काव्य के। 'दिगम्बर कविता' अकविता की समानधर्मा है तो 'विपलव कविता' जनवादी कविता जैसी है। इन आंदोलनों के बीच ही 1940 के बाद की तेलुगु कविता 'वचन कविता' के रूप में स्थिर हुई। यहाँ यह भी उल्लेख किया जा सकता है कि, अभ्युदय, विपूलव और दिगम्बर कविता मूलत: प्रगतिशील चिंतन को ही व्यक्त करती है। इन तीनों ने साहित्य के सामाजिक प्रयोजन की प्रतिबद्धता को स्वीकार किया। अंतर यह है कि अभ्युदय कवियों ने जनसंघर्ष को सपाट बयानी में व्यक्त किया, दिगम्बर कवियों ने उसे अश्लील और निषेधात्मक काव्यभाषा द्वारा चित्रित किया तथा विपूलव कवियों ने नक्सलवाद के अनुरूप सशस्त्र संघर्ष का आह्वान किया। लेखक ने इन सभी काव्यधाराओं की वस्तु और शिल्प संबंधी विशेषताओं पर विस्तार से सोदाहरण प्रकाश

शेष पृष्ठ 39 पर...........

वेणु विहार सरकारी गृह निर्माण समिति लि.

उत्तरी पटेल नगर, पटना-२३ (बिहार)

दूरभाष : २२८८५९८

आवासीय भूखण्ड

१. उत्तरी पटेल नगर : १०० आवास आवंटित

२. पूर्वी रामकृष्णा नगर (बाईपास में) : १२५ आवासीय भूखण्ड आवंटित एवं भूखण्ड उपलब्ध हैं

३. पटना गया रेलवे लाइन में कुरथौल के पश्चिम : ५० भूखण्ड आवंटित

प्रयासरत सस्ती भूखण्ड के लिए

– मदरटेरेसा पथ दक्षिणी क्षोर करीब 2 1/2 KM दक्षिण बाई पास के

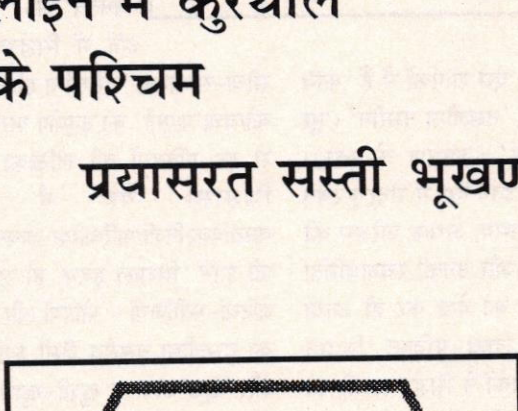

नवल किशोर प्रसाद
सचिव

समाज की समस्याओं का विशद चित्रण करते सेन्र्यू काव्य-संग्रह

-✍समीक्षक : डॉ0 सुधा गुप्ता

समीक्ष्य पुस्तकें	*: 'सुर नहीं सुरीले', 'जागरण के स्वर'*
समीक्षक	*: डॉ0 सुधा गुप्ता*
सेन्र्यूकार	*: श्री सिद्धेश्वर*
प्रकाशक	*: सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन, 'दृष्टि', यू0-२०७, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली- ११००९२, दूरभाष: २२५३०६५२*
पृष्ठ संख्या	*: ११२ पृष्ठ*
मूल्य	*: १२५ रुपए*

यह सुखद है कि वर्ष 2004 में हाइकुकार सिद्धेश्वर जी के दो सेन्र्यू काव्य संग्रह 'सुर नहीं सुरीले' और 'जागरण के स्वर' सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं, सिद्धेश्वर जी एक वरिष्ठ, अनुभवी, गंभीर अध्येता हाइकुकार हैं। इन्होंने अपने द्वारा लिखित भूमिका में हाइकु और सेन्र्यू के अंतर को बहुत स्वच्छता से स्पष्ट किया है, कलेवर की दृष्टि से दोनों समान होने से - पाँच-सात-पाँच वर्गीय, त्रि-पंक्ति बद्ध, सत्रह वर्णीय स्वतंत्र मुक्तक होने के कारण सिद्धेश्वर जी हाइकु के दो रूप या शैली मानते हैं-हाइकु और सेन्र्यू (सुर को 'मनुष्य की दुर्बलताओं अथवा दुर्बल क्षणों पर व्यंग्य अथवा ग़ज़लों' पैरोडी भी' स्वीकार करते हैं जो कि सेन्र्यू की मूल अवधारणा है। उनका अभिष्ट है कि जिस प्रकार उर्दू में हज़ल है उसी प्रकार हाइकु का ही एक अन्य रूप है सेन्र्यू।

'सुर नहीं सुरीले' (प्र०सं० मार्च, 2004) नामक सेन्र्यू संग्रह में पंद्रह शीर्षकों के अंतर्गत सात सौ नब्बे सेन्र्यू हैं और 'जागरण के स्वर' (प्र०सं० 2004) में दस शीर्षकों के अंतर्गत नौ सौ पैंतीस सेन्र्यू रक्खे गये हैं। निर्विवाद रूप से इनके मूल में मनुष्य, समाज, राजनीति से जुड़ी समस्याएँ/दुर्बलताएँ/विडंबनाएँ अंकित की गई हैं। आज के युग में, भारतीय परिवेश में व्याप्त भ्रष्टाचार, नैतिक पतन, लोकतंत्र की हत्या, नेताओं का दुराचरण तथा विश्व स्तर की सबसे बड़ी समस्या - आतंकवाद के साथ-साथ भारत के ग्रामों में दुर्दशा ग्रस्त कृषक वर्ग तथा आम भारतीय निर्धन नागरिक की वेदना ने सेन्र्यूकार को मर्माहत किया है। फलत: उनकी समस्याओं का विशद चित्रण इन संग्रहों की विशेषता कही जायेगी। दूसरी ओर, कवि के निजी जीवन में 'हीरो' अथवा 'हीरोइन' का पद प्राप्त करनेवाले व्यक्तित्वों पर भी सेन्र्यू रचे गये हैं जहाँ व्यंग्य/हास्य/तीक्षण स्वरों का सर्वथा अभाव है और मात्र प्रशस्ति के स्वर गुंजरित हो रहे हैं, ऐसे शीर्षकों में हैं 'कवि तोमर', 'सरदार पटेल', 'तसलीमा नसरीन' (सुर नहीं सुरीले) 'महावीर' (जागरण के स्वर)। इसमें दो राय नहीं कि इतने ढेर-से सेन्र्यू रचने के लिये बहुत ऊर्जा, समय, अथक परिश्रम की आवश्यकता हुई होगी और उनकी रचनाधर्मिता के प्रति अगाध निष्ठा को देख कर ही आधा दर्जन से अधिक लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान समीक्षकों/भूमिका लेखकों ने सिद्धेश्वर जी को बधाई शुभाशंसा दी हैं। नि:संदेह सिद्धेश्वर जी बधाई-पात्र हैं।

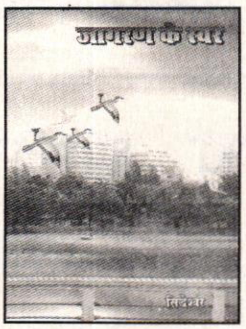

दोनों संग्रहों का अध्ययन कर के कुछ निष्कर्ष स्वत: सामने आ जाते हैं:-

1. 'महावीर' शीर्षक लंबे खण्ड में हाइकु/सेन्र्यू छंद का प्रयोग मात्र छंद के रूप में किया गया है और कथा-सूत्र को बढ़ाने के लिये यह एक अनिवार्यता ही रही होगी।

2. फल-स्वरूप अनेक स्थानों पर यह सारा रचना-क्रम वर्णनात्मक ब्यौरा भर बन कर रह जाता है। वरिष्ठ हाइकुकार/समीक्षक डॉ० मोती लाल जोतवाणी जिसे 'स्टेटमेण्ट' कहते हैं। हाइकु से हटकर सेन्र्यू के संदर्भ में देखें तो भी निराशा हाथ लगती है क्योंकि रचनाकार के तेवर की तेजी, तल्खी, व्यंग्य की आक्रामकता, हास्य का प्रच्छय रूप जैसे हथियार कहीं दिखाई नहीं पड़ते। (कुछ अपवादों को छोड़ कर) कुछ सेन्र्यू तो गद्य की एक ही पंक्ति को तोड़ कर तीन पंक्तियाँ-सी बनी प्रतीत होती हैं :

समझें आप/ अपनी जिम्मेदारी/राष्ट्र हित में
हो रहा आज/जघन्य अपराध/सत्ता की आड़
जाँच एजेन्सी/ भ्रमित कर रही।
जनता को भी
जनतंत्र में / आज सारा
समाज / बँट गया है
दिन-ब-दिन/ कटुता बढ़ रही/
दलों के बीच

(सभी सेन्र्यू 'जनतंत्र' से)

अंत में सिद्धेश्वर जी से एक सीधा-सा प्रश्न। 'तसलीमा ही/नारी की अस्मिता को/बचा पाएगी' का उद्घोष करनेवाले सेन्र्यूकार से इन पंक्तियों की लेखिका की एक मात्र जिज्ञासा यह है कि क्या वास्तविक/निजी/पारिवारिक जीवन में भी सिद्धेश्वर जी इतने 'विशाल हृदय' हो सकेंगे कि अपनी बेटियों-भतीजियों - पोतियों और पुत्र-पौत्र वंधुओं को तसलीमा नसरीन जैसी व्यक्तिगत आजादी और 'छूट' लेने पर खुशी-खुशी उनकी प्रशस्ति और गुण-गान में सेन्र्यू रच सकें??? उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी। (सेन्र्यूकार ने समीक्षक को उत्तर लिख भेजा है।)

संपर्क : 'काकली'
120 बी/2, साकेत, मेरठ (उ०प्र०)

साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष २००३ के लिए चार भाषा सम्मान व १९ अनुवाद पुरस्कार

विचार ब्यूरो, दिल्ली

साहित्य अकादमी का वर्ष 2003 के लिए चार भाषा सम्मान तथा 19 अनुवाद पुरस्कार उड़िया के लेखक-कवि मनोज दास को प्रदान किए। भाषा सम्मान से केशवानंद गोस्वामी, महम्मुद वारिस किरमानी, मंगत रवीन्द्र तथा बिहारी लकड़ा को सम्मानित किया गया। अनुवाद के लिए निम्नलिखित अनुवादकों को उनके आगे अंकित भाषा के लिए पुरस्कृत किया गया।

1.	देवेश-	हिंदी	8.	रेणुका श्रीराम सोनी-	गुजराती	14.	सुवास दीपक-	नेपाली
2.	इकबालदीप-	पंजाबी	9.	स्नेहलता रोहिड़कर-	कन्नड़	15.	सौदामिनी नंदा-	ओड़िया
3.	रामस्वरूप किसान-	राजस्थानी	10.	आर.एस.भास्कर-	कोंकणी	16.	कृष्ण राही-	सिंधी
4.	वकार कादरी-	उर्दू	11.	एम.पी.कुमारन-	मलयालम	17.	नील पद्मनाभन-	तमिल
5.	स्व. उपेन्द्र दोषी-	मैथिली	12.	अरिबम कुमार शर्मा-	मणिपुरी	18.	बी. रामब्रह्मनम-	तेलुगु
6.	स्व. सुजीत मुखर्जी-	अंग्रेजी	13.	अर्पणा बेलगकर-	मराठी	19.	मलय राय चौधरी-	बंगला
7.	राजेन शइकीया-	असमिया						

जानकारी मिली कि बंगला लेखक मलय राय चौधरी ने पुरस्कार लेने से इनकार कर दिया था। लिहाजा, वह समारोह में आए भी नहीं। अकादमी एवं समारोह के अध्यक्ष प्रो. गोपी चंद नारंग ने अनुवाद के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती संख्या पर प्रसन्नता जाहिर की। अकादमी के सचिव प्रो. के. सच्चिदानंद ने प्रारंभ में स्वागत भाषण किया तथा उपाध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय ने आभार व्यक्त किया।

डॉ. शशि हंगरी व जर्मनी में सम्मानित

सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार डॉ. श्याम सिंह शशि को बुदापेस्त में विश्व हंगरी काँग्रेस द्वारा आयोजित विश्व हंगरी कांग्रेस के एक सम्मेलन में कांग्रेस के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष पतरूबेनी ने विशिष्ट मंडल व प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस सम्मेलन में अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा, जापान, रूस व चीन आदि के हंगेरियन प्रवासियों के अतिरिक्त अनेक विश्व विद्यालययों के प्राध्यापकों ने भाग लिया।

बुदापेस्त रेडियो व दूरदर्शन पर प्रसारित अपने एक साक्षातकार में डॉ. शशि ने कहा कि गीता व रामायण के हंगेरियन भाषा में अनुवाद हुए हैं।

डॉ. शशि ने जर्मनी में वर्लिन-प्रवास के दौरान प्रवासी भारतीय विद्वानों, राजनयिकों, लेखकों तथा सिंती रोमा कलाकारों से मिलकर कला, संस्कृति एवं साहित्य संबंधी नवीनतम तथ्य प्राप्त किए। बर्लिन में भारत मजलिस संस्था ने डॉ. शशि के सम्मान में एक परिचर्चा गोष्ठी का आयोजन किया जिसमें शक हूणों पर अपने नए अनुसंधान तथा नवैज्ञानिक इतिहास पर विचार व्यक्त किए। साथ ही इंडो जर्मन साहित्य पर भी प्रकाश डाला।

प्रस्तुतिः डॉ. जे. के. शर्मा, मीडिया प्रभारी, मीडिया शोध केंद्र, दिल्ली

ओमपुरी आर्डर ऑफ ब्रिटिश एंपायर से सम्मानित

मशहूर फिल्म अभिनेता ओमपुरी को ब्रिटेन का सबसे सम्मानित पुरस्कार आर्डर ऑफ ब्रिटिश एंपायर से दस साल में फिल्मों और टेलीवीजन के माध्यम से ब्रिटिश सिनेमा में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया । यह पुरस्कार पानेवाले ओमपुरी पहले भारतीय हैं। इसके पूर्व ब्रिटेन का ऑस्कर कहे जानेवाले 'ईस्ट इज ईस्ट' के लिए ब्रिटिश का चर्चित बाफ्टा में उन्हें नामांकित किया जा चुका है। ओमपुरी ने इस पुरस्कार को अपना नहीं, हिंदी सिनेमा और देश का सम्मान बताया।

स्वामी अग्निवेश को राजीव गाँधी सद्भावना पुरस्कार

समाज में सांप्रदायिक सद्भाव, शांति एवं पारस्परिक भाई-चारे की भावना का प्रचार-प्रसार करने लिए बँधुआ मुक्ति मोर्चा के स्वामी अग्निवेश को 20 अगस्त को आयोजित राजीव गाँधी जयंती-समारोह के अवसर पर उन्हें राजीव गाँधी सद्भावना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

ब्रिटिश लेखक ऐलन को बुकर पुरस्कार

बब्बे हजार पौंड के ब्रिटेन का सर्वाधिक प्रतिष्ठित साहित्यिक सम्मान बुकर पुरस्कार से वर्ष 2004 में एलन होलिंगघर्स्ट को उनके उपन्यास 'लाइन ऑफ ब्यूटी' के लिए दिया गया है। इसमें समलैंगिक की कहानी है। यह पुरस्कार ब्रिटेन, आयरलैंड तथा राष्ट्रकुल देशों के लेखकों को पिछले 12 महीने के दौरान प्रकाशित उनकी साहित्यिक कृति के लिए दिया जाता है।

श्याम बेनेगल को राष्ट्रीय एकीकरण पुरस्कार

फिल्मों के जरिए समाज के प्रति चिंता, सांप्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय अखण्डता में योगदान के लिए सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता श्याम बेनेगल को वर्ष 2003 का 19वाँ इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय एकीकरण पुरस्कार से दिनांक 31 अक्टूबर को नवाजा गया। बेनेगल को एक लाख इक्यावन हजार रुपए का यह पुरस्कार सोनिया गाँधी ने प्रदान किया।

ताजमहल के ३५० बरस पूरे हुए और लता ने पूरे किए ७५ बसंत

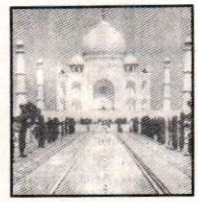

इसे हसीन इत्तफाक ही कहिए कि मोहब्बत की इबारत ताजमहल की तामीर को 21 सितंबर को 350 बरस पूरे हुए और संगीत की आत्मा एवं आवाज की जादूगर लता ने 28 सितंबर को अपने जीवन के 75 बसंत पूरे किए। अब यह तय करना कठिन है कि इंसान के हाथों बनाए ताजमहल के संगमरमरी हुस्न में ज्यादा खूबसूरती है या कुदरत की देन लता की आवाज में ज्यादा कशिश। तकरीबन साठ साल से संगीत की साधना कर रही लता जी जीते जी किंवदंती बन गई हैं।

मोहनलाल जैन को गाँधी सेवा पुरस्कार

गाँधी जयंती के उपलक्ष्य में विगत 1 अक्टूबर को उपराष्ट्रपति भवन में आयोजित एक सम्मान समारोह में गाँधी दर्शन समिति (राष्ट्रीय) कोलकाता द्वारा स्थापित 'गाँधी सेवा पुरस्कार' गाँधी आचार-विचार के प्रति समर्पित 85 वर्षीय समाजसेवी मोहन लाल जैन को उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत के कर-कमलों से उन्हें शाल, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह एवं इक्कीस हजार रुपए प्रदान कर, सम्मानित किया गया। उपराष्ट्रपति ने अपने उद्गार में कहा कि आज की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि गरीब के लिए निकला पैसा उस तक नहीं पहुँच पाता है। यदि यह पैसा गरीब तक पहुँच जाए तो भारत से गरीबी समाप्त हो जाएगी। श्री शेखावत ने कहा कि गरीबी की रेखा से नीचे रहनेवाले 28 करोड़ व्यक्ति लोकतंत्र का पाँचवा स्तंम है और अगर यह स्तंभ असंतुलित हुआ तो अन्य चारो स्तंभ प्रभावति हुए बिना नहीं रह सकते। इस अवसर पर मुनिश्री प्रशांत कुमार ने कहा कि उस दीपक का मूल्य होता है जो अँधेरे को निगल कर प्रकाश फैलाता है। प्रारंभ में समिति के महामंत्री डॉ० मंगला प्रसाद ने मान्य अतिथियों का स्वागत किया तथा समिति के अध्यक्ष डॉ० बाल शौरि रेड्डी ने आभार व्यक्त करने के क्रम में कहा कि जो दृढ़ता से संकल्प करता है उसे निश्चित रूप से सफलता मिलती है। समारोह में उ०प्र० एवं उड़ीसा के पूर्वराज्यपाल डॉ० सत्यनारायण रेड्डी, के० एल० जैन, डॉ० धर्मेन्द्रनाथ अमन, डॉ० अनिल दत्त मिश्र, डॉ०बी० एन पाण्डेय तथा 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर के अतिरिक्त अनेक गणमान्य सुधीजन उपस्थित थे।

प्रस्तुति : अनुज कुमार, दिल्ली से

राँची में जनकवि डॉ0 'पाचर' सम्मानित

लोकोन्मुखी काव्य सर्जना के लिए प्रसिद्ध चिकित्सक एवं जनकवि डॉ० सहदेव सिंह 'पाचर' राहुल स्टडी सर्किल, राँची की ओर से सम्मानित किए गए। विगत 25 जुलाई को राँची (झारखंड) के हरमू हाउसिंग कॉलोनी स्थित पटेल सामुदायिक भवन में आयोजित समारोह में राँची विश्व विद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष एवं समालोचक डॉ० दिनेश्वर प्रसाद द्वारा डॉ० 'पाचर' को राहुल स्मृति चिन्ह, मानपत्र तथा अंगवस्त्रम् से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर डॉ० पाचर को एक चर्चित एवं ख्याति प्राप्त व्यंग्यकार बताया गया वहीं

राहुल स्टडी सर्किल के निदेशक डॉ० पी० एन० विद्यार्थी ने उनका अभिनंदन करते हुए उन्हें क्रांति दर्शी 'व्यंग्यकार कहा।

समारोह के दूसरे चरण में डॉ० पाचर का एकल काव्य-पाठ हुआ जिसमें उन्होंने राजनीतिक आतंकवाद तथा अन्य समसमयिक मुद्दों पर अपनी तीखी कविताएँ सुनाकर सुधी श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध किया। इस अवसर पर पूर्व सांसद रामटहल चौधरी, डॉ०बी० दयाल, डॉ० भुवनेश्वर अनुज, मातवर राम, डॉ० राजकुमारी सिन्हा, संजय कुमार, सूरज सिंह भोजपुरिया, गोपाल सिंह, जागरूप सिंह, परशुराम सिंह, हरे राम, बिपिन विप्लवी तथा डॉ० एन० दयाल की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। प्रो० गिरिधारी राम गांफु ने अतिथियों एवं श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया तथा समारोह का संचालन किया प्रो० नागेन्द्र प्रसाद ने।

प्रस्तुति : डॉ० पी० एन० विद्यार्थी
बी-140, हरम हाउसिंग
कॉलोनी, राँची-834012
झारखंड

राँची में 'शीशे की गवाही' का लोकार्पण

राहुल स्टडी सर्किल, राँची के तत्वावधान में विगत 20 अगस्त को एक समारोह में राँची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० एस० एस० कुशवाहा ने झारखण्ड के जेल महानिरीक्षक डॉ० सभापति कुशवाहा भा०प्र०से० की सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'शीशे की गवाही, का लोकार्पण करते हुए कहा कि इस पुस्तक में रचनाकार की संवेदनशीलता और सृजनात्मकता दर्ज है। प्रारंभ में सर्किल के निदेशक डॉ०पी०एन०विद्यार्थी ने अतिथियों का स्वागत तथा प्रो० (डॉ०) गिरिधारी राम गौंझू ने लोकार्पित पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की।

डॉ० पी० एन० विद्यार्थी

हबीब तनवीर को लाइफटाइम एचीवमेंट अवार्ड

रंगमंच के क्षेत्र में उल्लेखानीय योगदान करनेवाले जाने-माने रंगकर्मी हबीब तनवीर को 'लीजेंड्स ऑफ इंडिया लाइफटाइम एचीवमेंट अवार्ड' से दिल्ली की मुख्य मंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने सम्मानित किया।

..........पृष्ठ ३४ का शेष अंश

डाला है। निश्चय ही यह इस ग्रंथ का सर्वाधिक महत्वपूर्ण खंड है।

पाँचवे खंड में आधुनिक तेलुगु उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध और आलोचना के विकास का सिंहावलोकन मात्र प्रस्तुत किया गया है। केवल 40 पृष्ठ के इस अध्याय से जिज्ञासु पाठक का तृषित रह जाना स्वाभाविक है। किसी पृथक प्रायोजना के तहत इन पर भी विवेचना की आवश्यकता है। तथापि तथ्यों के प्रस्तुतिकरण और प्रतिपादन में लेखक की सारग्रहिणी मेधा के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं।

तेलुगु की अत्याधुनिक साहित्यिक प्रवृतियाँ व धाराएँ' शीर्षक छठा खंड वास्तव में चौथे खंड का परिपूरक है। इसमें दलित साहित्य, स्त्रीवादी साहित्य और अल्पसंख्यकवादी साहित्य जैसी तीन प्रवृतियों का सप्रमाण खुलासा किया गया है। यहाँ भी अपेक्षित विस्तार का अभाव खटकता है। इसी अध्याय में मिनी कविता और मिनी कथा की चर्चा समाहित है तथा नव्यसंप्रदाय और नव्यपद्यकाव्य पर भी संक्षिप्त टिप्पणी की गयी है। अंत में ग्रंथ को परिपूर्णता प्रदान करते हुए 49 संदर्भ ग्रन्थों की सूची भी प्रस्तुत की गयी है।

कुलमिलाकर 'बींसवी सदी का तेलुगु साहित्य' का मुख्य बल काव्य पर रहा है, जबकि गद्य साहित्य की चर्चा परिचयात्मक ही अधिक है। परंतु इससे ग्रंथ का महत्व कम नहीं हुआ है। तेलुगु साहित्य की बींसवीं शताब्दी की प्रवृित्तियों का समग्र भारतीय साहित्य के संदर्भ में अध्ययन करने की दृष्टि से इसे एक आवश्यक पुस्तक माना जा सकता है।

(अंततः क्षमा याचना सहित यह कहना भी आवश्यक लग रहा है कि केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित इस ग्रंथ के ब्लर्ब पर 'पिरोने' को 'फिरोने' मुद्रित किया गया है और यत्र तत्र 'कमर कसा था' (पृष्ठ 73) जैसी चूकें भी मुँह का मजा बिगाड़ने के लिए विद्यमान हैं।) यह प्रसन्नता की बात है कि 270 पृष्ठों के इस ग्रंथ का मूल्य 66 रुपये मात्र है।

संपर्क : रीडर, द०भा०हिंदी प्रचार सभा
खैरताबाद, स्टेशन रोड, नामपल्ली
हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

सरदार पटेलः भारत के एकलब्य

-डॉ० हेमंत पटेल

कौन जानता था कि सरदार पटेल का जन्म दिन 31 अक्टूबर 1875 हम भारतवासियों के लिए सूर्योदय का दिन होगा। वैसे तो सूर्योदय और चंद्रोदय ऋतु परिवर्तन के कारण अपनी भौगोलिक रूप रेखा में यथावत ही चलता रहता है। परंतु गुलाम भारत में जन्मे पटेल का पंचतत्वों से बना शरीर पंचतत्वों में विलीन के बाद भी हम भारतवासियों के लिए मार्गदर्शक एवं प्रेरणा का स्रोत बना ही रहेगा।

अक्टूबर का महीना धर्मालंबियों के लिए पवित्र महीना होता है, इसी महीने में शक्ति की अराध्य माँ दुर्गा की पूजा की जाती है, वही अक्टूबर महीना हिंदुस्तान के लिए न भूलनेवाली अमूल्य धरोहर जैसा है, किसी ने ठीक ही कहा है कि होनहार विरवान के होत चिकने पात। वैसे ही अक्टूबर के आरंभ में ही राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और गुदरी के लाल, लाल बहादुर शास्त्री की याद के बाद मध्य अक्टूबर में लोक नायक जयप्रकाश नारायण की याद के बाद, 'अंत भला तो सब भला' की कहावत को चरितार्थ करते हुए 31 अक्टूबर को अंग्रेजों के दिल में भय पैदा करनेवाले वीर, बिखरे राजघरानों को हिंदुस्तान की कहानी में पीरोनेवाले, मजहब एवं भाषा के नाम पर मिटनेवाले सरदार पटेल हिंदुस्तानियों को, विभिन्न धर्मालम्बियों को एकता के सूत्र में समेटने के सफल एवं प्रशंसनीय कार्य ने अंग्रेजों के लौह पुरुष; राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के भक्त, त्याग के प्रतिमूर्ति, राष्ट्र के निर्माता, आधुनिक भारत के भाग्य विधाता, बारड़ोली के शेर, देश के सरदार, श्री झवेल भाई के तीसरे पुत्र, विठ्ल भाई पटेल के अनुज, मणीवेन एवं डाहया भाई पटेल के पिता, करमसद गाँव गुजरात राज्य के पुत्र, हिंदुस्तान के सपूत, राष्ट्र के गौरव, राष्ट्र निर्माता लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 ई० में हुआ ।

सरदार पटेल का कृतित्व ही उनका व्यक्तित्व था, सरदार की कथनी और करनी में नाम मात्र का भी भेद नहीं था। सरदार का जन्मगत स्वभाव ही समाज सेवा, किसान संगठन एवं मानव जीवन के उत्तरोत्तर विकास करने का था। सरदार पटेल बोलते कम थे, परंतु करते अधिक थे। सरदार का निर्णय अबतक

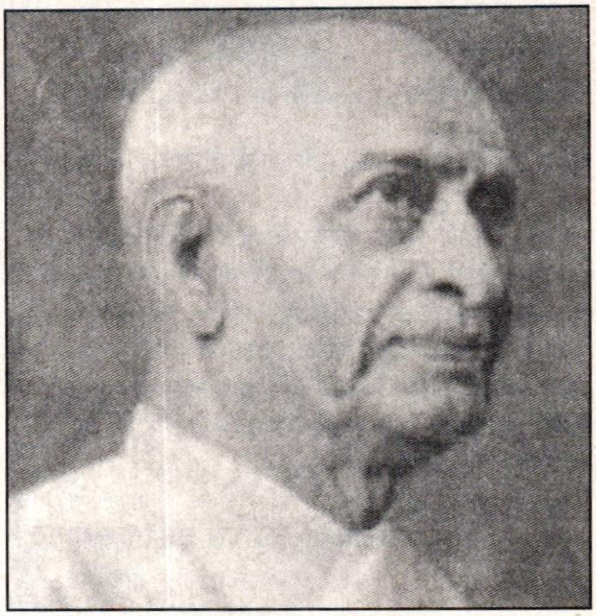

की घटनाओं के क्रम में कभी गलत साबित नहीं हुआ। भविष्य के बारे में अकाट्य सत्य निर्णय करनेवाले तथा निर्णय से लोगों से परिचित करनेवाले इतिहास में अकेले राज्यनेता हैं। उदाहरण स्वरूप राष्ट्रपति भवन की डायरी ग्रंथ में बाल्मीकी चौधरी ने पं० जवाहर लाल नेहरू के बारे में सरदार पटेल के कहे शब्दों को यथावत लिखा है कि 'भारत में केवल एक ही राष्ट्रीय मुसलमान है वो है जवाहरलाल नेहरू।

अंग्रेजों की दमनकारी नीति अपनी चरम सीमा पर थी तथा देश के नौजवानों का जोश अपनी सीमाओं को पार करने के लिए उतावला था। उसी समय बारडोली गुजरात के किसान 29 फरवरी 1928 को सरदार के नेतृत्व में अंग्रेजों से मुकाबला करने के लिए आमने-सामने आ गए। अक्टूबर 1928 तक आंदोलनकारियों पर अंग्रेजों ने तरह-तरह के दमनात्मक कार्य किए, फिर भी किसान सरदार के नेतृत्व में अडिग रहे। सरदार पटेल ने जिस निर्भयता एवं अपूर्व संगठनकर्त्ता के रूप में फरवरी, 1928 से बारडोली में किए गये सत्याग्रह का नेतृत्व किया वह इतिहास की धरोहर है।

किसी भी भारतीयों को उस समय विश्वास नहीं था कि सरदार पटेल आंदोलन में सत्य प्रतिशत सफल होंगे परंतु सरदार के दृढ़ निश्चय का परिणाम था कि अक्टूबर 1928 को विदेशी सरकार को किसानों के पक्ष में निर्णय करना पड़ा। अंग्रेजों की कुटनितियों के खिलाफ किसानों को अपनी सूझ-बूझ एवं कुशल नेतृत्व में जो आशा का दीप सरदार ने जलाया वह 9 महीनों के बाद बारडोली की जीत में परिणत हो गया और इसके फलस्वरूप बारडोली का शेर देश का सरदार बन गया।

देश के विभाजन के बाद 15 अगस्त 1947 को देश आजाद कर दिया गया। राष्टपिता महात्मा गाँधी की कमजोरी जवाहर लाल नेहरू तथा महात्मा के प्रिय शिष्य सरदार पटेल थे। महाभारत की कहानी में द्रोणाचार्य की कमजोरी थी कि अर्जुन से श्रेष्ठ धनुर्धर कोई नहीं है, परंतु धन्य हैं गुरु द्रोणाचार्य जिन्होंने गुरु के नाम को भी कलंकित कर दिया। पढ़ाया कुछ नहीं, परंतु गुरु दक्षिणा माँगने में हिचकिचाये नहीं। धन्य है एकलब्य जिसे गुरु की कुत्सित मानसिकता को जानते हुए भी द्रोणाचार्य के द्वारा माँगी गई गुरु दक्षिणा में अपने दाहिने हाथ का अंगूठा तत्क्षण काट कर दे दिया और फिर अर्जून श्रेष्ठ धनुर्धर हो गये तथा एकलब्य इतिहास के हासिये पर रह गए।

देश का दुर्भाग्य एवं जनतांत्रिक मूल्यों का तिरस्कार होना था, सो महाभारत की घटना एकबार फिर भारत में घटित हुई। भारत का

प्रधानमंत्री बनने के लिए पंद्रह प्रांतीय कांग्रेस कमिटियों में से बारह ने सरदार पटेल के संबंध में तथा तीन ने जवाहर लाल नेहरू के पक्ष में मत दिया था। परंतु महात्मा गाँधी ने सरदार पटेल से अनुरोध किया कि वह कांग्रेस में अपने बहुमत पर ध्यान न देकर नेहरू जी को ही प्रधानमंत्री बन जाने दें। सरदार ने तत्क्षण उनके अनुरोध को मूर्त रूप दिया। इस प्रकार सरदार पटेल दानवीर कर्ण जैसे बहुमत रूपी कवच कुंडल को देश की बलिवेदी पर सहर्ष न्योछावर कर दिया। सरदार पटेल के द्वारा छोड़ी गई प्रधानमंत्री की कुर्सी जवाहर लाल नेहरू को मिली। साथ ही साथ अल्पमत की जीत बहुमत पर हुई।

देश सेवा के लिए अपना सर्वस्व जीवन न्योछावर करनेवाले सरदार पटेल कभी पुरस्कार की अभिलाषी नहीं हुए। महात्मा गाँधी ने आजादी के पूर्व भी कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में नेता जी सुभाष चंद्रबोस को कांग्रेस अध्यक्ष पद न देकर नेताजी को न समझने की भूल की थी। नेता जी त्याग पत्र देकर महात्मा गाँधी के स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी आहुति दी।

सरदार पटेल ने आजादी के बाद साल भर के अंदर बिना हिंसा के विशाल अखंड भारत का जो नक्शा दिया वह संसार के इतिहास की पहली एवं अंतिम घटना है। इतना बड़ा विशाल राष्ट्र साल भर के अंदर अकेले राजनेता के लिए स्थापित करना वर्तमान में अविश्वनीय परंतु इतिहास की विश्वसनीय घटना है। इसके बावजूद नेहरू जी ने अपनी व्यक्तिगत ढूलमूल नीति के कारण कश्मीर का मामला राष्ट्रसंघ में अटका दिया। सरदार पटेल के विरोध के बावजूद नेहरू जी ने कश्मीर मामला को संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद में डाल दिया। सुरक्षा परिषद में ब्रिटेन तथा अमेरिका ने पाकिस्तान का पक्ष लिया और इसी कारण आजतक कश्मीर का मामला सुलझ नहीं सका। देश के कई करोड़ रुपये कश्मीर पर प्रतिवर्ष खर्च होने के बावजूद कश्मीर में आज फिर विध्वसंक तोड़फोड़ का बोलवाला है। यह जवाहर लाल नेहरू की कश्मीर नीति की विफलता का ज्वलंत उदाहरण है।

आज सारा राष्ट्र सरदार पटेल को उनकी 129वीं जयंती पर नमन कर रहा है तथा सांप्रदायिक लपटों, अलगाववादी ताकतों, महँगाई, भ्रष्टाचार, फिरकापरस्ति एवं राजनैतिक अवसरवादिता के बीच त्रिशंकु की तरह लटका राष्ट्र अपनी सुनी आँखों से भारत रत्न लौह पुरुष सरदार पटेल की बाट जोह रहा है। फिर कब आयेंगे सरदार?

संपर्क: गेट नं.89, मकदुमपुर,
दीघा, पटना-11

कृपया ध्यान दें

पत्रिकाएँ और पुस्तकें खरीदकर पढ़ने में जितना मजा आता है उतना मुफ्त में पाकर नहीं। इसलिए जब आप 'विचार दृष्टि' पत्रिका नमूना प्रति की माँग करें तो यह लिखना न भूलें कि आप इसकी सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं। पता नहीं क्यों पत्रिकाओं का सदस्य बन ना अपना कर्तव्य नहीं, लोग उसे मुफ्त में झपटना अपना अधिकार समझते हैं।'

दो वर्षों तक 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' और बाद में भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक द्वारा 'विचार दृष्टि' शीर्षक अनुमोदित एवं निबंधित होने पर पिछले पाँच साल से निरंतर इसकी प्रति आप प्रबुद्ध पाठाकों एवं साहित्य सेवियों के हाथों जा रही है और जिसके तेवर व कलेवर को भी आपने तहेदिल से स्वीकारा है। समझदारी का तकाजा है कि इसकी सदस्यता ग्रहण कर इसके नियमित प्रकाशन में आप अपेक्षित सहयोग करें। यह आप पाठकों की गरिमा के अनुरूप होगा और मैं भी आपकी आकांक्षाओं एवं विश्वासों के अनुरूप एक स्वस्थ पत्रिका आप तक पहुँचाने में समर्थ हो सकूँगा। पिछले दो-तीन महीनों में इसकी सदस्यता ग्रहण में अभिरूचि लेकर आपने मुझे प्रोत्साहित किया है यह आपकी सदाशयता एवं उदारता का द्योतक है। मैं तहेदिल आभारी हूँ आप सभी नए सदस्यों का। अगर आपकी सदस्यता समाप्त हो चुकी है तो एक सौ रुपए भेजकर उसका नवीनीकरण करा लें।

राज्य कार्यालय:
'बसेरा', पुरन्दरपुर
पटना-१ (बिहार)
फोन: २२२८५१९

संपादक, 'विचार दृष्टि'
'दृष्टि', यू. २०७, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-९२
फोन: ०११-२२५३०६५२
०११-२२०५१४१०

People's Co-Operative House Construction Society Ltd. Kankar Bagh, Patna-800020

समिति में निम्न आय वर्ग के कुल १७३० सदस्य हैं जिनमें १६०० सदस्यों को लोहियानगर, कंकड़बाग में स्थित विभिन्न सेक्टरों में भूखंड आवंटित हैं तथा शेष को जगनपुरा में भूखंड आवंटित हैं। समिति के द्वारा प्रत्येक सदस्य से अभियान चलाकर नौमिनी फार्म भरवाया जा रहा था, परन्तु बहुत से सदस्यों के द्वारा अभी भी नौमिनी फार्म नहीं भरा जा सका है। अतः वैसे सदस्यों से अनुरोध है कि अपना नौमिनी फार्म समिति कार्यालय से प्राप्त कर शीघ्र भरकर जमा कर दें।

समिति अपने सदस्यों के पुत्र-पुत्री, पौत्र-पौत्री, भाई-बहन एवं स्वयं के विवाहोत्सव तथा संबंधित प्रयोजनों के लिए आधे दर पर सामुदायिक भवन प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध करती है।

समिति के सदस्यों की सुविधा के लिए स्ट्रीट लाइट, सड़क मरम्मत, मैनहोल सफाई, पार्क निर्माण एवं अन्य विकास कार्यों को भी निर्धारित नियमानुसार सम्पन्न किया जाता है।

एल.पी.के.राजगृहार	सिद्धेश्वर प्रसाद	प्रो. एम.पी. सिन्हा
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	सचिव

बहुभाषाविद् राष्ट्रकविः सुब्रह्मण्य भारती

-✍ परमानन्द दोषी

भारत के जिन महान कवियों की काव्य रचनाओं में राष्ट्रीय भावनाओं की प्रखर अभिव्यक्ति हुई है, उनमें भारत की विविध भाषाओं में रचनारत रहे कई काव्य-कर्मियों का विशिष्ठ योगदान रहा है। तमिल वांगमय के सुब्रह्मण्य भारती वैसे ही कविर्मनीषी और वरेण्य विभूति रहे हैं। उनकी सारस्वत काव्य-साधना को रेखांकित करते हुए उनके जीवन और सदकार्यों का सजीव विवरण विद्वान की प्रखर लेखनी द्वारा प्रस्तुत अनुवर्ती पंक्तियों में। -संपादक

जिन दिनों पराधीनता के पाश में जकड़ा भारत विमुक्ति के लिए आर्तनाद कर रहा था, अज्ञानता, अशिक्षा, अनभिज्ञता, अंधविश्वास के घने कुहरे से आच्छादित भारतीय जन-समाज दिशाहीन हो अंधेरे में भटक-भरम रहा था और विद्रूपताओं-विडंबनाओं से परित्राण पाने की उसे कोई सूरत परिलक्षित नहीं हो रही थी, उन्हीं दिनों वैसी ही विषम और प्रतिकूल परिस्थितियों में भारतवासियों के सौभाग्य से देश के दक्षिणी क्षितिजपर एक ऐसे देदीप्यमान नक्षत्र का आविर्भाव हुआ, जिसने दिग्भ्रमित और शिथिल जन-समुदाय के लिए अभीसिप्त अभियान पथ पर अपनी साधना ज्योति का दीपक प्रज्जवलित करके इस तरह रख दिया, जिसके प्रकाश में संस्थान मार्ग शुभ्र ज्योति से अचानक अक्समात् आलोकित हो उठा।

अपने ज्योति-कलश से शीतल-स्निग्ध किरणें विकीर्ण करने वाले उस महान और अलौकिक शलाका पुरूष को सुब्रह्मण्य भारती के अभियान से अमिहित किया जाता रहा है। उस दिव्य पुरुष के हाथों में लुकाठी नहीं, प्रचुर प्रखर शक्तियोंवाली मशाल थी। पटवीजनों के भांति रूक-रूक कर, थम-थम कर क्षणिक और निस्तेज रोशनी नहीं, अंशुभाली -आफताब वाला प्रखर प्रकाश था उस श्लाका पुरुष की जीवन-ज्योति वाली दीपशिखा में।

11 दिसम्बर सन् 1982 ई. में उसका अविर्भाव हुआ था और चालिस वर्ष से भी कम की अत्यंत ही अल्प आयु में दिनांक 12 सितंबर सन् 1921 ई. में उसका अवसान हो

गया था। मगर अंधकार युगीन भारत में उसने नूर की जैसी वर्षा करके सूखी रिक्त धरती को पीयूष प्रवाह से सिंचित कर जाने जैसा युगान्तकारी कार्य संपन्न कर गया, उससे उसकी अल्पायु होने की बात उतनी नहीं अखरती।

उन दिनों राजनैतिक दृष्टि से ही भारत दुर्दशाग्रस्त नहीं था, उसकी सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक गौरव-गरिमा भी नष्ट-भ्रष्ट हो चुकी थी। उद्धेश्यहीनता और किंकर्त्तव्यविमूढ़ता के पंक में फंसे भारतवासियों की दशा दिशा ऐसी बदतर होगयी थी, जैसी उसके पूर्व में उसकी कमी नहीं हुई थी। सुब्रह्मण्य भारती ने अपनी काव्य-प्रतिभा के चमत्कार से वैसे निराशा, हताश, निष्क्रिय, निष्प्रभ, हतप्रभ, जन-समुदाय के सम्मुख जागरण का नूतन संदेश दिया। उन्हें अपनी अस्मिता का स्मरण कराया, अपनी अमित अन्तर्शक्ति का अहसास कराया और प्रेरणा संजीवनी की ऐसी बूंदे उनके होठों पर टपकायी कि अपनी तन्द्रा त्याग, निराशा के केंचुल उतार प्रत्येक भारतवासी स्वयं अपना और आपनी मातृभूमि के भाग्य संवारने के लिए कृत संकल्प और बद्धपरिकर हो उठा। गाढ़ी निन्द्रा में सोये हुए समाज को जगाकर उसे कर्त्तव्य-पथ की ओर अग्रसर करने की सफल सक्रिय भूमिका अदा की सुब्रह्मण्य भारती ने।

देश और उसे निवासियों में जागरण का स्पुरण उत्पन्न करने में कवियों-लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों का अप्रतिम योगदान रहा है। अपने पराधीन कालीन भारत में ऐसे कार्य सम्पन्न करनेवाले जितने सरस्वती पुत्रों, मसीजीवियों का अप्रतिम और विशिष्ट भूमिकाएँ रही हैं, उनमें अन्यतम रहा है सुबह्मण्य भारती का अवदान।

सुब्रह्मण्य भारती बहुआयमी व्यक्तित्व के स्वामी थे। साहित्य की विभिन्न विधाओं में उन्होंने रचाएं की हैं, मगर उनका कवि वाला स्वरूप सर्वाधिक मुखर रहा है। उन्होंने लघु और वृहद आकार की सभी प्रकार की कविताएं रची हैं, जिनमें प्रमुखता रही है उनकी देश-प्रेम संबंधी काव्य-रचनाओं की उन्होंने भक्तिमूलक रचनाएँ भी कम नहीं रची हैं। इनके अतिरिक्त विविध विषयक उनकी प्रकीर्णाक रचनाओं की

संख्या कम नहीं है। गुणवक्ता की दृष्टि से भी उनकी रचनाओं का बड़ा महत्व रहा है। परिमाण में प्रचुरता की वजह से भारती जी रचनाओं में कहीं भी सतहीपन और स्तरहीनता दृष्टिगोचर नहीं होती।

काव्य सृष्टि के अतिरिक्त उन्होंने कहानियों-लघुकथाओं का भी सृजन किया था। उनका "चन्द्रिकाइन बधाई" नाम का एक अधूरा उपन्यास भी उपलब्ध है। पंचतंत्र और हितोपदेश की तर्ज पर उन्होंने तमिल में भी सर्वोपयोगी बोध कथाओं का सृजन किया है। सुब्रह्मण्य भारती बहुभाषाविद् थे तमिल तो उनकी मातृभाषा थी और इस कारण उनकी सर्वाधिक तमिल में ही हैं, मगर उसके अतिरिक्त वह संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं के भी अच्छे जानकार थे। अन्य भाषाओं की अपनी सुविज्ञता के कारण उनके द्वारा मूल रूप से संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी में रची रचनाओं के अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं।

पत्रकारिता का सहारा लिए बिना विदेशियों के शासनी शिकंजो से न तो देश का परित्राण सम्भव था और न लोगों में नव-जागरण का शंखनाद करना संभव था, अतएव उन्होंने अपने जीवन की कर्म-संकुल घड़ियों में पत्रकारिता का दामन कभी नहीं छोड़ा। बारह वर्षों तक अनवरत रूप से पत्रकारिता का दामन कभी नहीं छोड़ा। बारह वर्षों तक अनवरत रूप से पत्रकारिता प्रतिभा से पुनीत साहित्यिक कार्यों में सक्रिय रहे थे। उनकी पत्रकारिता प्रतिभा से दीपित "स्वदेश मित्रम्", "कर्मयोगी", "इण्डिया" जैसे पत्रों में प्रकाशित रचनाएं विशेष रूप से स्वयं भारती द्वारा व्यक्त उद्‌गार लोगों में सम्मोहन उत्पन्न कर देते थे।

भारती द्वारा तमिल भाषा में विरचित पुस्तकाकार कृतियों की लम्बी सूची में स्वदेश गीतांजल, जन्मभूमि, वंनन पतू, पंचाली सप्तम, बूहल पत्तू आदि उल्लेखनीय है। आंग्ल भाषा में प्रकाशित उनकी कृतियाँ हैं "अग्नी एंड अदर पोयम्स ऐंड ट्रान्सलेशन" तथा " एसेज एंड अदर प्रोज प्रेशमेंटस"। इनके अतिरिक्त उनकी बहुत सारी रचनाएँ का हिंदी में अनुवाद हो चुका है। अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं में भी उनकी ढेर सारी कृतियाँ अनूदित होकर लोकप्रिय हुई है।

सुब्रह्मण्य भारती के पूर्व के तमिल साहित्य में एक ठहराव था गया था। विषय, भाषा, शैली की दृष्टि से उसमें जड़ता आ गई थी। उस गत्यावरोध को दूर करने में भी भारती जी की उल्लेखनीय भूमिका रही है। तमिल भाषा और साहित्य की सभी दिशाओं में अपेक्षित सुधार-संशोधन करने का उन्होंने बीड़ा उठाया था और अपने प्रयत्नों के द्वारा उसे आधुनिक स्वरूप प्रदान कर तमिल साहित्य के युग-निर्माता के रूप में भी उन्होंने अपनी पहचान बनाई।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी सुब्रह्मण्य भारती की सक्रिय भूमिका रही है। उन्हें महात्मा गाँधी, सिस्टर निवेदिता, लाला लाजपत राय, पं. मदन मोहन मालवीय, स्वामी गणेश दत्त, योगीराज अरविंद जैसे तत्कालीन स्वतंत्रता-संग्रामियों से भी वह सक्रिय रूप से जूड़े हुए थे। उनके निकट सहयोगियों में प्रमुख थे। डॉ. निहाल चन्द्र तथा राम प्रसाद। स्वतंत्रता-संग्राम में उनकी सक्रियता के कारण जला वतन भी होना पड़ा था और अपनी भरी जवानी में उन्हें पाण्डिचेरी जाकर अरविंद आश्रम में शरण लेनी पड़ी थी। स्वदेश वापस आने पर उन्हें कारावास की भी सजा भुगतनी पड़ी थी। सुब्रह्मण्य भारती के पुज्य पिता का नाम चिन्नास्वामी अय्यर और माता का नाम लक्ष्मी अम्माल था। उनके पिता एट्टयपुरम् के महाराजा के दरबार में नियोजित थे। छोटी उम्र में ही सुब्रह्मण्य भारती कविताएं रचने लग गए थे। अपने पुत्र के काव्य चमत्कार से अपने आश्रयदाता एट्टयपुरम के राजा को परिचित कराने के उद्देश्य से उनके पिता भारती को राज्य दरबार में ले जाया करते थे। सुब्रह्मण्य के काव्य वैभव से महाराज बहुत प्रभावित हुए थे और उन्होंने प्रसन्न होकर अपनी ओर से "भारती" उपनाम की घोषणा की थी।

इस कारण सुब्रह्मण्य अय्यर से वह सुब्रह्मण्य भारती बन गए थे। बारह वर्ष की छोटी उम्र में चेलम्मा नाम की महिला से वैवाहिक बंधन में वह बंधा दिए गए थे। अपने पिता की अकाल मृत्यु से एक बड़ा व्यवधान उपस्थिति हो गया भारती के सम्मुख। उनकी अपनी माँ की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी। पिता ने दूसरी शादी कर ली थी, मगर अपनी विमाता से भी उन्हें सद्व्यवहार मिलता रहा था। अपने आगे की पढ़ाई के लिए आप बनारस स्थित अपनी अपनी फूफी कुप्पाम्मल के पास चले गए। वहीं अपने हिंदी और संस्कृत भाषाओं की गहन अध्ययन किया। अपने बनारस-प्रवास काल के दौरान अपने इलाहाबाद युनिवर्सिटी से मैट्रिक की परीक्षा में उत्तीर्णता हासिल की थी।

काशी में रहते हुए भारती जी को न केवल साधुओं-संयासियों का संपर्क-लाभ हासिल हो सका, बल्कि साहित्यकारों कवियों का भी नैकट्य उन्हें प्राप्त हुआ है। अनेक क्रांतिकारियों, स्वतंत्रता-संग्रामियों से उनका साबका पड़ा, जिन सबके मिले-जुले प्रभाव से उनके व्यक्तित्व के विकास को नई दिशा उपलब्ध हुई। प्रखर बुद्धि की जन्मजात विलक्षणता तो उनमें थी ही, बड़ों की संगति की उपलब्धता से उनकी चेतना शिखरोन्मुख हो उठी।

सुब्रह्मण्य भारती जब अपने गाँव होते, तो तिरूवल्लीवेरणी के मंदिर में प्रतिदिन देव-दर्शन को जाया करते थे और उसके द्वार पर तैनात हाथी को प्रतिदिन नियमित रूप से गन्ना और नारियल खिलाया करते थे। ऐसे ही एक अवसर पर उस हाथी ने उन्मत हो भारती जी पर प्रहार कर दिया जिससे उनकी अकाल मृत्यु हो गई।

सुब्रह्ण्य भारती राष्ट्रीय संग्राम में अपनी साझेदारी और राष्ट्रीय भावनाओं से भरी अपनी रचनाओं के लिए राष्ट्रकवि माने जाते हैं और भारतीय साहित्य में उनका वही स्थान है जो हिंदी में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र मैथिली शरण गुप्त, माखनलाल चर्तुवदी, राष्ट्रकवि दिनकर, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' बंकिमचन्द्र, काजी नजरूल इस्लाम जैसे साहित्यिक महारथियों और काव्य-मनीषियों को प्रप्ति है।

संपर्क: विशेष कार्य पदाधिकारी,
बिहार राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक,
बुद्ध मार्ग, पटना-800001.

NALANDA SCAN CENTRE

(Unit of Nalanda Hospital & Scan Research Centre Pvt. Ltd.)

Facilities Available :

- **M.R.I.**
- **C. T. Scan.**

Coloured Doppler Whole Body 3D-4D.

Real Time Ultra Sound. X-Ray

B.M.D. (Bone Densitometer)

Doctor's Colony, Kankarbagh

Patna-20

नयी सरकार की नयी भाषा नीति

डॉ. पी. के. बालासुब्रह्मण्यन

दिनांक 14 ज्येष्ठ शुक्ल 2061 के दक्षिण समाचार का मुखपृष्ठ पढ़कर परमानंद हुआ। असल में भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। अगर प्रांतीय या राज्य की राजभाषा तक यह उत्साह रहे तो अच्छा है। आंध्र के मुख्यमंत्री की तरह हर राज्य में शपथग्रहण समारोह संबंधित क्षेत्रीयभाषा या मातृभाषा में होना ही चाहिए। इतना क्यों, भारतीय संसद में यह शपथग्रहण अपनी-अपनी मातृभाषा में संसद ले तो वह भी स्वीकार्य है। राज्य सरकार के स्तर पर सभी निदेश, आदेश और निर्णय संबंधित प्रांतीय भाषा में निकलें तो वह स्वागतार्ह है। परंतु संघ की राजभाषा का स्थान अगर प्रांतीय भाषाएँ ले याने भारत के संविधान में उल्लिखित सभी भाषाएँ संघ की राजभाषाएँ बनें तो क्या फल होगा? भगवान ही इस देश को तब बचा सकेंगे।

हाल ही में संपन्न चुनाव के फलस्वरूप कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में जो सरकार संगठित है उसके सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम में दो बातें भाषा नीति के रूप में स्वीकृत है। उसकी घोषणा भारत के राष्ट्रपति ने अपने अभिभाषण में की है। उनमें एक है तमिल को क्लासिकल याने बरेण्य भाषा घोषित करना और दूसरी है तमिल सम्मिलित संविधान की अष्टम सूची में उल्लिखित सभी भाषाओं को संघ के शासन की भाषा बनाने का प्रयत्न करना। चूँकि तमिलनाडु के द्रविड़ मुन्नेट्रक्कषगं (द्र.मु.क) को संतुष्ट करना कांग्रेस के लिए अनिवार्य हो गया है। इसलिए उसकी माँग की पूर्ति करने के लिए उपर्युक्त दोनों घोषणाएँ हुईं। उसका जो फल होगा उस पर विचार करना आवश्यक है।

निस्संदेह यह निर्विवाद सत्य है कि तमिल संस्कृत के समान प्राचीन व समृद्ध भाषा है। उसको क्लासिकल भाषा घोषित करना उपयुक्त ही है। क्योंकि संस्कृत, लैटिन, हीब्रू, चीनी आदि भाषाओं में जो विशेषताएँ पायी जाती हैं वे तमिल में भी पायी जाती हैं। जस्टिस वेणुगोपाल के अनुसार 'तमिल की विशेषताएँ कलासिकल भाषा की मान्यता प्राप्त करने की योग्यता प्रदान करती है। वे हैं प्राचीनता, विशिष्ट परंपरा, सबके स्वीकार्य गुण, निष्पक्षता, कई भाषाओं की स्रोत या जनक भाषा होने का गुण, अन्यभाषाओं के प्रभाव से बचकर स्वतंत्र अभिव्यक्तिशीलता, साहित्यिक समृद्धि, श्रेष्ठ चिंतनधारा, कलात्मक व साहित्यक अनोखापन और भाषा सिद्धांत। संपूर्ण संसार तमिल की उपरोक्त विशेषताओं से भलीभांति परिचित है। संस्कृत मृतभाषा कही जाती है। प्राय: लोगों का विचार है कि संस्कृत कभी भी कहीं भी बोलचाल में नहीं रही।' इसकी असलियत का पता भाषा वैज्ञानिक ही लगा सकते हैं।

तमिल घोषित वरेण्य भाषाओं में अपना एक विशेष स्थान रखती है। संसार की 2796 भाषाएँ हैं। उनमें साहित्यिक व व्याकरणिक समृद्धि से संपन्न 600 भाषाएँ हैं। दो हजार से अधिक ऐतिहासिक विशिष्टता संपन्न भाषाएँ 6 हैं। वे हैं तमिल, चीनी, संस्कृत, लत्तीन, हिब्रू, व ग्रीक। इनमें वरेण्य भाषा घोषित ग्रीक या यवन भाषा, संबंधित यवन देश के स्वतंत्र होने के बाद नवजीवन प्राप्त करती आयी है।

अब संस्कृत बोलचाल की भाषा नहीं रही। चीनी भाषा चित्र लिपि में लिखित भाषा है। लत्तीन व हिब्रू भी आजकल बोली नहीं जाती। एकमात्र तमिलभाषा ही बोलचाल में है। यही नहीं जहाँ कहीं भी तमिलभाषी गये वहाँ वे अपनी तमिलभाषा का विकास कर चुके हैं। फलत: 40 से अधिक राष्ट्रों में तमिलभाषा का विकास हुआ है। अधिकांश राष्ट्रों में वह शासन की भाषा भी बनी है। उदाहरण के रूप में मलेशिया, सिंगापुर, श्रीलंका आदि देशों में तमिल एक राजभाषा के रूप में व्यवहृत है।

तमिल अगर वरेण्य भाषा भारत सरकार से आदेशित हो तो निम्नांकित लाभ तमिल को मिलेंगे। भारतीय विश्वविद्यालयों में अलग तमिल विभाग खुलेंगे। संबंधित अधिकार क्षेत्रों में तमिल भाषा की शिक्षा व अनुसंधान के प्रावधान होंगे। भारतीय विश्वविद्यालय आयेग, तमिल को वरेण्य भाषा मानकर स्वीकृति देगा। जैसे भारत सरकार ने संस्कृत वर्ष मनाया था वैसे तमिल वर्ष भी मनाया जाएगा। जो व्यय भारत सरकार संस्कृत वर्ष मनाने के लिए कर चूंकि वैसे तमिल वर्ष मनाने के लिए भी व्यय करेगी। विश्व भर दूतावासों और विदेशों में कार्यरत तमिल संस्थाओं के द्वारा तमिल वर्ष मनाया जाएगा और तत्संबंधी व्यय का भार भारत सरकार उठाएगी। फलत: तमिल भाषा की श्रेष्ठता, तमिल साहित्य की संपन्नता आदि का प्रचार विश्वभर होगा। तमिल जाति की महिमा बढ़ेगी। उसके द्वारा तमिल व भारत का गौरव बढ़ेगा। विश्वप्रसिद्ध ब्रिटानिया एनसाइक्लोपीडिया जैसे तमिल विश्वकोशों का निर्माण होगा। तमिल-अंग्रेजी कोशों के निर्माण के लिए भारत सरकार पर विशेष अनुदान देने का जोर डाला जा सकता है। संपूर्ण तमिल साहित्य का अनुवाद विश्व के विभिन्न भाषाओं में किया जा सकता है। अब तक संस्कृत को प्रधानता दी गयी है। इसलिए पत्थर की खुदाई का अनुसंधान करके यह सिद्ध किया गया है कि तमिल के अक्षर ब्राह्मी लिपि से निकले हैं। अगर तमिल को प्रधानता दी जाए तो तमिल अक्षरों की मौलिक उत्पत्ति के नए सिद्धांत निकल सकते हैं। भारत सरकार की आर्थिक सहायता पाकर तमिल का वैज्ञानिक रूप उभर सकता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न सांस्कृतिक विभागों में तमिल का नया आयाम विकसित किया जा सकता है। संक्षेप में कहें तो हिंदी व संस्कृत के विकास के लिए भारत सरकार जितने प्रयत्न व आर्थिक सहायता करती है वैसे तमिल भाषा के विकास में भारत सरकार की सहायता मिलेगी।

यहाँ उल्लेखनीय है कि प्रत्येक प्रधान भारतीय भाषाओं के विकास के लिए भारत सरकार एक-एक करोड़ रुपये देती आयी है। द्र.मु.क. व अ.द्र.मु.क. के दल अपने-अपने शासन काल में उक्त करोड़ रुपये का उपयोग क्या सचमुच तमिल के विकास के लिए कर चुके हैं? अनुवाद के क्षेत्र में तमिल से अंग्रजी में अनुवाद करने के मात्र खर्च हुआ हैं। हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने की ओर तमिलनाडु सरकार ने ध्यान ही नहीं दिया है। इस दोष का भागीदार द्र.मु.क. सरकार भी थी।

शेष पृष्ठ 50 पर..........

हैदराबाद की चिट्ठी

प्रस्तुति- चंद्रमौलेश्वर प्रसाद

चुनाव: पिछले दिनों हुए राज्य सभा के चुनाव में आंध्र प्रदेश हैदराबाद के एक वरिष्ठ समाज सेवी तथा अपनी दो दैनिक पत्रोंवार्त्ता(तेलुगु) तथा स्वतंत्र वार्ता (हिंदी)के माध्यम से साहित्य करनेवाले गिरीश संघी राज्य सभा के सदस्य चुने गए। मंच की आँध्र प्रदेश इकाई की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई।

त्यौहार: आंध्र प्रदेश में हैदराबाद का एक विशेष त्यौहार होता है-बोनालु। इस त्यौहार का नाम तेलुगु शब्द 'भोजनालु' (भोजन) से उपजा है। इस अवसर पर गृहणियाँ अपने-अपने घर से भोजन बनाकर, उसे मटकों में भरकर माँ काली को अर्पित करती हैं। इस त्यौहार में शहर के नामी-गिरामी लोग भी भाग लेते हैं और अपनी आस्थानुसार पूजा-अर्चना करते हैं। इस वर्ष विशेष रूप से हैदराबाद की यातायात पुलिस आयुक्त श्रीमति तेजदीप कौर मेनन (प्ञ्चौण)ने भाग लिया।

कला: हैदराबाद में रंगमंच एवं कला की ओर दर्शकों को आकर्षित करने के लिए राज्य के पर्यटन एवं सांस्कृतिक विभाग सक्रिय हैं। एक योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष 'नंदी नाटकोत्सव' मनाया जाता है जिसमें एकांकियां, संगीत नाटक, धार्मिक एवं सामाजिक नाटकों का मंचन होता है। इस वर्ष, नौवें समारोह में भव्य एवं कलात्मक नाटकोत्सव में 10 संगीत नाटक, 10 सामाजिक व धार्मिक नाटक तथा 12 एकांकियों का मंचन किया गया जिसे दर्शकों ने काफी सराहा।

पर्यटन: पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए, आंध्र प्रदेश सरकार विभिन्न देशों के सांस्कृतिक संस्थाओं को आमंत्रित करती है। इसी संदर्भ में थाईलैण्ड से पधारी मंडली ने नाट्य-नृत्य प्रस्तुत किया। रामायण पर आधारित इस नाटक का नाम था 'थाई रामाकियन' यद्यपि भारत में यह कथा हिंदू धर्म से जुड़ी हुई हैं परतु थाईलैण्ड में रामायण (रामाकियन) को किसी भी धर्म से नहीं जोड़ा जाता और इसे वे अपनी संस्कृति का एक अंग समझते हैं। 'रामाकियन' का सुंदर मंचन दर्शको को आत्मविभोर कर दिया।

हैदराबाद को यह विशेष गौरव हासिल है कि एक व्यक्ति द्वारा संग्रहित कलावस्तुओं का विश्व का सबसे बड़ा संग्रहालय है जिसे 'सालारजंग म्यूजियम' कहते हैं। इस संग्रहालय में समय-समय पर कला और साहित्य से जुड़े कार्यक्रम होते रहते हैं। संग्रहालय में सिखवाद पर एक विशेष प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है जिसमें सिख गुरूओं के दुर्लभ चित्र प्रदर्शित किए गए। इस कार्यक्रम को सभी धर्मों के लोगों ने बड़े चाव से देखा और सराहा।

इस वर्ष एथेन्स ओलम्पिक के साथ आयोजित होनेवाले आर्टियाड ओलम्पिक ऑफ विजुअल आर्टस् में विश्व के 172 मूर्तियों का प्रदर्शन किया जाएगा। इस प्रदर्शनी के लिए भारत की तीन कलाकृतियों को चयनित किया गया है जिनमें आंध्र प्रदेश के प्रसिद्ध मूर्तिकार एस.डी. हरी प्रसादाचारी की पत्थर की मूर्ति 'ही' है।

साहित्य: इस वर्ष के नोबल साहित्य पुरस्कार के लिए हैदराबाद के विख्यात कवि गुंटूर शेषेन्द्र शर्मा को नामित किया गया है। गुंटूर शेषेन्द्र शर्मा संस्कृत, तेलुगु और हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि हैं जिनकी कृति 'मेरी धरती मेरे लोग' को वैश्विक साहित्य में विशेष स्थान मिला है।

हैदराबाद से निकलनेवाल दैनिक पत्रिका 'डेली हिंदी मिलाप' हर वर्ष अपने संस्थापक स्व. युद्धवीर के नाम पर एक विशिष्ट व्यक्ति को 'युद्धवीर फाउण्डेशन अवार्ड' प्रदान करती है। इस वर्ष का यह पुरस्कार स्थानीय कवि-चित्रकार नरेन्द्र राय श्रीवास्तव को दिया गया है।

हैदराबाद की जैन संस्था आचार्य आनंद ऋषि साहित्य निधि हर वर्ष राष्ट्र-संत आचार्य जी की जयंती पर किसी ऐसे हिंदीतर भावी साहित्यकार को पुरस्कृत करती है जिन्होंने हिंदी साहित्य में अपना योगदान दिया है। इस वर्ष का यह आचार्य आनंद ऋषि पुरस्कार केरलवासी डॉ. पी.वी. विजयन को दिया गया। पुरस्कार हेतु 25,000 रुपये की धनराशि के साथ स्मृति चिह्न तथा आचार्य आनंदऋषि का साहित्य समग्र देकर डॉ. विजयन को सम्मानित किया गया।

मारवाड़ी दक्षता समिति, आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन तथा ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया (हैदराबाद चैप्टर) के संयुक्त तत्वावधान में 'साहित्य गरिमा पुरस्कार' काव्य विधा के लिए डॉ. प्रतिभा गर्ग को प्रदान किया गया। इस पुरस्कार के अंतर्गत 11 हजार रुपये नगद, स्मृति चिह्न व शाल कवयित्री को भेंट किया गया।

संपर्क: 1-8-28, यशवंत भवन, अलवाल,
सिकंद्राबाद-500 010 (आं. प्र.)

चेन्नई की चिट्ठी

विचार ब्यूरो, चेन्नई

वीरप्पन मारा गया

कुख्यात चंदन तस्कर वीरप्पन और उसके तीन साथी विजय कुमार के नेतृत्व में तामिलनाडु पुलिस की विशेष टास्क फोर्स टीम के हाथों धर्मपुरी जिले के पाप्पर पट्टी गाँव में मारे गए। वीरप्पन ने करीब 150 लोगों और 2000 हाथियों की हत्याएँ की थी। इसके अलावा 30 जुलाई 2000 को प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता राजकुमार तथा 25 अगस्त 2002 को कर्नाटक के पूर्व मंत्री एच० नागप्पा का अपहरण कर लिया था।

लंबा, छरहरा और लंबी मूछोंवाला यह शख्स सबसे क्रूर और जोखिम मोल लेनेवाला अपराध माना जाता था। वीरप्पन के अपराध की दुनिया में कदम हाथी दाँत बेचने से रखा। हाथी दाँत से वह चंदन की तस्करी के धँधे में आया और फिर अपहरण और हत्याएँ भी करने लगा। सन 1990 में तीन राज्यों ने मिलकर वीरप्पन के खिलाफ एक अभियान चलाया जिसमें 15,000 सुरक्षा कर्मियों को लगाया गया था। उसके सिर पर करोड़ों रुपए का इनाम था। कई विशेष अभियानों के बावजूद 57 वर्षो की वीरप्पन करीब दो दशक से पुलिस के लिए सरदर्द बना हुआ था। सन् 1997 में वीरप्पन ने अपनी बढ़ती उम्र और बीमारी के मद्देनजर समर्पण की सशर्त पेशकश की थी, जिसमें उसने अपने लिए मात्र दो साल की कैद और 50 लाख रुपए की माँग रखी थी।

वीरप्पन के मारे जाने के बाद यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या सत्य मंगलम के जंगल तस्कर गिरोह से मुक्त हो पाएगा? कारण कि अपराध और राजनीति के गठजोड़ को जबतक नेस्त नाबूद नहीं किया जाएगा तबतक देश में वीरप्पन पैदा होते रहेंगे।

राष्ट्रीय विचार मंच की तमिलनाडु इकाई की द्वैमासिक बैठक

विगत 1 सितंबर 2004 को द०हि० प्रचार सभा, चेन्नई के प्रांगण में आयोजित राष्ट्रीय विचार मंच की तमिलनाडु इकाई की द्वैमासिक बैठक में मंच के भावी कार्यक्रमों पर विचार-विमर्श किया गया। मंच के उपाध्यक्ष डॉ० पी०के० बाला सुब्रह्मण्यन की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में मंच के अध्यक्ष डॉ० मधु धवन, रमेश गुप्त नीरद, प्रहलाद, श्रीमाली, मंजु भंडारी, श्री कण्णन, श्रीमती सुनीता जाजोदिया, श्रीमती चंद्रकांता, श्रीमती आर० पर्वती आदि की उपस्थिति में नगर के छात्र-छात्राओं सहित कई सुधी कवियों ने अपनी रचनाएँ सुनाई। मंच की महासचिव डॉ० निर्मला एस० मौर्य ने कार्यक्रम का संचालन तथा श्री पी०आर० वासुदेवन ने आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुति श्रीमती जाजोदिया, चेन्नई से

Solutions Point

SOLUTIONS IN:

Computer Assembling
Maintenance
Laptop Repair
AMC
Networking
Web & Graphics Designing
Software Development

Contact : *Mr. Sudhir Ranjan*

Head Office : U-207, Shakarpur, Vikas Marg, Delhi-92

Tel/Fax : 011-22059410, 22530652

Website: www.solutionspoint.org

मो. सुलेमान की पुस्तक का लोकार्पण

'बापू' से पाठ ले काँग्रेस परिष्कार करे

विचार ब्यूरो, दिल्ली

वर्ष 2004 में 14वीं लोकसभा चुनाव के पश्चात् जब से केंद्र में काँग्रेस नीत संप्रग की सरकार बनी है और मनमोहन सिंह उसके मुखिया बने हैं काँग्रेस के अधिकतर लोग सोनिया गाँधी के त्याग की बखान करने में लगे हैं और उससे थोड़ा बहुत जो कुछ समय बचता है उसका इस्तेमाल राहुल गाँधी के बखान करने में कर रहे हैं। कभी-कभी तो ऐसा भी देखा-सुना गया है कि सोनिया गाँधी की चर्चा करते-करते पुरुषोत्तम राम के अयोध्या त्याग तक चले जाते हैं। दरअसल चाटूकारिता और फलदार नेता की शरण में निवास करना काँग्रेस की संस्कृति रही है। हालांकि काँग्रेस की इस संस्कृति को प्राय: सभी राजनीतिक दलों ने अपना रखा है और इसी की वजह से लगभग सभी पार्टियों पर एकाधिकार किसी एक या दो नेताओं का हो गया है जिनके तले न तो कोई दूसरा नेता पनप सकता है और न किसी राजनीतिक कार्यकर्ता को पार्टी में प्रोत्साहन मिल पाता है। चाहे पार्टी में विधानसभा या लोकसभा के लिए टिकट पाने का सवाल हो या विधान परिषद अथवा राज्य सभा में जाने का, पार्टी के शीर्ष पर विराजमान या पार्टी पर अपनी पकड़ बनाए रखनेवाले नेता के इर्द-गिर्द चक्कर काटनेवाले नेताओं को ही प्रश्रय मिलता है। यहाँ तक कि जो नेता चुनाव में एक बार पराजित हो जाते हैं तो राज्य सभा अथवा विधान परिषद के रिक्त सीट के लिए भी उन्हीं को मनोनीत किया जाता है। आखिर सक्रिय कार्यकर्ता जाए तो जाए कहाँ?

ऐसा लगता है कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के नेताओं से काँग्रेस नीत संयुक्त प्रतिशील गठबंधन के नेताओं ने सीख नहीं ली है। काँग्रेस को यह जानना चाहिए कि 2004 के चुनाव में सत्ता परिवर्तन काँग्रेस की वापसी का नहीं, बल्कि राजग नेताओं के कारनामों तथा आम आदमी की परवाह न किए जाने की वजह से कांग्रेस को नहीं चाहकर भी उसे एक मौका मिल गया है। ऐसा नहीं है कि पिछले पाँच-सात वर्षों में काँग्रेस ने आमजन के सवालों को लेकर जनांदोलन किया हो या किसान-मजदूरों अथवा ग्रामीण समाज में बदलाव के लिए संघर्ष के रास्ते पर चली हो। काँग्रेस पार्टी यदि अपने कुलक्षणों से मुक्त न हुई तो दुर्दिन अभी दूर नहीं गए हैं। दूसरी ओर राजग की पार्टियाँ भी अपनी पराजय से पाठ नहीं ले पा रही हैं।

अब समय आ गया है जब काँग्रेस की नहीं प्राय: सभी पार्टियों को महात्मा गाँधी के बताए रास्ते पर चलना होगा और आम आदमी की चिंता करनी होगी। इतिहास ने काँग्रेस को जहाँ एक बार पुन: परिष्कार का अवसर दिया है वहीं भाजपा सहित राजग के अन्य दलों को भी यह मौका मिला है कि अपनी पिछली गलतियों से सीख लेकर गरीबों एवं ग्रामीण समाज का पक्षधर अपने को सिद्ध करें। कांग्रेस को केंद्र में सिर्फ प्रशासन चलाने के लिए जनादेश नहीं मिला है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ और धर्मनिरपेक्ष समाज तथा संस्कृति की बेहतरी के लिए भी मिला है। इसके लिए उसे लगातार सामाजिक-सांस्कृतिक अभियान चलाने के साथ-साथ देश के लोगों में राष्ट्रीयता की भावना भरने का प्रयास करना चाहिए, यही समय का तकाजा है।

अपांग अरुणाचल के मुख्य मंत्री हुए

चुनाव से कुछ ही पहले अंतिम घडी में कांग्रेस में शामिल गेगांग अपांग को अरुणाचल की राजधानी ईटानगर में मुख्य मंत्री की शपथ दिलाई गई।

महाराष्ट्र मे राकांपा-कांग्रेस ने बाजी मारी

महाराष्ट्र विधान सभा के 288 सीटों के लिए हुए चुनाव में राकांपा-कांग्रेस ने 141 सीटें जीतकर शिवसेना-भाजपा को धूल चटाई है। इसमें राकांपा को 71 और कांग्रेस को 69 सीटें मिली हैं। शिवसेना-भाजपा की झोली में सिर्फ 117 सीटें गई हैं जिनमें शिवसेना को 62 और भाजपा को 54 सीटें मिली हैं।

प0 बंगाल में सत्तारूढ़ वाम मोर्चा ने तीनों सीटें बटोरी

प० बंगाल में तीन सीटों के लिए हुए उपचुनाव में सत्तारूढ़ वाम मोर्चा ने शत प्रतिशत सफलता हासिल की।

दिल्ली की दोनों सीटों पर कांग्रेस काबिज

P-50-1

दिल्ली विधानसभा के रजौरी गार्डन क्षेत्र से रमेश लांबा तथा बलजीत नगर से राजेश लिलौठिया ने जीत हासिल कर कांग्रेस ने भाजपा को शिकस्त दी है। इस जीत की खुशी में जहाँ दस जनपथ में जमकर अतिशबाजी हुई वहीं भाजपा मुख्यालय में सन्नाटा देखने को मिला।

म्यांमार में लोकतंत्र की उम्मीद धूमिल

म्यांमार के प्रधानमंत्री खिन न्यूट को वर्खास्त कर लेफ्टिनेंट जनरल सियो विन को नया प्रधान मंत्री नियुक्त किए जाने के साथ ही म्यांमार में लोकतंत्र स्थापित किए जाने की उम्मीदों पर पानी फिर गया है। उल्लेख्य है कि म्यांमार में जनतंत्र बहाली के लिए संघर्ष कर रही प्रमुख नेता एवं शांति के लिए नोबल पुरस्कार विजेता आंग सांग सू तथा उनके सहयोगी तिन ऊ इन दिनों म्यांमार में पिछले वर्ष मई से नजरबंद हैं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने इस पर चिंता जाहिर की है।

आडवाणी भाजपा के नए अध्यक्ष

P-50-2

हाल की हुए महाराष्ट्र विधान सभा के चुनाव तथा कई प्रदेशों के उपचुनाव में हार के चलते वेंकैया नायडू को भाजपा के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देना पड़ा तथा राजनीतिक संकट के दौर से गुजर रही भाजपा की कमान एक बार फिर पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने संभाल ली है। उल्लेख्य है कि पिछले डेढ़ दशक में जब-जब पार्टी पर संकट आया है - तब पार्टी को आडवाणी की ही सुध आई है। आडवाणी ने पांचवीं बार भाजपा की कमान संभाली है।

उ0प्र0 के उपचुनावों में सपा का परचम लहराया

उ०प्र० के उपचुनाव में 11 विधानसभा सीटों में से 7 पर जीत हासिल कर सपा ने अपना परचम लहराया है। गठबंधन के रालोद को मात्र एक सीट से संतोष करना पड़ा। बसपा को दो और भाजपा को केवल एक सीट मिली। इस उपचुनाव में कांग्रेस को एक भी स्थान पर सफलता नहीं मिली। अब उ०प्र० विधान सभा में सपा के कुल 194 और रालोद के 14 विधायक हो गए।

P-50-3

........पृष्ठ ४६ का शेष भाग

दूसरा मुद्दा विचारणीय है। भारतीय संविधान की अष्टम सूची की सब भाषाओं को केंद्र सरकार की राजभाषाएँ बनाना कैसे संभव है? इसके पक्ष में यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि ज़ेक देश में चार भाषाएँ और स्विट्ज़ैरलैंड में तीन भाषाएँ राजभाषाएँ रह सकती हैं तो भारत में क्यों नहीं? सूचना पौद्योगिकी के वर्तमान युग में समकालिक अनुवाद संभव है तो 18 भाषाओं को राजभाषाएँ घोषित करके अनावश्यक कागजी नावें चला सकती है? राष्ट्रपति ने सूचना दी है कि उक्त विषय पर निर्णय के लिए एक विशेष समिति गठित की जाएगी।

अष्टम सूची की भाषाएँ राजभाषा घोषित हो जाएं तो हिन्दी भाषी प्रदेश ही नहीं अन्य भाषाभाषी प्रदेश भी घाटे में पड़ेंगे। अंग्रेजी को सहसंपर्क भाषा बनाने के कारण हिंदी राज्य की राजभाषा बन नहीं पायी, अन्य प्रदेशों में प्रादेशिक भाषा। तमिलनाडु में तो विचित्र स्थिति है। प्रारंभिक पाठशालाओं में भी, खासकर गैरसरकारी स्कूलों में तमिल की इतनी अवहेलना हो रही है कि तमिल का क, ख, ग, सीखे बिना, संपूर्णतः अंग्रेजी में मात्र शिक्षा पाना संभव हुआ है।

पं. नेहरू के कारण हिंदी के राजभाषा बनने पर जो भयंकर आघात पहुँचा है वह अष्टम सूची की भाषाओं को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव, जले पर नमक छिड़कने के समान होगा। राजनीति के नाम पर उक्त प्रस्ताव की स्वीकृति विदेशी मूल की अंग्रेजी का वर्चस्व ही बढ़ाएगा। भविष्य में कभी भारतीय भाषाएँ अपना स्थान नहीं ले पाएँगी। हिंदी का विरोध करके तमिलनाडु ने जो भयंकर स्थिति पैदा कर दी है उसका शिकार वह स्वयं बन चुका है। अब भारत सरकार भी घाटे में पड़ेगी। इसे मनमोहन सरकार को बुद्धिजीवी अवश्य समझावें।

संपर्क:- (आधार- तमिष्पणि)
6, 68वीं स्ट्रीट, के. के.
नगर, चेन्नई-600 078.

समाज व राष्ट्र को अनुशासन की आज अधिक आवश्यकता है

- आचार्यश्री महाप्रज्ञ

सिरियरी में 'अनुशासन की चेतना का जागरण' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

विचार ब्यूरो, जयपुर

जहाँ विनम्रता और सहिष्णुता है वहीं अनुशासन है। अनुशासन प्रवृति नहीं परिणाम है। आज पूरे राष्ट्र व समाज को अनुशासन की आवश्यकता है। जब तक अवचिंतन मन को प्रशिक्षण से प्रभावित नहीं किया जाएगा तब तक परिवर्तन संभव नहीं। हमारी बात अत:करण व अवचेतन मन तक पहुँचनी चाहिए। ये उद्‌गार थे अहिंसा यात्रा के प्रवर्तक आचार्यश्री महाप्रज्ञ के,जिसे उन्होंने पिछले 30 जुलाई को राजस्थान के पाली जिलांतर्गत सिरियरी गाँव आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान की ओर से 'अनुशासन की चेतना का जागरण विषय पर आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम एवं द्वितीय सत्र में व्यक्त किए।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि आचार्य भिक्षु अनुशासन के जीवंत प्रतिमूर्ति थे जो आचार्य रघुनाथ से दीक्षित हुए थे। साध्वी कनक प्रभा ने कहा कि आज के युग में परिवार के टूटने एवं सामाजिक संगठनों में बिखराव का कारण है- अनुशासन की कमी।

दिल्ली, फतेहपुरी मस्जिद के नायब शाही इमाम मौलवी मोहम्मद मोअज्जम अहमद ने कहा कि आज हर वह शख्स भी बढ़-चढ़कर अनुशासन की बात कर रहा है जिनके हाथ खून से सने हुए हैं। इस संगोष्ठी में गुजरात विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष एवं गुजरात वित्त आयोग के अध्यक्ष धीरू भाई शाह ने कहा कि जब विचार प्रतिबिंबित होता है तब अनुशासन का बिंब उसमें प्रतिबिंबित होता है। यों तो आज हर क्षेत्र में अनुशासन की जरूरत है किंतु सबसे अधिक अनुशासन की जरूरत राजनीति में है, क्योंकि सबसे अधिक अनुशासनहीनता इसी क्षेत्र में व्याप्त है।जैन विश्व भारती संस्थान के पूर्व कूलपति प्रो. भोपाल चंद लोढ़ा ने अनुशासन को विकास का प्रतीक बताया। इसी संस्थान के प्राध्यापक प्रो. दयानंद भार्गव ने अनुशासन के लिए सत्साहित्य की महत्ता पर बल दिया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय विचार मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने आपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि जीवन में समुलता प्राप्त करने की पहली सीढ़ी है अनुशासन। आज जब देश को लोगों में राष्ट्रीयता की भावना एवं समाज के प्रति प्रतिबद्धता की कमी महसूस हो रही है, संयुक्त परिवार का विघटन हो रहा है, आर्थिक विषमता बढ़ रही है, सामाजिक समरसता का अभाव खटक रहा है, मीडिया एवं साहित्य के द्वारा घटिया एवं अपसंस्कृति को बढ़ावा देनेवाली चीजें परोसी जा रही हैं, बेरोजगारी के चलते अनुशासन हीनता पराकाष्ठा पर है, प्रत्येक सजग एवं विचारवान नागरिक को केवल द्रष्टा न बनकर उन्हें आगे आना होगा और लोगों में अनुशासन चेतना का विकास करना होगा, क्योंकि अनुशासन के प्रति चेतना जाग्रत कर ही लोगों को अपने अधिकार व कर्तव्य का अहसास कराया जा सकता है। विषय पर विचार व्यक्त करनेवाले विद्वत्तजनों में मुनिश्री महेन्द्र कुमारजी, मुनिश्री सुखलाल जी, मुनिश्री किशन लाल जी, डॉ. जी.एल. जैन, श्रीमती सुधेश शर्मा, बी.आर. दुगड़ा,श्रीमती सुशील पटवारी, श्रीमति सूरज बरडिया, साध्वी राजीमती, विभाजी, एम.सी. मेहता का नाम उल्लेखनीय है। संचालन किया प्रो. महावीर राजगड़ा ने।

भारत भ्रष्टतम देशों की सूची में ९०वें पायदान पर

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की ओर से जारी एक रिपोर्ट के अनुसार भ्रष्टाचार सूचकांक में 10 में से 2.8 अंक पाकर भारत विश्व के भ्रष्टतम देशों की सूची में 90वें स्थान पर है। उसके साथ इस स्थान पर गोबिया, मलावी, मोजांबिक, नेपाल, रूस और तंजानिया है जबकि बांग्लादेश और हैंती 1.5 अंक पाकर दुनिया के 145वें पायदान पर सर्वाधिक भ्रष्ट देश हैं। रिपोर्ट के अनुसार भारतीय कर दाताओं की करीब 700 करोड़ डॉलर की राशि भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती है, जबकि वैश्विक स्तर पर यह रकम 400 अरब डॉलर तक है। इस सूचकांक में 9.7 अंक पाकर फिनलैंड सबसे कम भ्रष्ट देश है और उसके बाद 9.6 अंक पाकर न्यूजीलैंड दूसरे तथा 9.5 अंक पाकर डेनमार्क और आइसलैंड तीसरे स्थान पर है।

प्रस्तुति : दीपक कुमार, दिल्ली से

सरदार पटेल
की
जयंती १२९वीं जयंती
पर हमारी शुभकामनाएँ

मे0 पोपुलर फार्मा

अंग्रेजी दवाखाना

न्यू मार्केट, पटना-१

सहिष्णुता संगठन के सभी लोगों को जोड़ने का एक रज्जू

अणुव्रत का चार दिवसीय अधिवेशन संपन्न

विचार ब्यूरो, जयपुर

सहिष्णुता, संगठन के सभी लोगों को जोड़ने का एक रज्जू है। इसके बिना कोई भी संगठन आधारहीन तो होता ही है उसका मुखिया नेतृत्व नहीं कर सकता। संगठन की सुप्त शक्ति को जागृत करने के लिए मुखिया द्वारा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए, कार्यकर्ताओं को साधुवाद करना चाहिए। इसी लेखन कला पर विचार करते समय शब्दों और उसके अर्थों को भी ध्यान में रखना होगा, क्योंकि शब्दों और अर्थों के सम्यक समन्वय से ही प्रकाश फैलता है। ये उद्‌गार हैं अहिंसा के प्रवर्तक आचार्यश्री महाप्रज्ञ के जिसे विगत 7 अक्टूबर से 10 अक्टूबर 2004 तक राजस्थान के पाली जिलांतर्गत सिरियारी गाँव में आयोजित अणुव्रत महासमिति, अनुविभा तथा अणुव्रत न्यास के संयुक्त अधिवेशन में उन्होंने व्यक्त किए।

अ०भा० अणुव्रत के प्रमुख न्यासी के०एल०जैन की अध्यक्षता में आयोजित प्रथम दिन के अधिवेशन के अवसर पर युवाचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि अणुव्रत एक ऐसा आंदोलन है, कार्यक्रम है जो आदमी को जीना सिखाता है। साध्वी कनक प्रभा ने कहा कि अणुव्रत का अर्थ है संयम और आत्मानुशासन जिसके जरिए वह जन-जन में नैतिकता में आस्था जताने का उपाय बताता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा भारत स्क्वाड एवं गाइड के राष्ट्रीय आयुक्त ललित मोहन जैन, भा०प्र०से० ने अणुव्रत के कार्यों को जन-जन तक पहुँचाने पर बल दिया, क्योंकि आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है व्यक्ति को अंदर से बदलना। अध्यक्ष के०एल० जैन ने न्यास की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए कहा कि इसके द्वारा राष्ट्र चेतना जागृत करने का प्रयास किया गया है।

अधिवेशन के तीसरे दिन आयोजित अणुव्रत लेखक सम्मेलन के मुख्य अतिथि पद्‌मश्री डॉ० श्याम सिंह शशि ने अपने उद्‌गार में कहा कि अणुव्रत एक मानव धर्म है जिसके द्वारा अच्छे मानव बनने के लिए मनसा, वाचा और कर्मणा से एक होने की बात कही जाती है। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव ने कहा कि लेखन के पूर्व लेखक को यह देखना है कि वह कल्याणकारी है कि नहीं। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ० धर्मेन्द्र नाथ अमन ने कहा कि हम अंधकार को इतना अधिक सामने लाते जा रहे हैं कि उजाला उसके तले दबता जा रहा है। इस अवसर पर अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित किए गए सुप्रसिद्ध चिंतक एवं लेखक मूलचंद सेठिया। मुनि मोहजित कुमार ने अँधेरे और उजाले में सामंजस्य स्थापित करने की बात कही। अणुव्रत प्रभारी मुनिश्री सुखलाल ने मानवीय समानता और मानवीय सहअस्तित्व के निर्माण पर बल दिया। डॉ० नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने मौजूदा परिवेश को इन पक्तियों द्वारा व्यक्त किया-

मत कहो कि आज कितना कीचड़ पड़ा है
हर घुटनों तक सभी का पाँव सना है।

लेखक सम्मेलन के दूसरे सत्र में "युगीन समस्याओं के समाधान में अणुव्रत लेखकों की भूमिका" विषय पर आयोजित विचार संगोष्ठी में युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि अनेक समस्याओं के समाधान के लिए नैतिकीकरण अवश्य हो। लेखक अपनी बुद्धि से समस्या पैदा न कर समस्या का निदान खोजने का प्रयास करे। मुनिश्री सुखलाल ने अपने विचार व्यक्त करने के क्रम में देश के कोने-कोने से पधारे लेखकों से यह आह्वान किया कि वे अपने लेखन में नैतिकता का समावेश कर देशवासियों को इस ओर उन्मुख करने का प्रयास करें।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ० नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने कहा कि नदी की धारा को मोड़ने के लिए हरकुलिस चाहिए। उन्होंने संवेदनहीनता तथा संवादहीनता की बढ़ती स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए लेखकों को इस ओर अग्रसर होने का अनुरोध किया। संगोष्ठी में प्रेम मोहन लखोटिया ने जहाँ बच्चों की शिक्षा तथा नारी अधिकारों को लेकर नारी समानता की बात कही वहीं मानचंद खेदड़ा ने समाज के सभी स्तर पर व्याप्त असमानता, समन्वय का अभाव, इगो की समस्या सहित समझ की समस्या को सामने रखा। इसी प्रकार प्रो० महेन्द्र रायजादा ने भूमंडलीकरण, नैतिकतावादी विचारधारा से भौतिकवादी विचारधारा का मेल नहीं खाना, अपसंस्कृति की समस्या, परिवार का सिकुड़ना, हिंसक प्रवृतियों में वृद्धि पर चिंता व्यक्त की। जमनालाल बहेती ने सूखती संवेदना तथा कार्य संस्कृति की समाप्ति पर चिंता जाहिर की। श्रीचंद मेहता ने भूमंडलीकरण के पक्ष में अपनी बात जोरदार ढंग से रखते हुए वैश्वीकरण को समान ढंग से लागू करने की बात कही। वीरेन सिंह भाटी मंगल ने युगीन समस्या के समाधान के लिए खुद को हिस्सा बनने तथा लेखन में अणुव्रत के सिद्धांतों को पिरोने की सलाह दी। इसी प्रकार धर्मचंद जैन ने सही समय पर सही चोट लगाने पर बल दिया। महेश प्रसाद श्रीवास्तव ने हिसांत्मक प्रवृति के पनपने तथा नैतिक चरित्र के गिरावट पर चिंता जाहिर करते हुए भौतिक विचारधारा का परित्याग करने की सलाह दी। डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव ने कहा कि लेखन में उपदेश का कथन नहीं के बराबर आना चाहिए। लेखक को दृष्टांत देकर अपनी बात को प्रमाणिक बनाने की कोशिश करनी चाहिए ताकि लेखक के शब्दों का प्रतिदान मिल सके। श्रीमती सविता लखोटिया ने पंथवाद पर कड़ा प्रहार करते हुए बड़ी रेखा बनाने की बात कही।

विचार गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में यह खेद व्यक्त किया कि प्रबुद्धजन एक-डेढ़ घंटे में ही पूरे विश्व की

समस्या का समाधान निकाल लेने को आतुर दिखते हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश की भयावहता के मद्देनजर लेखकों को अपने लेखन वैयक्तिक जीवन के अतिरिक्त सामाजिक सरोकारों पर केंद्रीत करना चाहिए और साथ ही आज के लेखकों के जीवन और उनके लेखन में जो विरोधाभास दिखता है उससे बचने का प्रयास करना चाहिए। 'बच्चों का देश' की संपादिका श्रीमती कल्पना जैन ने आभार व्यक्त किया।

अधिवेशन के अंतिम दिन के अहिंसा समवाय सम्मेलन में आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अहिंसा के मूल आधार संयम को शब्दों में बाँधने की बात कही। सम्मेलन के प्रारंभ में राष्ट्रीय विचार मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने अहिंसा का प्रतिष्ठापन न होने के कई कारणों पर विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि आज लोगों का धर्म के प्रति आस्था नहीं जग पा रही है उसका और कारण चाहे जो हो राजनीतिज्ञों की तरह धर्म के चलानेवालों में भी कथनी और करनी में कोई सामंजस्य नहीं दिखना भी एक कारण है। देवघर, तिरुपति, मक्का मदीना, पहलगाँव आदि तीर्थों में लाखों लोगों की भीड के जमा होने से ऐसा लगता है कि पूरा भारत धर्ममय हो गया पर फिर वही ढाक के तीन पात। तीर्थों से लौटने पर उनमें वहीं हिंसक प्रवृतियाँ, वही घृणा, द्वेष आदि का पनपना चिंताजनक है। उन्होंने सलाह दी कि हम सभी को इस पर गंभीरता से विचार करते हुए अपने-आप में झाँकने की कोशिश करनी होगी। पहले अपने आप को सुधारने के बाद परिवार तथा समाज और राष्ट्र को सुधारें तभी बात बन सकती है। 'अणुव्रत' के संपादक डॉ० महेन्द्र कर्णावट ने कार्यक्रम का सफल संचालन करते हुए उसे रोचक और जीवंत बनाया।

प्रस्तुतिः राज चतुर्वेदी, जयपुर से।

घोटालों के इस दौर में ऑडिट की अहम भूमिका

लेखा परीक्षा अधिकारियों का राष्ट्रीय सम्मेलन संपन्न

विचार ब्यूरो, पटना

विगत 7 एवं 8 अक्टूबर 2004 को पटना में आयोजित वरीय लेखा परीक्षा अधिकारी एवं लेखा परीक्षा अधिकारी परिसंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सम्मेलन में नागपुर, हैदराबाद, इलाहाबाद, ग्वालियर, शिमला, कोलकाता तथा पटना सहित पूर्व मध्य रेलवे के लेखा परीक्षा अधिकारियों ने एक स्वर से आज के घपले-घोटालों के इस दौर में ऑडिट की महती भूमिका महसूस की मगर सरकार तथा राजनीतिक दलों के द्वारा लगातार ऑडिट की उपेक्षा किए जाने पर चिंता भी जाहिर की। आश्चर्य तो तब होता है जब भारत सरकार के प्रायः सभी विभागों के वरीय लेखा परीक्षा अधिकारियों के सवर्ग 'क' के वेतनमान के साथ उन्हें संवर्ग 'क' का स्टेटस दिया जा चुका है पर भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग के वरीय लेखा परीक्षा अधिकारी आज तक संवर्ग 'क' के स्टेटस से वंचित हैं। दरअसल सरकारी कामकाज में हुई वित्तीय अनियमितताओं और गडबडियों को ऑडिट द्वारा आम जनता के सामने प्रस्तुत करने के चलते सभी विभागों एवं दलों की आँख की यह विभाग किरकिरी बना हुआ है। संविधान के प्रति अपनी जबावदेही का बखूबी निर्वाह करनेवाले इस विभाग के अस्तित्व को समाप्त करने के कदम लोकतंत्र के लिए घातक सिद्ध होंगे, क्योंकि सरकारी धन का दुरुपयोग और लूट-पाट में मनमानी हो जाएगी और उस पर अंकुश लगानेवाला कोई नहीं रह पाएगा।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष छेदीलाल शर्मा ने सम्मेलन के उद्घाटन करने तथा 'लेखा परीक्षा के समक्ष चुनौतियाँ, विषय पर अपने 'विचार व्यक्त करते हुए सरकार से माँग की कि इस विभाग के अधिकारियों के साथ उपेक्षा का व्यवहार बंद कर ऑडिट को भारित मद में रखा जाए तथा इस विभाग को आर्थिक स्वायत्तता मिले। सम्मेलन में इस बात पर चिंता प्रकट की गई कि वर्ष 2001-2002 में कुल केंद्रीय बजट का लगभग 10,21,992 करोड़ रुपए में से सिर्फ एक प्रतिशत की ही लेखा परीक्षा करायी जा सकी तथा काफी प्रतिकूल परिस्थितियों में तैयार किए जा रहे ऑडिट रिपोर्ट को कार्यान्वित नहीं किया जा रहा है जिसकी वजह से भ्रष्टाचारियों का मनोबल और अधिक बढ़ता जा रहा है और दिनानुदिन घोटालों की संख्या बढ़ती जा रही है। अगर ऑडिट की भूमिका को इसी तरह नजरअंदाज किया जाता रहा तो किसी कवि की निम्न पक्तियाँ सार्थक सिद्ध होंगी--

वह दिन दूर नहीं
जब सी०बी०आई० और जाँच आयोगों के
मुँह पर ताले होंगे
हर रोज नए घोटाले होंगे।
वह दिन दूर नहीं
जब घोटाले जैसे लोकप्रिय कार्यक्रम को
राष्ट्रीय खेल घोषित किया जाएगा,
इसके मजे हुए खिलाडियों का
वरीयता क्रम दिया जाएगा
घोटाले के सर्वश्रेष्ठ खिलाडी का
नागरिक अभिनंदन किया जाएगा।

सम्मेलन को परिसंघ के राष्ट्रीय महासचिव भागीरथी तिवारी, प्रतिनिधि विनोद कुमार, टी० नारायणा राव ने भी संबोधित किया। संचालन किया अशोक कुमार सिन्हा ने।

प्रस्तुति : मनोज कुमार, पटना से

लौह पुरुष सरदार पटेल का १२९ वाँ जयंती-समारोह

संकल्पना और संचेतनाः

आज जब हम देश की समस्याओं पर एक नज़र डालते हैं तो पाते हैं कि समस्याओं की जटिलता पहले की तुलना में आज कहीं ज्यादा घनीभूत हुई हैं। सांप्रदायिकता पहले से भी अधिक संगठित और भयानक हुई है। सामंती कुसंस्कार आज भी अपनी जगह पर पनप रहे हैं, जनतांत्रिक मूल्यों पर शोषण-सत्ता के शिकंजे कसते जा रहे हैं। संसदीय प्रणाली और न्याय व्यवस्था शक के दायरे में आ गई है। और सबसे बड़ी बात तो यह कि सरदार पटेल के अदम्य साहस, राजनीतिक सूझ-बूझ, दृढ़-इच्छाशक्ति और राष्ट्र के प्रति अप्रतिम आस्था-निष्ठा के चलते जिस देश को अखंड भारत के रूप में आज हम देख रहे हैं, देशद्रोही एवं आतंकवादी ताकतें उसे ही खंडित करने पर आमादा हैं। और दूसरी ओर देश की एकता व अखंडता के लिए सबसे बड़ा खतरा तो हमारे अपने स्वार्थी, पद -लोलुप व भ्रष्टाचारी नेता बनते जा रहे हैं। क्या आज हम ऐसा नहीं महसूस करते कि देशवासियों में भी राष्ट्रीयता की भावना बड़ी द्रुतगति से लुप्त होती जा रही है? आखिर कब तक हम इसके मूक दर्शक बने रहेंगे? देश के सजग एवं विचारवान नागरिकों का यह राष्ट्रीय दायित्व बनता है कि देश की एकता व अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए वे अपने कदम बढ़ाएँ।

आयोजन

सरदार पटेल जयंती- समारोहः

उपर्युक्त संकल्पना के कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर **राष्ट्रीय विचार मंच** के तत्वावधान में पटेल फाउंडेशन एवं शिवा संघ की सहभागिता से **भारतरत्न लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल** के 129 वें जयंती-समारोह का आयोजन राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में बिहार की राजधानी पटना तथा नई दिल्ली के 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग स्थित राजेन्द्र भवन के सभागार में आगामी 31 अक्टूबर, 2004 को पूर्वाह्न 11 बजे से 3 बजे तक किया गया।

विषयः 'आज यदि सरदार पटेल होते' यही था उपर्युक्त समारोह में विचार विमर्श के लिए केंद्रीय विषय जिसपर अतिथि वक्ता अपने विचारों को केंद्रीत रखने का प्रयास किया।

राष्ट्रीय एकता रैलीः

सरदार पटेल जयंती-समारोह के इस पावन अवसर पर 31 अक्टूबर 2004 को एक राष्ट्रीय एकता रैली का आयोजन किया गया। **इस रैली में ५१ मोटर साईकिल पर सवार विभिन्न धर्मो, भाषाओं एवं क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे १०२ नौजवानों के साथ राष्ट्रीय विचार मंच, पटेल फाउंडेशन तथा शिवा संघ के पदाधिकारियों का दल ३१ अक्टूबर २००४ को प्रातः ८ बजे गुड़गाँव स्थित सरदार पटेल स्थल से प्रस्थान कर नई दिल्ली के महरौली, अरविंदो रोड,एम्स (एडै)ए पृथ्वीराज रोड, शाहजहाँ रोड, इंडिया गेट, तिलक मार्ग से गुजरते हुए दीनदयाल उपाध्याय मार्ग स्थित राजेन्द्र भवन के सामने साढ़े दस बजे पूर्वाहन पहुँचे।** जहाँ समारोह में पधारे मान्य अतिथियों के साथ हजारों सुधीजन उनका स्वागत किया।

पुस्तकों का प्रकाशनः

जयंती के इस पुनीत अवसर पर पटेल फाउंडेशन तथा शिवा संघ के सहयोग से राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा राष्ट्रीयता पर आधारित 304 पृष्ठों की हिंदी में 'राष्ट्रीयताः विविध आयाम' तथा अँग्रेजी में 'Nationalism In The Modern Perspective' शीर्षक से दो पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है जिसका लोकार्पण समारोह के पश्चात् संपन्न होगा।

'विचार दृष्टि' का 'राष्ट्रीय एकता विशेषांक':

राष्ट्रीय विचार मंच के मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' के राष्ट्रीय एकता विशेषांक का भी इस अवसर पर प्रकाशन किया गया जिसमें देश भर के ख्यातिप्राप्त लेखकों, रचनाकारीं, पत्रकारों सहित चिंतकों एवं विचारकों के राष्ट्रीय एकता से संदर्भित सारगर्भित एवं तथ्यपूर्ण सामग्रियों को संजोया गया है। विशेषांक का लोकार्पण समारोह के उद्घाटनकर्ता के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। इस विशेषांक का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया 'विचार दृष्टि' के संपादकीय सलाहकार श्री गिरीशचंद्र श्रीवास्तव ने।

विशेषांक का विज्ञापन-दरः

राष्ट्रीयता एकता विशेषांक की 'विचार दृष्टि' ए-4 साइज में उसकी 10 हजार प्रतियाँ छपेंगी जिसका विज्ञापन-दर इस प्रकार था-

आवरण पृष्ठ

1.	मुख्य पृष्ठ रंगीन	सुरक्षित
2.	अंतिम पृष्ठ रंगीन	रु. 20,000
3.	पूर्ण पृ०3एवं4 "	रु. 15,000
4.	आधा पृ०3एवं4"	रु. 8,000
5.	चौथाई पृ०3एवं4"	रु. 5,000

अन्य पृष्ठ

6.	पूर्ण पृ० रंगीन	रु.5,000
7.	आधा पृ० रंगीन	रु.3,000
8.	पूर्ण पृ० सादा	रु.2,000
9.	आधा पृ० सादा	रु.1,000
10.	चौथाई पृ०सादा	रु.5,00

विज्ञापन राशि का भुगतान 'विचार दृष्टि' के नाम चेक/बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा अथवा नकद प्राधिकृत अधिकारी को देय होगा।

आयोजक :

राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत तथा सरदार पटेल के आदर्शों और विचारों में आस्था-निष्ठा रखनेवाली संस्थाएँ-**पटेल फाउंडेशन** तथा **शिवा संघ** की सक्रिय सहभागिता से उपर्युक्त चारों आयोजन राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संस्था **राष्ट्रीय विचार मंच** के तत्वावधान में संपन्न हुआ।

राष्ट्रीय चेतना का यह मंच वैचारिक अभिव्यक्ति का एक ऐसा सार्थक मंच है जिसके द्वारा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक ताने-बाने से लेकर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर विचार संगोष्ठी, परिसंवाद, परिचर्चा, अधिवेशन अथवा सम्मेलन आदि का आयोजन कर देश व समाज के ज्वलंत प्रश्नों का बड़ी निर्भीकता एवं निष्पक्षता से विश्लेषण किया जाता है और जन-मानस को झकझोर कर उनमें राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का प्रयास किया जाता है। यह आयोजन उसी की अगली कड़ी है।

आयोजन -समितियाँ

समारोह समितिः

उपर्युक्त चारों आयोजनों को सफल बनाने हेतु अलग-अलग समितियाँ गठित की गई थी। मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री यू. सी. अग्रवाल, की अध्यक्षता में गठित दिल्ली की जयंती समारोह समिति के श्री मिथिलेश कुमार एवं श्री प्रदीप कुमार वर्मा संयोजक द्वय तथा पटना की समिति के संयोजक डा. कुमार इन्द्रदेव थे। इन दोनों समितियों में मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं दिल्ली कार्यकारिणी, पटेल फाउंडेशन तथा शिवा संघ के सभी पदाधिकारी सदस्य थे। इसके अतिरिक्त श्री महेश कुमार पाण्डेय, श्री अर्जुन प्रसाद पटेल, श्री शशि भूषण, श्री सुधीर रंजन, श्री मिथिलेश कुमार कश्यप आदि भी इसके सदस्य मनोनीत किए गए थे।

राष्ट्रीय एकता रैली समितिः

दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री प्राणेन्द्र कुमार सिंह के संयोजकत्व में गठित रैली समिति के सदस्यों का मनोनयन के लिए संयोजक अधिकृत थे। इसके अतिरिक्त शशि भूषण, सुधीर रंजन, अजीत कुमार सिन्हा, दिनेश कुमार, सुरेश सिंह, अमरेन्द्र कुमार तथा इस समिति के सदस्य हुए ।

गुडगांव में रैली का संयोजन सतीश राठौर, श्याम सुन्दर पटेल, अनिल कुमार पटेल, पारस प्र० सिंह तथा प्रमोद कुमार वर्मा ने किया।

संपादक-मंडल (अँग्रेजी)

प्रस्तावित 304 पृष्ठों की अंग्रेजी पुस्तक के प्रकाशन हेतु गठित संपादक मंडल के प्रधान संपादक हैं श्री यू. सी. अग्रवाल तथा श्री सिद्धेश्वर उसके संपादक हैं। संपादक मंडल के अन्य सदस्यों में डॉ. अनिल दत्त मिश्र तथा डॉ. मेदिनी प्र. राय हैं।

संपादक - मंडल (हिंदी)

हिंदी पुस्तक के प्रकाशन हेतु मुनिश्री लोक प्रकाश 'लोकेश' के दिशा निर्देशन में गठित संपादक-मंडल के श्री सिद्धेश्वर संपादक हैं तथा डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव, डॉ. देवेन्द्र आर्य तथा डॉ. मधु धवन(चेन्नई) उसके सदस्य हैं। श्री सीताराम सिंह सहायक संपादक हैं।

संपादक मंडल (विचार दृष्टि)

'विचार दृष्टि' के संपादक श्री सिद्धेश्वर राष्ट्रीय एकता विशेषांक के पदेन संपादक थे तथा उपसंपादक श्री मनोज कुमार एवं सहा० संपादक सुश्री अंजलि है।

स्वागत समितिः

मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री यू. सी. अग्रवाल के नेतृत्व में गठित स्वागत समिति में मंच के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री संजय सौम्य संयोजक तथा मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों सहित पटेल फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री सरयु सिंह तथा शिवा संघ के अध्यक्ष प्रो. एस.पी. सिंह एवं उपाध्यक्ष अशोक कुमार वर्मा के अतिरिक्त महासचिव अमरेन्द्र कुमार एवं प्रदीप कुमार वर्मा उसके पदेन सदस्य थे। डॉ. सोम दत्त शर्मा, ए. के. सिन्हा, डॉ. डी. एस. जायसवार तथा एस. के कटियार विशेष आमंत्रित सदस्य मनोनीत किए गए थे। इस समिति के सचिव थे स्कूल ब्लॉक,व्यापार मंडल के अध्यक्ष श्री विनोद सिंह।

मंच क राष्ट्रीय महासचिव श्री सिद्धेश्वर तथा मंच की बिहार इकाई के महासचिव श्री मनोज कुमार, दिल्ली तथा पटना के क्रमशः सभी कार्यक्रमों के समन्वयक थे। इसके सह समन्वयक थे सी.एस. पटेल थे।

परामर्शदात्री समितिः

अहिंसा यात्रा के राष्ट्रीय प्रवक्ता मुनिश्री लोक प्रकाश 'लोकेश' के मार्गदर्शन तथा श्री यू.सी. अग्रवाल की अध्यक्षता में गठित परामर्शदात्री समिति में मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी तथा मंच की दिल्ली ईकाई की कार्यकारिणी के पदाधिकारी एवं सदस्यों के अतिरिक्त सर्वश्री सरयु सिंह, यू.एन. सिंह, सी. एस. पटेल, प्रो. द्वारिका प्रसाद ओम प्रकाश कौशिक, डॉ. एन. के. प्रसाद, सी. बी. प्रसाद, राजीव रंजन सिन्हा, सुरेश सिंह, अवधेश प्र० सिंह, दिनेश कुमार तथा प्रमोद कुमार वर्मा, समिति के सदस्य थे।

आमंत्रित अतिथिः

गाँधी दर्शन एवं स्मृति समिति के उपाध्यक्ष तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. के.डी. गंगराडे ने राष्ट्रीय एकता रैली का समापन राजेन्द्र भवन के सामने उपस्थित सैकड़ों सुधीजनों तथा लौह पुरुष सरदार पटेल के विचारों एवं आदर्शों में आस्था एवं निष्ठा रखनेवाले देश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे नागरिकों की उपस्थिति में किया। बाद फिर इसके 11 बजे पूर्वाह्न राजेन्द्र भवन में आयोजित सरदार पटेल जयंती समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रो. गंगराडे ने सरदार के राष्ट्र के एकीकरण के योगदान को रेखांकित किया। इसके मुख्य अतिथि थे राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय, राजघाट के निदेशक डॉ. वाई. आनंद। राष्ट्रपति भवन के पूर्व राजभाषा प्रभारी तथा सुप्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. परमानंद पांचाल एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी प्राध्यापक प्रो. प्रेम सिंह ने इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में सरदार पटेल के अदम्य साहस, सूझबूझ एवं उनके व्यक्तित्व की पारदर्शिता की मुक्त कंठ से सराहना की। समारोह की अध्यक्षता करते हुए मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री यू.सी. अग्रवाल ने सरदार पटेल को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर समाजवादी चिंतक किशन पटनायक को मरणोपरांत मंच की ओर से 'विचारभूषण' से सम्मानित स्मृति चिह्न, प्रशस्ति-पत्र तथा शॉल उनके सहयोगी प्रो. प्रेम सिंह ने ग्रहण किया।

'विचार दृष्टि' के संपादकीय सलाहकार श्री गिरीशचंद्र श्रीवास्तव ने इस अवसर पर लोकार्पित राष्ट्रीय एकता विशेषांक का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय एकता की भावना के ह्रास होने पर चिंता व्यक्त की तथा लोगों में राष्ट्र चेतना जागृत करने पर बल दिया। मंच की ओर से राष्ट्रीयता पर आधारित हिंदी तथा अंग्रेजी में प्रकाशित की जानेवाली दोनों पुस्तकों की अद्यतन प्रगति पर प्रकाश डाला संपादक-मंडल के सदस्य डॉ० देवेन्द्र आर्य ने।

मंच के राष्ट्रीय महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने कार्यक्रम के संचालन के क्रम में एक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय एकता रैली तथा पटेल जयंती समारोह की पृष्ठभूमि के साथ-साथ पूरा ब्यौरा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर सरदार पटेल को जिन सुधीजनों ने अपने श्रद्धा व सम्मान निवेदित किया उनमें सरयू सिंह, प्रो. एस. पी. सिंह, श्री मिथिलेश कुमार, श्री अशोक कुमार वर्मा तथा श्री मिथिलेश कुमार कश्यप एवं श्री विनोद सिंह का नाम उल्लेखनीय है। प्रारंभ में भारत सरकार के पूर्व संयुक्त निदेशक डॉ० रमेशचंद्र बेलावत ने समारोह में पधारे मान्य अतिथियों तथा सुधी श्रोताओं का मंच की ओर से स्वागत किया और मंच के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री संजय सौम्य ने आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुतिःदीपककुमार,दिल्लीसे

राष्ट्रीय विचार मंच के तत्त्वावधान में पटेल फाउंडेशन और शिवासंघ की सहभागिता से नई दिल्ली में सरदार पटेल का १२९वां जयंती-समारोह

राष्ट्रीय महासचिव का प्रतिवेदन

मंच की बिहार इकाई की ओर से प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सांप्रदायिक सौहार्द के प्रतीक मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, भारतीय संविधान के निर्माता बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर, अमरकथा शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु, राष्ट्रीय एकता व अखंडता के प्रतीक लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल तथा राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत कवि सुब्रह्मण्यम भारती सरीखे देश के वैसे महापुरुषों की जयंती बिहार की राजधानी पाटलीपुत्र में प्रति वर्ष मनाई जाती रही है जिन्हें अपेक्षित सम्मान आज तक नहीं मिल पा रहा है।

क्या आज देशवासी यह महसूस नहीं करते कि लौह पुरुष सरदार पटेल के अदम्य साहस, सूझबूझ तथा उनकी राष्ट्र के प्रति सच्ची आस्था-निष्ठा के चलते जिस देश को आज अखंड भारत के रूप में हम सब देख रहे हैं उसे देशद्रोही तथा आतंकवादी ताकतें पुनः खंडित करने पर आमादा हैं और इधर हाल के वर्षों में देशवासियों में भी राष्ट्रीयता की भावना का तेजी से ह्रास होता चला जा रहा है? फिर हमारे स्वार्थी, पदलोलुप एवं भ्रष्टाचारी नेता भी तो देश की एकता व अखंडता के लिए खतरा बनते जा रहे हैं जो चिंता का विषय है। देश की एकता व अखंडता को कैसे सुरक्षित रखा जाए, सजग एवं विचारवान नागरिकों को आज इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। आखिर कब तक हम इसके मूकदर्शक बने रहेंगे? हम सभी का यह राष्ट्रीय दायित्व बनता है कि एकता व अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए हम सोचें, विचारें और कदम बढ़ाएँ।

कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर मंच की बिहार एवं दिल्ली इकाई की पहल पर कराने का निर्णय लिया गया। राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में सरदार पटेल के 129 वें जयंती-समारोह का आयोजन करने और इस अवसर पर गुजरात के खेड़ा स्थित उनकी पवित्र जन्मभूमि बारसद से नई दिल्ली तक 31 मोटर साइकिल पर सवार 102 नौजवानों की एक राष्ट्रीय एकता रैली का आयोजन कर राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने का अहसास, कुछ अपरिहार्य कारणों से पटेल की जन्मभूमि से तो नहीं पर हरियाणा के गुड़गाँव स्थित एक ऐतिहासिक स्थल से नई दिल्ली के राजेन्द्र भवन में आयोजित सरदार पटेल जयंती-समारोह के स्थल तक 51 मोटर साइकिल पर सवार विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं तथा क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे कुल 102 नौजवानों सहित अनेक संगठनों के प्रतिनिधियों की एक भव्य राष्ट्रीय एकता रैली का समापन अभी-अभी दीनदयाल उपाध्याय मार्ग में हुआ जिसका स्वागत मान्य अतिथियों सहित आप सभी सुधीजनों ने बड़ी गर्मजोशी से किया। रैली में भाग लेनेवाले सभी नौजवानों एवं आप सभी राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत सज्जनों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

इसके पूर्व कि समारोह के विषय पर कुछ कहूँ मंच के कार्यकलापों से आपको अवगत कराना लाजिमी होगा। सन् 1986 ई में स्थापित राष्ट्रीय विचार मंच राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक अभिव्यक्ति का एक ऐसा सार्थक मंच है, जिसके द्वारा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक ताने-बाने से लेकर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर विचार संगोष्ठी, परिसंवाद, परिचर्चा, अधिवेशन व सम्मेलन आयोजित कर देश व समाज के ज्वलंत प्रश्नों का बड़ी निर्भीकता एवं निष्पक्षता के साथ विश्लेषण किया जाता है और जन-मानस को झकझोर कर उनमें राष्ट्रीय चेतना जागृत करने की कोशिश की जाती है। मंच अपने मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' तथा दक्षिण भारत के चार राज्यों सहित कुल 12 राज्यों में गठित इकाईयों के समर्पित कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों के सहयोग से उसके उद्येश्यों को कार्यरूप में परिणत करने का प्रयास कर रहा है। आज का यह आयोजन उसी की अगली कड़ी है।

'आज यदि सरदार पटेल होते..... .....' यही है दिल्ली तथा पटना में आयोजित आज के समारोह में विचार-विमर्श के लिए केंद्रीय विषय जिस पर हमारे मान्य अतिथि वक्ता अपने विचारों को केंद्रीत करने का प्रयास करेंगे। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आज यदि सरदार पटेल होते तो देश की एकता व अखंडता पर यूँ तो खतरा

मंडराता ही नहीं और यदि देशद्रोही एवं आतंकवादी शक्तियाँ इसे खंडित करने के लिए अपना सिर उठातीं तो वे सख्ती से पेश आते। कश्मीर के सवाल पर एक गलत निर्णय की वजह से आज तक वह एक गंभीर समस्या बनी हुई है और प्रति वर्ष हज़ारों बेगुनाह एवं निर्दोष नागरिकों की जानें जा रही हैं तथा लाखों लोगों की जिंदगी प्रभावित हो रही है, सरदार पटेल के सबल कंधों पर यदि दायित्व देने का सही फैसला लिया गया होता तो कश्मीर समस्या का समाधान कब का हो गया होता, ऐसी समझ केवल मेरी नहीं, पूरे देशवासियों की है।

आज यदि सरदार पटेल होते तो राजनेताओं में फैली असामाजिकता, भ्रष्टाचार, मत्तालोलूपता तथा लालच जैसी बुराईयाँ पनपती ही नहीं, क्योंकि उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृव्य में एक पारदर्शिता थी जो आज के नेताओं में कहीं नहीं दिखती। पूरे देश में कानून-व्यवस्था की आज जो धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं वह सरदार पटेल की अनुशासनप्रियता के आगे व्यवस्थित होती और नियम-कानून का पालन होता। मुझे अच्छी तरह याद है कि आज ही के दिन कर्मठ एवं भरोसेमंद प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी की हत्या की वजह से तत्कालीन प्रध ानमंत्री चौधरी चरण सिंह के पटना में आयोजित सरदार पटेल के जयंती-समारोह में उपस्थित नहीं होने पर उनका एक संदेश आया था जिसमें उन्होंने कहा था-'यदि सरदार पटेल प्रधानमंत्री होते तो कदाचित जितनी समस्याओं का सामना आज इस देश को करना पड़ रहा है वह समस्या उत्पन्न ही नहीं होती।' ऐसा था उनका व्यक्तित्व। भारत के गाँवों और वहाँ की कृषि व्यवस्था के चौपट होने तथा कुटीर एवं लघु उद्योगों के बंद होने की वजह से करोड़ों युवकों को बेरोजगारी का जो सामना करना पड़ रहा है उसका इतना भयावह रूप सरदार पटेल की उपस्थित में नहीं दिखता, कारण कि स्वयं किसान-मजदूरों के हिमायती होने की वजह से उनका ध्यान कृषि एवं उद्योगों का सुव्यवस्थित विकास करने का होता जिससे देश का कायाकल्प हो सकता था।

देश की अन्य समस्याओं पर जब हम एक नजर डालते हैं तो पाते हैं कि उन समस्याओं की जटिलता पहले की अपेक्षा आज कहीं ज्यादा घनीभूत हुई हैं। साम्राज्यवादी हमलों के तौर-तरीके भी बदले हैं। सांप्रदायिकता पहले से भी अधिक संगठित और भयानक हुई हैं। सामंती कुसंस्कार आज भी अपनी जगह पर बने हुए हैं। जनतांत्रिक मूल्यों पर शोषण-सत्ता के शिकंजे कसते जा रहे हैं। संसदीय प्रणाली तथा हमारी न्याय व्यवस्था शक के दायरे में आ गई है। इन बदली हुई परिस्थितयों में सरदार पटेल की प्रासंगिकता का अहम सवाल हमारे सामने है। इसलिए यह जरूरी है कि हम सरदार पटेल के सिद्धांतों एवं विचारों पर गहराई से विचार करें तथा उन उपादानों की पड़ताल करें जो हमारे लिए काम के हो सकते हैं क्योंकि सरदार पटेल एकमात्र ऐसे व्यावहारिक राजनेता हुए जिन्होंने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति की विलक्षणता के बदौलत राष्ट्रीय एकीकरण के प्रमुख आधार स्तंभ के रूप में अपने को सिद्ध किया। मगर दु:खद स्थिति यह है कि आजादी के 57 साल बाद आज पुन: देश-विभाजन का खतरा फिर दिखने लगा है। ऐसी विषम स्थिति में भारत की एकता व अखंडता के प्रमुख सूत्रधार सरदार पटेल के चिंतन के प्रमुख आधार-राष्ट्रवाद तथा उनके कौशल एवं राष्ट्र के प्रति उनकी निष्ठा की याद स्वाभाविक है। भारतीय इतिहास के ऐसे कालजयी महापुरुष की स्मृति को उनकी 129 वीं जयंती पर मैं नमन करता हूँ और जन-जन तक उनके संदेश को पहुँचाने का अनुरोध करता हूँ ताकि लोगों में राष्ट्र-चेतना जागृत हो सके।

इस विषय पर कुछ और अधिक न कहकर हम अपने मान्य अतिथि वक्ताओं से उनके तथ्यपरक एवं सारगर्भित विचारों को सुनना चाहेंगे। इस समारोह और इस अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय एकता रैली, राष्ट्रीयता पर आधारित पुस्तकों के प्रकाशन तथा 'विचार दृष्टि' के 'राष्ट्रीय एकता विशेषांक' निकालने में उन सभी संगठनों, सहयोगियों, रचनाकारों, विज्ञापनदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिन्होंने तन-मन-धन से उन्हें मूर्त रूप देने में सहयोग प्रदान किए। मैं विशेष रूप से आभारी हूँ मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री यू.सी. अग्रवाल तथा अहिंसा यात्रा के राष्ट्रीय प्रवक्ता मुनिश्री लोकप्रकाश 'लोकेश' जी का जिनके सान्निध्य में यह समारोह सफल हुआ और हर कदम पर जिनका मार्गदर्शन काम आया। पटेल फाउंडेशन के मिथिलेश कुमार तथा उनके सहयोगियों ने तथा शिवा संघ के पदाधिकारियों ने अपने परिश्रम से सारे आयोजनों को सफलता की मंजिल तक पहुँचाने में कोई कोर-कसर उठा नहीं रखा। इन सबों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इन सभी मित्रों का अपेक्षित सहयोग मंच को मिलता रहेगा। पत्रकार छायाकार तथा संचार मीडिया से जुड़े सभी शुभेच्छु-मित्रों को मैं तहेदिल से धन्यवाद देता हूँ।

31अक्टूबर, 04

सिद्धेश्वर
राजेन्द्र भवन,
210,दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली -2.

उदयराज सिंह : जीवन के हर मोड़ पर जिसने नए दृश्य देखे

सिद्धेश्वर

"हमने आजादी की लड़ाई आम आदमी की हालत सुधारने को लड़ी और आज भी हम उसी आम आदमी के लिए खून-पसीना एक किए हुए हैं। यदि उनकी हालत न सुधरी तो हमारी आजादी बेमानी हो जाएगी।" ये पंक्तियाँ हैं उजाले के बीच के उपन्यासकार और उस साहित्य-अध्यात्म के साधक उदयराज सिंह की, जिसने अपने संपूर्ण जीवन में आम आदमी के प्रति करुणा के भाव को संजोया और जीवन के हर मोड़ पर नए दृश्य देखे। जिस प्रकार आम आदमी अपना सुख-दुःख सब में बाँटना चाहता है, सामाजिक होने का भरपूर प्रमाण देता चलता है, व्यवहार को धन-संपत्ति से नहीं जोड़ता, किसी के खाने और कपड़े पर उतना ध्यान नहीं देता जितना उसके विचारों पर ठीक उसी प्रकार उदयराज बाबू भी आम आदमी की तरह एक भावना प्रधान व्यक्ति थे। उन्हें अपनत्व की भावना ही सबसे बड़ी और अच्छी लगती थी। सच कहा जाए तो संसार में सुख से जीने के लिए यही अपनत्व की भावना भवसागर में पतवार का काम करती है। आम आदमी कभी किसी से कुछ धन-संपत्ति चाहता भी नहीं वह अपने श्रम से जो कुछ पाता है, उससे संतुष्ट होकर अपना जीवन परिवार के साथ बिताने में लगा रहता है। ईर्ष्या, द्वेष उसके मन में बसता ही नहीं, कौन क्या कर रहा है उस पर उसका ध्यान भी नहीं जाता। किंतु अच्छाई और सच्चाई का उसे पूरा ज्ञान होता है। उसको भ्रम में कोई नहीं डाल सकता। उसकी याददाश्त भी कमजोर नहीं होती, अन्यथा वह राम, कृष्ण, विवेकानंद, कबीर, गाँधी, बुद्ध और महावीर जैसे उदात्त संतों को याद नहीं रखता। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उदयराज सिंह भी आम आदमी के प्रति इन्हीं विशेषताओं और गुणों के चलते आकृष्ट हुए थे। आम-आदमी की पीड़ा और दुःख-दर्द को वे बखूबी समझते थे।

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि अनोखी शैली के सम्राट राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह के सुपुत्र उदयराज बाबू का जन्म 5 नवंबर, 1921 ई० को बिहार के सूर्यपुरा के राजवंश में हुआ था। राजघराने के संपन्न परिवार के होते हुए भी वे जन-सामान्य की संवेदनाओं से पूर्ण रूप से जुड़े हुए थे। आखिर तभी तो उनकी कलम से उपर्युक्त उपन्यास के जरिए आम आदमी के प्रति उनके करुणामय भाव पाठकों के सामने आए। कहा जाता है कि धन की गर्मी जेब तक तो ठीक है, पर जब वह दिमाग तक पहुँचती है तो उसका अभिमान व्यक्ति को दबोच लेता है। ऐसा अभिमानी व्यक्ति किसी काम का नहीं होता। उदयराज बाबू धनी होते हुए भी अभिमानी नहीं थे, क्योंकि धन की गर्मी उनके दिमाग तक नहीं पहुँची थी, इसलिए अभिमान ने उन्हें नहीं दबोचा था।

धन होना अच्छा है पर धन पाकर मानवता को भूलना जीवन की सबसे बड़ी भूल होती है, जो कि जीवन के अंत में समझ में आती है। उदयराज बाबू के व्यक्तित्व और कृर्तत्व पर प्रारंभ में ही इस विचार को आत्मसात कर लिया था, तभी तो धन पाकर भी मानवता को वे नहीं भूल पाए। यह उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी। पटना में रहने के नाते मेरा भी यह सौभाग्य रहा कि पिछले दो दशक में कई साहित्यिक आयोजनों के माध्यम से उदयराज बाबू से मिलने का मुझे भी मौका मिला। अधिकतर आयोजन तो उनके श्रीकृष्णपुरी स्थित निवास-प्रांगण में ही होते थे और जब भी मैं पटना में रहा, उनके निवास पर जाकर न केवल संगोष्ठियों में अपने विचार व्यक्त कर मैंने गौरवान्वित महसूस किया, बल्कि उदयराज बाबू का सान्निध्य पाकर मैं गर्व का अनुभव करता रहा। दिल्ली से प्रकाशित राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक पत्रिका 'विचार दृष्टि' के अंक जब उन्हें अवलोकनार्थ देता था तो वे बधाई देते हुए प्रोत्साहित करना नहीं भूलते थे। मुझे अच्छी तरह याद है पत्रिका पर एक विहंगम दृष्टि डालने के तुरंत बाद ही उसके अच्छे विचारों को सुना देते थे, क्योंकि उदयराज बाबू को अच्छे विचार सुनने और अच्छे विचार देने की आदत थी। वे अक्सर कहा करते थे- जैसे सागर में लहर अपने आप उठती रहती है वैसे ही मन में विचार भी उठते रहते हैं। अगर समय पर इन दोनों को नहीं समझा, देखा तथा उपयोग में लिया जाए तो बाद में इनका निशान भी नहीं बचता। हर लहर और विचार अपनी तरह के अलग एवं अनोखे होते हैं। विचारों को शब्द में बाँधना लहर को

बाँधने के समान है। कब आया और कब गया इसका पता ही नहीं लगता। यही कारण है कि उदयराज बाबू हर क्षण के विचार को उपयोग में लाने की क्षमता रखते थे और उनकी इसी क्षमता का प्रतिफल है कि अनेक लोगों का भविष्य उनके सान्निध्य में आने पर सुधर गया। ऐसा करने से ही समाज में सुधार आता है। आदमी आदमी के काम आए यही आदमी का सबसे बड़ा गुण है। उदयराज बाबू का व्यक्तित्व इस गुण से परिपूर्ण था।

यह हाड़-माँस का आदमी ही है जिसने प्रकृति की समस्त शक्तियों को अपनी मुट्ठी में बंद कर रखा है और यह उद्यमी आदमी ही है जिसके पुरुषार्थ के आगे असंभव को भी अपनी पराजय स्वीकार कर लेनी पड़ती है। ऐसा पराक्रमी उत्कृट साहस से भरा हुआ मानव जब उठता है तो अंतरिक्ष को भी झुकना पड़ता है। आज के समाज में उदयराज बाबू भी एक ऐसे ही मानव थे जिनके आगे सभी संवेदनशील एवं सजग नागरिकों को झुकना पड़ता था, क्योंकि वे समानता की भावना से ओत-प्रोत थे और समानता की भावना मानवतावादी विचारधारा की ही एक प्रवृति है। सब मनुष्य बराबर है। वर्ण, लिंग, जाति, भाषा और मत आदि से मानव समुदाय को बाँटना उचित नहीं। उदयराज बाबू इसी विचारधारा के पोषक थे। कारण कि अनेक ऐसे दृश्य उनकी आँखों के आगे से गुजर चुके हैं जिससे प्रभावित होकर समाज में व्याप्त विषमता को हटाने का उन्होंने आह्वान किया था।

आज के इस भौतिकवादी युग में अर्थ, सत्ता और संप्रदायों की संकीर्णताओं ने मानव को इतना स्वार्थी और आत्मकेंद्रीत बना दिया है कि उसके हृदयस्थल में प्रेम, भ्रातृत्व और सहयोग की भाव-सरिताएँ सूख-सी गई हैं। ऊपर से पर्याप्त सुगठित और आकर्षक दिखनेवाली आधुनिक सभ्यता को यदि बेनकाव कर दिया जाए तो उसके विकृत रूप को पहचानने में देर नहीं लगेगी। मनुष्य की इसी विकृत दोहरी भूमिका को उदयराज बाबू ने अपनी निम्न रचनाओं में शब्दांकन कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है - "कुहासा और आकृतियाँ, 'रोहिणी', 'अधूरी नारी', 'भागते किनारे', 'अँधेरे के विरूद्ध', 'उजाले के बीच' आदि। इसके अतिरिक्त ग्रामीण समाज के यथार्थ को भी इन्होंने अपनी पुस्तक 'गाँव के खिलौने' में दर्शाया है।

देश की हिंदी पत्रकारिता के ऋषि उदयराज सिंह जी ने आधी शताब्दी से अधिक अवधि से नियमित रूप से प्रकाशित 'नई धारा' के माध्यम से न केवल साहित्य की सेवा की, बल्कि हिंदी पत्रकारिता को एक नया आयाम दिया और अपनी आहुति देते हुए 'नई धारा' को जीवित रखा। यह उनकी साहित्यिक चेतना का द्योतक है। यदि हम उन्हें साहित्यिक-पत्रकारिता के एक सबल स्तंभ की संज्ञा से विभूषित करें तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

जहाँ तक मुझे स्मरण है एक बार अपने निवास पर आयोजित एक संगोष्ठी में उदयराज बाबू ने देवता के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि देवता वे नहीं हैं जो स्वर्ग में निवास करते हैं, प्रत्युत वे हैं जो जीवन में निरंतर संघर्षशील रहकर चेतना का प्रकाश बिखेरते हैं और प्रत्येक निराश हृदय को आशा के स्वरों से स्पंदित कर देते हैं। 'आरती और अँगारे' में कविवर हरिवंश राय बच्चन ने भी कुछ इसी तरह के भावों को अभिव्यक्ति दी है इन पंक्तियों में-

"देवता मेरे वही हैं
जो कि जीवन में पड़े संघर्ष करते,
गीत गाते,
मुस्कराते
और जो छाती बढ़ाते
एक होने के लिए
हर दिल जले से।"

परंपरा और आधुनिकता का समन्वय करनेवाले रचनाकार उदयराज सिंह की रचनाएँ आधुनिक युग का यथार्थ करनेवाली रचनाएँ हैं। प्रयोग के लिए उन्होंने परंपरा का तिरस्कार नहीं किया,वरन जब भी आवश्यक समझा उसमें नवीकृत संस्करण का सहारा लिया। इस प्रकार प्रयोग और परंपरा के दो मर्यादित कूलों के बीच में उन्होंने अपनी भाव-स्रोतस्विनी को प्रवाहित करके हिंदी की रचनाशीलता को अर्थवत्ता प्रदान की। अपनेमन की दुर्बलता को और मानव-हृदय की संकीर्णता को अनावृत करते हुए वे किंचित भी नहीं हिचकिचाए यह ईमानदारी उनकी चारित्रिक नैकिता का परिचायक है। यह ईमानदारी और चारित्रिक नैतिकता आज के युग के रचनाकारों में मुश्किल से देखने को मिलती है। वह प्यार के आदान का तो स्वागत करता है, किंतु प्रदान का अवसर आते ही बगले झाँकने लगता है। सुप्रसिद्ध रचनाकार शिवदान सिंह चौहान ने अपनी पुस्तक आलोचना-स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य विशेषांक में कहा है कि लेखक अपने और अपनी रचना के प्रति ईमानदार हो, एक समर्थ रचनाकार से यह अपेक्षा ही नहीं की जाती, यह उसकी बौद्धिक चेतना का सहज गुण भी होता है।" इस प्रकार हम देखते हैं कि बौद्धिक अंतश्चेतना, प्रयोग के क्षेत्र में निडरता और भावाभिव्यक्ति में नितांत मौलिकता उदयराज बाबू के व्यक्तित्व की निजी विशेषताएँ थीं।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि उदयराज बाबू एक कृति पुरुष थे और अपनी कीर्ति से उन्होंने हिंदी साहित्य के इतिहास में अमरत्व प्राप्त किया। 'नई धारा' के निरंतर प्रकाशन और अपनी रचनाशीलता से उन्होंने यह साबित कर दिया कि साहित्य-सेवा वास्तव में एक वृक्ष है जो किसी चीज की प्राप्ति के लोभ से नहीं, वरन सरस्वती के प्रति अप्रतिम निष्ठा की वजह से संपन्न होता है। ऐसे स्पृहणीय जीवन जीनेवाले और सांस्कतिक मूल्यों के प्रति आस्थावान उदयराज बाबू की स्मृति को मैं प्रणाम करता हूँ और यह आशा करता हूँ कि उनकी कृति 'नई धारा' सौजन्य संपादक डॉ० शिवनारायण के सहयोग से उत्तरोत्तर विकास पथ पर अग्रसर होकर अपनी कीर्ति पूरे राष्ट्र में फैलाती रहे।

With best compliments from:

NEW PERFECT ENTERPRISES

Contact us for:

* STD/ISD/ Local /Fax
* Photo Stat, Stationery
* Mobile Connection, Smart Cards & Recharge Voucher

Bengali Road, Mithapur 'B' Area
PATNA- 800001

फ: 2229236(s), 2208175(s)
Fax: 0612-2212183, 99 Mobile: 9835088111

With best compliments from:

DREAMLAND
MEN'S WEAR

duke — INDIA'S NO. 1 T-SHIRT

Monte Carlo — COLLECTION

Contact us:

Shop Number 9,
Community Hall Market Complex
Kankarbagh, Patna- 800020

CHARAK PHARMA

Stockist in

- *Thumis Wander,*
- *Searle, Lupin,*
- *Caldern,*
- *SonaPharma Lab.,*
- *Elder,*
- *Gluconate,*
- *Amritanjan,*
- *Gujarat Lab.,*
- *Orbits,*
- *Stadermed etc.*

Govind Mitra Road
PATNA- 800004

सरदार पटेल जयंती की शुभकामनाओं के साथ:-

मे० नालन्दा मेडिकल्स

मखनियाँ कुआँ रोड, पटना - 800004

एवं

मे० न्यू नालन्दा मेडिकल्स

खजाँची रोड, पटना - 800004

प्रो0 श्यामनंदन शास्त्री : युग-चेतना को प्रतिमानित करनेवाले साहित्य-शिल्पी

सिद्धेश्वर

हिंदी के अनन्य साधक और पटना कॉलेज के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो० श्यामनंदन शास्त्री का निधन हृदय गति रूक जाने के कारण पिछल अगस्त 2004 को पटना के टेकारी घाट रोड स्थित उनके निवास में हो गया। आर्य समाज के सच्चे अनुयायी और राज्य स्तर के पदाधिकारी डॉ० शास्त्री वस्तुत: एक सत् पुरुष थे और हिंदी एवं संस्कृत साहित्य के उद्‌भट विद्वान थे। जहाँ तक मुझे स्मरण है लगभग दो-ढाई दशक पूर्व मैं उनके सान्निध्य में आया और उनके सान्निध्य में रहकर हिंदी साहित्य के बारे में बहुत कुछ जानने और समझने का मुझे मौका मिला। जैसे-जैसे समय बितता गया उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृव्य का प्रभाव मुझ पर अधिकाधिक होता गया। पिछले चार-पाँच वर्षों से उनके संपादकत्व में बिहार के तत्कालीन राजस्व एवं कृषि मंत्री तथा स्वतंत्रता सेनानी स्व० वीरचन्द पटेल की यादगार को ताजा रखने हेतु वीरचन्द पटेल समाज सेवा संस्थान की ओर से कई खंडों में प्रकाशित स्मृति ग्रंथ के लिए मुझसे आलेख प्राप्त करके मुझे कृतार्थ करते रहे और पटेल साहब से जुड़ी अपनी स्मृतियों को शब्दबद्ध कर मैं गर्व का अनुभव करता रहा।

प्रो० शास्त्री जी राष्ट्रभाषा हिंदी के सशक्त रचनाकार ही नहीं, वरन् उसके संरक्षक भी थे। काल के कराल हाथों ने शास्त्री जी को असमय ही न छीना होता तो हिंदी साहित्य और समाज को उनसे और भी बहुत कुछ मिलता। वास्तव में हिंदी साहित्य और वर्तमान समाज को उनकी जरूरत थी। हिंदी को आज ऐसे होनहार हस्ताक्षर की प्रतीक्षा है जो उसकी डगमगाती हुई नैया को किनारे लगा सके।

प्रो० श्यामनंदन शास्त्री जी राष्ट्रधर्म को सबसे बड़ा धर्म मानते थे। राष्ट्रधर्म की उपेक्षा करके राष्ट्र का कोई धर्म, चाहे आत्मधर्म ही क्यों न हो, अपनी पूर्णता का दावा नहीं कर सकता, ऐसा शास्त्री जी का मानना था। राष्ट्र की भूमि से उन्हें जितना प्रेम था, उतना ही आदर उनके मन में यहाँ की संस्कृति के प्रति भी था। यही कारण है कि आर्य समाज में रहकर उन्होंने संस्कृति के सभी संघटक तत्वों के प्रति ममत्व का भाव जागाने का अथक प्रयास किया। हिंदी को उन्होंने भारतीय संस्कृति की आत्मा के रूप में देखा। उन्होंने यह भी महसूस किया था कि लोगों में भारतीयता के इन आधारभूत तत्वों के प्रति अपेक्षित अपनत्व

सबसे दाएं प्रो. श्याम नन्दन शास्त्री

और सम्मान नहीं है और आचार-विचार से वे पाश्चात्य बनते जा रहे हैं। देसी भाषाओं को दासी बनानेवाली भारतीय संस्कृति को विकृत करनेवाली और आर्य संस्कारों को धूमिल करनेवाली अँग्रेजी के विरोध में उन्होंने सदैव अपनी आवाज उठाई।

सामाजिक कुरीतियों और विसंगतियों पर भी शास्त्री जी ने प्रहार किया। पैसों के लालच में आकर अपनी फूलों-सी कोमल कन्याओं को बूढ़ों के जर्जर हाथों में सौपनेवाले क्रूर माता-पिताओं को उन्होंने आड़े हाथों लिया और अनमोल शादियों के विरोध में वे खड़े हुए। समाज में छोटी उम्र में होनेवाले गठबंधनों का भी उन्होंने विरोध किया। क्योंकि ऐसे बाल विवाह शक्तिहीनता का जन्म देते हैं। उन्होंने विधवाओं पर होनेवाले अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाते हुए विधवाओं के दु:ख-दर्द की ओर समाज के प्रगतिशील लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। स्त्री-शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भी उन्होंने समाज का उद्‌बोधन किया। उनकी दृष्टि में स्त्री और पुरुष दानों समान अधिकारों के पात्र थे। वे महिलाओं में ऐसी शिक्षा के हिमायती थे, जो उनमें आत्मविश्वास और आत्मगौरव जगा सके।

इस प्रकार हमनें प्रो० श्यामनंदन शास्त्री जी को एक मानवतावादी साहित्यकार के रूप में देखा, जिनके जीवन में हिंदी साहित्य का प्रेरणादायक अध्याय तो था ही, वे भारत की उस गौरवशाली परंपरा का प्रतिनिधित्व भी करते थे जो जमीन से जुड़ी हुई है, जनजीवन में धुली हुई है और मानवता के उद्धार की मंजुल कामना से संपृक्त है।

प्रो० शास्त्री जी स्वयं आदर्श की प्रतिमूर्ति थे। सत्यनिष्ठा तो उनमें कूट-कूटकर भरी थी। यदि पैसा अर्जित करना ही उनका ध्येय होता तो चिकनी-चुपड़ी बातों से शोहरत और दौलत दोनों बटोर ली होती। पर एक सच्चे ईमानदार लेखक की तरह उन्होंने अपनी आत्मा का सौदा नहीं किया। अपनी रूह की आवाज को दबाकर समाज के बनावटी मायालोक में रहना उन्हें कतई मंजूर नहीं था। इसीलिए तो उन्होंने हर तरह के शोषण का विरोध करते हुए न्याय का सशक्त पक्ष लेकर सत्ताधीशों, पूंजीपतियों, सांमतों, ढोंगी समाज-सुधारकों से सदैव लोहा लिया। वे गाँधी और लोहिया से अत्याधिक प्रभावित थे। आखिर तभी तो उनकी रचनाओं में उदार मानवतावादी दृष्टिकोण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उनकी रचनाओं में व्यष्टि के स्तर पर स्त्य निष्ठा और समष्टि के स्तर पर सौहार्दपूर्ण मानवीयता की मंगलमयी स्थापना हुई।

पिछले 14 जुलाई 2004 को बिहार विधान सभा एवं राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से विधानसभा के वातानुकूलित सभागार में आयोजित हमारे सेनृट्यू काव्य संग्रह 'जागरण के स्वर' के लोकार्पण-समारोहमें व्यक्त प्रो० (डॉ०) श्यामनंदन शास्त्री के उद्‌गार को उपस्थित सुधी श्रोताओं ने मुक्त कंठ से सराहा। उनके इस विचार से कि बिहार विधान सभाध्यक्ष द्वारा लोकार्पित 'जागरण के स्वर' में मैंने अपनी जागरूक चेतना का परिचय दिया है, मैं भी अत्यंत भाव-विह्वल हो गया। मैंने इस रचना में लोक जीवन के महत्वपूर्ण बिंदुओं को विषय

बनाया है इसकी भी उन्होंने चर्चा की। मैं तो उनकी असाधारण विद्वता का सदैव कायल रहा। उन्होंने हमेशा लिखने-पढ़ने में हमारा मनोबल बढ़ाया और मार्ग-दर्शन किया।

निधन के कुछ ही सप्ताह पूर्व पटना के जगत नारायण रोड स्थित स्व० डॉ० मोहन सिंह जी के निवास में आयोजित डॉ० मोहन सिंह स्मृति-ग्रंथ समिति की बैठक में मेरे आग्रह पर न केवल प्रो० शास्त्री जी उपस्थित हुए, बल्कि डॉ० मोहनसिंह स्मृति ग्रंथ के प्रकाशन हेतु हमारे संपादकत्व में गठित संपादक-मंडल के सदस्य के रूप में अपनी स्वीकृति प्रदान कर हर संभव सहयोग करने का उन्होंने आश्वासन दिया था। मैं भी उनकी सहमति के बाद पूरी तरह आस्वस्त हो गया था कि स्मृति ग्रंथ के प्रकाशन में उनकी अहमभूमिका होगी, किंतु विधाता के क्रूर हाथों ने उन्हें हमसे छीनकर मेरे साथ बड़ा अन्याय किया। आपने 'विचार दृष्टि' के प्रारंभ से ही अब तक के अंकों को हमसे माँग कर उसपर समग्र रूप से आप एक समीक्षा लिख रहे थे जो संभवत: अधूरा छोड़कर ही चल बसे। यही नहीं, 'हम और हमारा समाज' तथा 'समकालीन यथार्थ बोध' शीर्षक से हमारी पुस्तकों की पांडुलिपि पर वे अपने अभिमत तैयार ही कर रहे थे कि अचानक वे काल कवलित हो गए। दरअसल विधाता का विधान भी विचित्र है। जो व्यक्ति इस भौतिक संसार में कुछ अच्छा काम कर रहा है उसे शायद ईश्वर भी अपने पास कुछ अच्छा काम करने के लिए बुला लेता है। कहीं ऐसा तो नहीं कि आज इस युग में अच्छे लोगों की कमी कुछ इसी ख्याल से हो रही है। खैर! ईश्वर कितना काम स्व० शास्त्री जी से ले सकेंगे मुझे नहीं मालूम, पर इतना अवश्य है कि जगन्नियंता ने उन्हें हमसे छीनकर अच्छा नहीं किया। क्या हमारे कार्य से भगवान का काम ज्यादा जरूरी था? यदि हाँ तो, उन्होंने हमें इशारा क्यों नहीं किया? हम इतने स्वार्थी भी तो नहीं कि उनके अनुरोध पर हम उन्हें अपने काम से विरमित नहीं करते।

प्रो० शास्त्री जी आज हमारे बीच नहीं हैं पर साहित्यकार की गरिमा और गौरव जो उनमें विद्यमान था और जो आर्दश उन्होंने अपने जीवन काल में प्रस्तुत किया उसे तो हम सब अपने जीवन में ढालते हुए साहित्य को समृद्ध कर सकते हैं। क्या आज हम एक-दूसरे में गहन आस्था के भाव को जगानेवाले साहित्य की रचना, जिसे उभारना शास्त्रीजी का उद्येश्य था, नहीं कर सकते? जिस प्रकार उन्होंने अनेक सामाजिक एवं साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन कर हिंदी साहित्य की सेवा की, पुरानी एवं नई पीढ़ी के बीच एक सेतु का काम किया न तो उन्होंने कोई गुट बनाया और न कहीं किसी खास खूंटे से अपने को बाँधा, आज हमसबों का यह दायित्व बनता है कि उनके पथ पर हम सब चलकर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। उन्होंने न तो किसी की चाटूकारिता कर अपने उठने का प्रयास किया और न ही किसी को गिराने की हाँ, उन्होंने वही किया जिसे उनकी बुद्धि और विवेक ने उचित समझा। समय के सच को उन्होंने स्वीकार किया। मैंने इन्हीं चंद शब्दों में उनकी स्मृतियों को संजोने का प्रयास किया और श्री मद्‌भगवत गीता की इन पंक्तियों से उसकी स्मृति को नमन करते हुए मैं उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ-

'अर्द्वष्टा सर्वभूतानां मैय: करुणा एवं च।
निर्ममों निरहंकार: सम दु:ख सूख क्षमा।।'

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल

के

129वें जयंती-समारोह

के अवसर पर

हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ

मे. विवेक इंटरप्राइजेज

लफार्ज सिमेंट के

थोक एवं खुदरा बिक्रेता

खगौल रोड, मीठापुर,

पटना-८०००१

किशन पटनायक : समाजवाद के प्रति समर्पित चिंतक

✍ सिद्धेश्वर

भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के दौर में जबकि पिछले एक-डेढ़ दशक से समाजवादी और समाजवादी चिंतन दोनों को एक तरह से त्याज्य समझ लिया गया है, विमर्श की दुनिया से उठाकर उन्हें हाशिए पर फेंक दिया गया है और यहाँ तक कि इन पर बहस 'पिछड़ापन', 'बौद्धिक जड़ता', 'वैचारिक रूढ़िवादिता' आदि की संज्ञा दी जाती है, समाजवाद के प्रति समर्पित चिंतक किशन पटनायक ने समाजवाद पर बहस और विचार-विमर्श करना अनवरत रूप से जारी रखा और 'सामयिक वार्ता' के माध्यम से तथा देश के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित विचार संगोष्ठियों, परिचर्चाओं एवं सम्मेलनों के जरिए समाजवाद के झंडे को बुलंद रखने का प्रयास किया। वैश्विक पूंजीवाद और बाजारवाद के वातावरण, हाइटेक अर्थव्यवस्था, इन्फारमेशन हाइवे, हाईटेक मीडिया जैसे विषयों ने समाजवादी चिंतन के 'कल, आज और कल' की प्रासंगिकता पर ही जहाँ प्रश्न चिह्न लगा दिया गया हो इस पृष्ठभूमि में किशन पटनायक ने अपना चिंतन जारी रख मनुष्य व समाज से जुड़े बुनियादी सरोकारों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का परिचय दिया।

मुझे अच्छी तरह स्मरण है पिछले दिनों जब श्री पटनायक किसान-मजदूरों के सवालों पर पटना में आयोजित एक रैली में पधारे थे और मैं उनसे प्रो० विनोद सिंह के चाणक्या कॉलोनी स्थित निवास जहाँ वे ठहरे हुए थे, पर मिलने गया था। कारण, कि राष्ट्रीय विचार मंच के द्वारा उन्हें 'विचार भूषण' से सम्मानित करने की घोषणा की गयी थी और यह सम्मान मंच की ओर से नई दिल्ली में वैचारिक क्रांति को केंद्र में रखकर आयोजित दो-दिवसीय अधिवेशन में उन्हें प्रदान किया जाना था, किंतु अस्वस्थता की वजह से इसे ग्रहण करने नई दिल्ली वे नहीं पधार पाये थे। मैंने उनसे अनुरोध किया था कि वे एक निर्धारित कार्यक्रम में वह सम्मान ग्रहण करें और उन्होंने अपनी स्वीकृति भी दी थी। तदनुसार 31 अक्टूबर 2004 को नई दिल्ली में मंच की ओर से आयोजित लौह पुरुष सरदार पटेल के 129वें जयंती-समारोह के अवसर पर उन्हें यह सम्मान प्रदान किया जाना था, किंतु इसी बीच विगत 27 सितंबर 2004 को बीमारी के कारण भुवनेश्वर के एक निजी अस्पताल में उनका निधन हो गया और एकमात्र अपनी विधवा पत्नी सहित हमारे जैसे देश भर में हजारों शुभेच्छुओं और समाजवादी विचारधाराओं में आस्था रखनेवाले

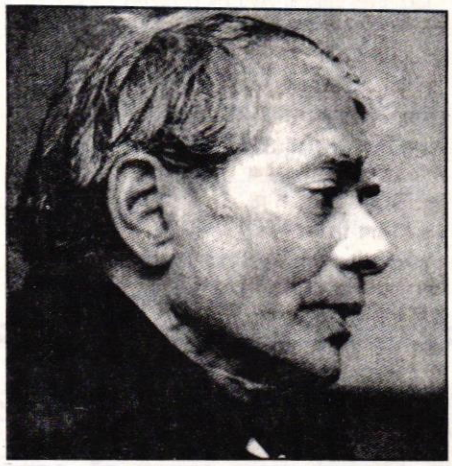

कार्यकर्ताओं को छोड़ गए। उनके कोई संतान नहीं हैं। मंच द्वारा निर्णय लिया गया कि आयोजित सरदार पटेल जयंती समारोह में उनकी विचारधारा के समर्थक तथा दिल्ली वि०वि० के हिंदी प्राध्यापक प्रो० प्रेम सिंह के माध्यम से वह 'विचार भूषण' सम्मान मरणोपरांत उन्हें प्रदान किया जाए।

जब मैंने उनके देहावसान के बाद अपनी पत्रिका के लिए श्रद्धांजलि अर्पण स्वरूप उनपर संस्मरण लिखना प्रारंभ किया तो मेरे समक्ष आज भी यह सवाल एक टीस की तरह खड़ा दिखाई देता है कि आखिर बीती सहस्त्राब्दि में इस देश में समाजवाद और साम्यवाद सहित अनेकोंवाद पर चिंतन क्यों नहीं हो सका जबकि समाजवादी परंपरा यानी प्लेटो के साम्यवाद से लेकर उस काल-यात्रा के सहयात्री 'मोर का यूटोपिया', 'कैंपानेला का सूर्यनगर', 'मैबली का समतावाद', 'बैवूफ की क्रांतिकारी दृष्टि', 'रूसो का ऐतिहासिक दर्शन व अर्थशास्त्र', 'गाडविन का अराजकतावाद', 'वामपंथी युवा का ही गेलवाद', 'बावर बंधुओं का समाजवाद', 'सइलेशिया के मजदूरों का विद्रोह' तथा 'वाइटलिंग का काल्पनिक साम्यवाद' आदि सहयात्रियों की एक लंबी सूची है। क्या समाज व्यवस्था या राज्य व्यवस्था से जुड़े सवालों का संबंध भौतिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं से है? इन चिंतकों-विचारकों के माध्यम से ज्ञात होता है कि यूरोपीय समाज विमर्श और सवालों से भरपूर रहा है, लेकिन भारतीय समाज इस प्रक्रिया से क्यों वंचित रहा? क्या इसके लिए बाहरी हमलावरों व शासकों को दोषी ठहराया जाना चाहिए? मुझे तो ऐसा लगता है कि इस प्रक्रिया के नहीं होने के पीछे भारतीय समाज की आंतरिक संरचना में निहित वर्ण तानाशाही को कठघरे में खड़ा किया जाना लाजिमी होगा, क्योंकि पिछले एक हजार वर्षों में हमने संत-सूफीवाद, श्रृंगारवाद, रूपवाद, चारणवाद, परलोकवाद तथा हताशावाद आदि से ही हमने संतोष किया और इस अवधि में हम सामंतवाद, वर्णवाद में चिंतक-विचारक पैदा नहीं कर सके। देश का कोई भी शासक बाबरनामा जैसा सेल्फ क्रिटिकल आत्मचरित्र नहीं लिख सका। इसी प्रकार सरवांतीस का उपन्यास 'डॉन क्विग्जोट' जैसा समाज को उघाड़नेवाला उपन्यास (सोलहवीं सदी) नहीं लिखा जा सका। निश्चित ही यह दुःखद एवं चिंताजनक स्थिति है।

ऐसी स्थिति में किशन पटनायक इन सवालों से टकराते हुए इसके समर्थन में उन्होंने तर्क और विवेक का प्रयोग किया। यह उनका भावनात्मक चयन था। वे सदैव भूमि, कर्ज, किसान-मजदूरों की समस्या तथा गरीबों की जरूरतों से संबंधित हिदायतें देते रहे और पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अपनी आवाज बुलंद करते रहे। उन्होंने धर्मगुरुओं, संतों तथा महापुरुषों के वचनों में समाजवाद तथा लोकतंत्र के अंकुर तलाशने की कोशिश की। जय प्रकाश नारायण ने सन् 1974 में जब भ्रष्टाचार एवं निरंकुश शासन के खिलाफ आंदोलन छेड़ा और संपूर्ण क्रांति का बिगुल बजाया तब किशन पटनायक ने इस आंदोलन में अपनी प्रमुख

भूमिका निभाई। संपूर्ण क्रांति के सपने अधूरे रहने पर आज जब पूरे राजनीतिक परिदृश्य पर भ्रष्टाचार और घोटाले का बोलबाला हो गया है और मौजूदा हालात में संसद की सार्थकता ही खतरे में दिख रही है किशन पटनायक ने छात्र और युवा को राजनीतिक भूमिका अदा करते हुए वक्त का हथियार बनने की बजाय हाथ बनने का आह्वान किया था। छात्र राजनीति पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा था यह आज छात्रों की महज राजनीतिक गिरोह बंदी और विश्वविद्यालीय राजनीति तक केवल सिमटकर रह गयी है। छात्र और युवा दिग्भ्रमित हो गए हैं और वे राष्ट्रीय राजनीति का मोहरा भर रहे हैं।

शिक्षा के सवाल पर उनका मानना था कि आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो व्यक्तिगत उलझनों से लेकर सामाजिक तथा राष्ट्रीय उलझनों तक को सुलझाने में सहायक हो, जिससे शिक्षार्थी अपना जीवन सुचारू रूप से चला सकें और राष्ट्र को भी प्रगति के पथ पर ले जा सकें।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में यह कहना यथोचित होगा कि डॉ० लोहिया के बाद समाजवादी परंपरा के सबसे मौलिक चिंतक किशन पटनायक हुए। सुप्रसिद्ध राजनीति शास्त्री योगेन्द्र यादव का मानना है कि किशन जी के समाजवादी आंदोलन से जुड़ने की प्रेरणा डॉ० लोहिया भले ही न रहे हों, मगर उन्हें समाजवादी राजनीति और चिंतन की दीक्षा उन्होंने ही दी थी। इस लिहाज से डॉ० राम मनोहर लोहिया और किशन पटनायक में गुरु-शिष्य का रिश्ता था। डॉ० लोहिया के निधन के बाद किशन जी ने 'लोहिया विचार मंच', समता संगठन', 'समाजवादी जन परिषद', 'जनांदोलन समन्वय समिति' नामक कई संगठनों के माध्यम से एक सार्थक और जनतांत्रिक स्वरूपवाली वैकल्पिक राजनीति की तलाश करते रहे। बापू की अहिंसा और आधुनिकता के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए 'विकल्पहीन नहीं है दुनिया' अपनी पुस्तक के एक आलेख में किशन पटनायक ने लिखा है कि "भारत के बाहर गाँधी का प्रभाव नगण्य होते हुए भी उल्लेखनीय इसलिए है कि हथियारों के खिलाफ गौरे लोग और अत्याचार के खिलाफ काले लोग- रंगीन लोग जब मुकाबला करते हैं तो गाँधी की अहिंसा के बारे सोचते हैं। आधुनिक सभ्यता से लड़ने का मुद्दा भारतीय मस्तिष्क में होना चाहिए क्योंकि भारतीय चेतना में एक वैकल्पिक सभ्यता के तत्व उजागर होते रहते हैं।"

किशन पटनायक का अचानक चला जाना एक अत्यंत दु:खद घटना है और समाजवादी आंदोलन के लिए बहुत बड़ा नुकसान जिसकी पूर्ति बहरहाल दिखती नहीं। किंतु उनकी यादगार को ताजा रखने हेतु समाजवादी विचारधारा के सजग नागरिकों का यह दायित्व बनता है कि वे उनके द्वारा प्रज्ज्वलित मशाल को जलाए रखें और उनके विचारों को जनता के बीच ले जाकर उन्हें जागृत करें। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से
नई दिल्ली तथा पटना में आयोजित
सरदार पटेल की १२९वीं जयंती के अवसर पर
हमारी शुभकामनाएँ

मे० कृष्णा फ्लोरिंग्स

भीमसेन मार्केट,
खगौल रोड, अनीशाबाद,
पटना-२

मे० कृष्णा फ्लोरिंग्स

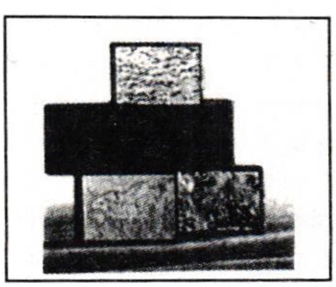

खगौल रोड, फुलवारी शरीफ
पंजाब नेशनल बैंक के पास
बी० एम० पी०-१६
पटना-८००००२

वर्तमान इतिहासकारों की बेचैनी और एन.सी.ई.आर.टी. की किताबें

✍देवनन्दन सिंह

अंग्रेजी और हिंदी पत्रिकाओं में भगवाकरण की बातें पढ़ते-पढ़ते जन-साधारण के मन में यह धारणा हल नहीं हो रही है कि इतिहास का भगवाकरण इतिहास छोड़कर और किसी विषय पर लागू नहीं होता। हिमालय की जगह दरिया नहीं लिखा जा सकता। अर्थशास्त्र में इतिहास घसीटा नहीं जा सकता है। फिर यह हो-हल्ला क्यों है?

एन.सी.ई.आर.टी. एक अच्छी संस्था है। उसका उद्देश्य है विषयों को अधिक से अधिक तथ्यों को मनन के बाद उसे प्रकाशित करना जो विद्यार्थियों के लिए बोधगम्य हो और रूचिकर भी हों।

इतिहास पर ही बौछार क्यों है? इसे जानने के लिए वर्ग-10वीं (सी.बी.एस.ई. और केन्द्रीय विद्यालय) में समाज विज्ञान का उदाहरण लें। पहले 35 अंक का इतिहास, 35 अंक का भूगोल तथा 20 अंक का नागरिक शास्त्र और 10 अंक का अर्थशास्त्र की परीक्षा ली जाती थी। अब नये सिरे से अंकों का बँटवारा इस प्रकार है- इतिहास 20 अंक, भूगोल 40 अंक और अर्थशास्त्र 40 अंक। अर्थशास्त्र में कुछ परिच्छेद नागरिक शास्त्र के हैं जो नीचे वर्गों में नहीं पढ़ाया जाता है जैसे आतंक, क्रांति, विद्रोही या बागी, जातिवाद, धर्मवाद और क्षेत्रवाद इत्यादि की व्याख्या है जिसका प्रभाव भारतीय आर्थिक विकास के लिए अवरोधक है। भारतीय आर्थिक स्थिति को ज्यादा आवश्यक माना गया है जो बहुत जरूरी है। भूगोल और अर्थशास्त्र का संबंध चोली-दामन सा है।

अब इतिहास की बारी है। 35 अंक से घटाकर 20 अंक किया गया है। इसमें सभी तरह के उत्थान की बातें, कला, धार्मिक स्थल, मजार, दरगाह, किलाओं आदि का वर्णन किया गया है। इसमें समाज के कल्याण की बातें भी बतायी गयी हैं। उन पन्नों को पढ़ने या पढ़ाने पर पता चलता है कि कोई भी संस्था नहीं छोड़ दी गयी है:- हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी, बौद्ध, जैन आदि सभी धर्मों का समावेश है और कच्चे दिमाग के लिए इतना काफी है।

इतिहासकारों की नजर में क्रूरता की रौब नशे में झूमते रहना और सोने का घंट, अपने परिवार में लिप्त और अधर्म कार्य करके ऊपर दूसरे धर्म की चादर चढ़ाना और विशेष कर सैंकड़ों, हजारों युवतियों को किन्नरों की देखभाल में रखना ही इतिहास है तो इसका जबाव वे अपने हृदय में ढूँढ़ें, क्या न्यायप्रद है? सुंदर कुमारियों और राजकुमारियों को पता लगाने के लिए पावड़िया की एक टोली बनायी गयी थी। बच्चों के पैदा होने पर यह जाति नाच दिखाया करती थी और वहीं से पहचान पाती थी। उसके बाद दूसरे लोगों ने गोदना को चलाया जिसे गोद नयतिन कहते हैं यानी अपनी स्त्री के बराबर उसका भाव होता था कर्म में नहीं कर्त्तव्य में। क्या वे चाहेंगे कि उनका वंश माजूम खाकर झूमता चले। इन बातों को छोड़कर सभी अच्छी बातों का समावेश है। हमने कहीं नहीं पाया कि हल्दीघाटी, चित्तौड़गढ़, उदयपुर की चर्चा हो जिसकी वंशावली 566 ए.डी. से पूर्व है और जहाँ गृह मंत्री, लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल स्वयं गये और महाराजा भूपाल सिंह बीमारी की हालात में मेवाड़ को भारत में विलय सेकण्ड में सही कर दे दिये क्योंकि मेवाड़ कभी झुका नहीं था और भारत -विलय में सबसे ऊपर चमकता है। यही अन्य राजाओं और महाराजाओं के ऊपर हथकंडा बना और सही करते गये। उस मेवाड़ के चित्तौड़गढ़ को कहीं एक जगह और जगहों के साथ 'बलशाली चित्तौरगढ़' लिखा हुआ है।

अगर भगवाकरण की बात करनेवाले जरा विचार करें दसवीं के पूरे इतिहास में मेवाड़ पर ऊपर लिखे दो शब्द हैं। दसवें के इतिहास में भारत की चारों दिशाओं के उत्कृष्ट उदाहरण रखें गये हैं। सनातन धर्म से ज्यादा वर्णन है दूसरे धर्मों का ।

ऐसी बातें शिक्षकों के बीच आनी चाहिए। ये किताबें भी ज्ञातव्य इतिहासकारों के मंथन पर ही प्रकाशित की गयीं हैं। नौवें वर्ग की भी यही बात है।

श्री इरफान हबीब ने छः भागों में एक खास अवधि का संग्रह किया है।

1) पुली ईरान से आया।

इस थार की स्वर्णमयी भूमि (पश्चिम राजस्थान) पर लोग पानी पीना नहीं जानते थे?

2) शिवाजी गौ और ब्राह्मण के रक्षक थे।

मालूम होना चाहिए कि उनके दलों में मुसलमान भी थे और कंधे से कंधा मिलाकर लड़े थे।

अब आईये जो इमान की बात है। आठवें वर्ग (सी.बी.एस.ई.) का इतिहास पढ़ाते समय एक स्वस्थ विद्यार्थी (खान) एक-ब-एक उठा और उसके साथ 10-12 और। क्लास 40 बच्चों का होगा। बच्चियाँ सब एक दूसरे सेक्शन में थीं। आठवें के कई सेक्शन थे।

उस विद्यार्थी ने तलब किया कि सर! यह उक्ति हम मानने को तैयार नहीं हैं। जहाँ तीस हजार राजपुतानियाँ सज-धज कर क्रमबद्ध गीत गातीं सहर्ष जौहर महारानी से लेकर डोमनी तक खेली थीं। कहा जाता है कि एक डोमनी के ससुर उसे पंक्ति से हटाना चाहते थे। वह बोली कि क्या मैं राजपुतानी नहीं हूँ और बोली मैं हूँ । वहाँ का महाराजा क्या, छोटी जाति भी अपनी बेटी या बहन को भेंट नहीं चढ़ायेगी। इस पर हमने कहा, शांत रहो। वह युवती, जो दी गयी थी वह एक साधारण जुलाहे की बेटी थी। उसका नाम जूही था। वह इतनी खूबसूरत और सौम्य थी कि लोग उसे जोहिया कहते थे। वही जोधाबाई बनकर सम्राट, महलों और बड़े-बड़े सिपाहसालारों पर राज की फिर भी एक स्वर में बच्चों ने कहा, 'असंभव' हम यह भी नहीं मानते और आगे आप जो कह रहें हैं, वह हम सत्य नहीं मानते। यह कोई दरबारी लेखक सम्राट का नमक रोटी खानेवाला लिखा होगा। और आगे सवाल किया कि क्या अल्लाउद्दीन खिलजी माता महारानी पद्मिनी की पवित्र सती भभूत रगड़ने के लिए पा सका था। नहीं। नहीं। उसे जीवन भर पछताना पड़ा कि वह जगह जहाँ महारानी सती हुई थीं खोज नहीं पाया। मेवाड़ के भँगियों और अरावली के भीलों की कौन बराबरी कर सकता है। क्या आप स्कूल के सचिव के खिलाफ बोल सकतें हैं?

हम स्तब्ध रह गये। उसने फिर कहा - आज तक 'सती' और 'जौहर' दो शब्द जानते हैं - क्या फर्क होता है- इसे आपने बताया और आपने अपने लेख में लिखा था कि 'कुमारी सती' (यानी अविवाहित, पवित्र राजकुमारी सती), अनजान सती, सती और जौहर चार प्रकार की देवियाँ अभी भी उनके वंशवाले पूजते हैं। सच यह है कि बहुत सारे इतिहासकारों को पता नहीं- लिखेंगे क्या?

श्री अर्जुन देव जो एन.सी.ई.आर.टी. के लेखक थे आज हिंदुस्तान, हिंदी दैनिक, पटना में पढ़ा(17.06.2004)। एक भी उदाहरण नहीं भगवाकरण का।

हमें तो यह महसूस हो रहा है कि आधुनिक इतिहासकारों द्वारा गायी गयीं गाथाएँ अधिकांश ढहकर कुछ पन्नों में उतर जायेंगी। उनका

मान-सम्मान, आमदनी, नोट लिखना आदि श्रोतों के बंद होने का भय है। यह सत्य है कि भारत में जो भी सरकार बनेगी वह इन लोगों पर कड़ी दृष्टि रखेगी, मनमानी गाथा नहीं भँजेंगी। चर्चा में एक बात और उभरी थी- बड़ी जोरों से उस समय अकबर महान कहकर एक टी.वी. सिरियल बना था। उसका प्रतिरोध जोरों से हुआ - खास कर जाट बिरादरी और उनके सहयोगी द्वारा। भरतपुर, मथुरा और, जगहों में सिंहनाद होता था। हम भी कलम को शेर मान बैठे थे। मामला कचहरी तक पहूँचा। श्री पी.के. सिंह देव, सूचना एवं प्रसारण मंत्री थे। उन्हें सिरियल को पूर्णत: बंद करना पड़ा था। ऐसे लोगों ने अकबर को बहुत उछाला है। अगर धैर्यपूर्वक देखा जाये तो जो शेरशाह अशोक मौर्य के बाद किया वैसा और कोई नहीं। पाँच वर्ष की अवधि में उसने युद्ध करते हुए जमीन की पैमाईश, पैदावार के अनुसार लगान राज टोडरमल से कराई। (बाद में अकबर ने भी राजा टोडरमल को रखा) वह आज भी गणतंत्र में लागू है। डाक का प्रबंध, सड़क निर्माण, सराय और कुएँ का निर्माण, वृक्षों को लगाना सबकुछ किया। वह तो चित्तौड़गढ़ कब्जा कर गुजरात पहुँचा था। वह एक स्त्री वाला सम्राट था, बहादुर था। आज भी नेशनल हाईवे नं.2 'कोलकाता से दिल्ली' शेरशाह सूरी के नाम चौड़ाई बढ़ाती जा रही है और अकबर रोड दिल्ली में।

शेरशाह के सिपाहियों को वैसे ही बनाया गया था जैसे मेवाड़ के महाराजाओं ने, 'दुश्मन की औरतों और बच्चों को छूना नहीं जहाँ वे जाना चाहें, इज्जत से पहुँचाना है। शिवाजी ने ये कायदे मेवाड़ से सीखे थे।

क्या दक्षिण भारत जाते समय कौन सी सड़क अकबर ने बनवायी थी? प्रश्न यह उठता है कि आखिर सैनिक, घोड़े, हाथी, ऊँट, गदहा, खच्चर, गाड़ी के साथ क्या भोजन और चारा बाँधकर चले थे? नहीं। नहीं। वे लूटते, खड़ी फसलों को बरबाद करते, औरतों के साथ खिलबाड़ करते गये थे। भरतपुर और मथुरा का इतिहास जानकर बताइये। क्यों सभी लोग खास कर जाट अपनी बहु-बेटियों को लेकर उस दिशा में भागे थे जिधर अकबर का आतंक नहीं था। आज भी बेतहाशा गिरते-पड़ते भागने की विपदा भरी कहानियाँ सुनिये। इतिहासकार दिन-ए-इलाही को 50 पन्नों पर लिखते जाते हैं। जो बच्चा बेजान पैदा हुआ, उसकी गाथा क्या हो सकती है? दीन-ए-इलाही एक कमरे की चौखट पार न हुई। बस इतना काफी है। आज हमें बताइये देश की सभ्यता, संस्कृति पर्व-त्यौहार, मेले-ठेले, आने-जाने की स्वच्छंदता पर अंकुश और दाग लगाने में क्यों बेचैन हैं? आज के बच्चों को सच्चाई से मेल कराइये। वे ही कल देश के कर्णधार बनेंगे। भारत को बनाईये, डुबाइये नहीं। जो अपने बच्चों पर लागू नहीं करते उसे देश भर के बच्चों पर नहीं थोपिये। उचित रास्ता बताइये। हम अपने बेटे को 100 चुरकी रखेंगे, कोई बात नहीं- क्या हमें अधिकार है कि दूसरे बच्चे की एक ही चुरकी है, उसे काट दें?

566 ए.डी. से आज तक मेवाड़ के कुर्सीनामा में कहीं कोई राजकुमारी ने शासन नहीं चलाई है फिर कर्णावती के पुत्र का प्रश्न कहाँ उठता है? मानबाई राठौर वंश पर झूठे की कलम उठाते , हमें अपनी बेटियों का ज्ञान आवश्यक है। मीराबाई राठौर थी, वहाँ मनती डोमनी भी नहीं भेजी गयी थी। याद रखिये आज भी राजपूत अपने दुश्मनों के गुण को नकारते नहीं हैं और फिर राठौरों और शिशिदियों का संबंध आज भी बहुत अच्छा माना जाता है।

राणा संग्राम सिंह (राणा सांगा के नाम से मशहूर) जिनके शरीर पर अस्सी घाव थे, फिर भी युद्ध कर रहे थे। भला ऐसा योद्धा कभी विदेशियों को भारत में बुला सकता है, आप रामायण, रामचरित्मानस, वेद और उसके पहले और आज उनका जोड़ा पैदा नहीं हुआ है, ऐसी गंदगी बच्चों के दिमाग में न भरिये।

कादम्बिनी के तत्कालीन संपादक महोदय, श्रीमान राजेन्द्र अवस्थी की छाया में इतिहास को कितना मरोड़ा गया। क्या आपने कभी सोचने का कष्ट किया है। भूगोल पढ़ते-पढ़ाते हैं तो भारत में चाँदी की खान नहीं मिलती । अवस्थी जी दिवा-स्वप्न में राजस्थान को चाँदी से भरा मानते हैं वेलगाम खादानों से खनिज निकालना। कभी आपने वर्तमान को समझने की कोशिश की है? नहीं। क्योंकि उससे अर्थ-सिद्धि नहीं होगी।

अशोक मौर्य और शेरशाह के बाद तीसरा युग पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल आये, जिन्होंने खंडित भारत को एक कर अखंड भारत का सपना साकार किया।

जहाँ अनार्य विन्ध्या के दक्षिण खदेड़ दिये गये थे और उत्तर भारत में आर्य बसे। यह कितना हास्यास्पद है । इसी बात पर वे द्रविड़ अलग होना चाहते थे। दक्षिण के शासक उनके रचे हुए जन साधारण के लिए कार्यनामा बहुत ज्यादा उत्तम है, उत्तर भारत से । उनका राजतंत्र बहुत सुधरा हुआ था। उत्तर भारत के पुरुष स्त्रियों के ज्यादा काले हैं - आज भी। क्या वे काले द्रविड़ की पहचान नहीं है? हैं। दक्षिण की स्त्रियों की आँखों के सामने उत्तर भारत की नारियाँ फीकी पड़ जाती हैं। भारत में संसार की सभी तरह की जलवायु हैं- हिम वर्षा से विषवत् रेखीय तक। जलवायु का असर सबसे ज्यादा रहता है।

संस्कृति और सभ्यता मरती नहीं है। वह एक दूसरे पर गढ़ बनाना चाहती है, भारत में छ: ऋतुओं का नाम भूगोल में लिख देना क्या गुनहगार है? कभी नहीं। अपनी मान्यता को छोड़िये नहीं। छ: ऋतुओं में जलवायु बाँटना कोई एक दिन का खेल नहीं है, वह वर्षों और सदियों के हिसाब से बनाये हुए हैं। आप इसका अनुमान होनेवाले रोगों से पता चला सकते हैं। एक कोने में छ: ऋतुओं के नाम लिख दीजिये।

गणतंत्र भारत के लिए नये सिरे से इतिहास लिखिये। गुलामी की रट छोड़िये। जहाँ से अच्छाईयाँ मिलती हैं, उसे रखिये। याद रखिये अगर मेरा बेटा मेरे मृत शरीर पर एक इमारत खड़ा कर दे तो उससे हमारे ग्राम-वासियों को क्या मिलेगा? मिलेगा जब वह उसी पैसे से गाँव की बच्चियों के पढ़ने के लिए दो कमरा बना दे, एक सभागार बना दे या निरीह औरतों के घरों पर फूस डलवा दे । एक विधवा को दो पत्थर की चक्की खरीद दे जिस पर वह हाथ से पीसकर जीवन का निर्वाह करे।

माननीय इतिहासकारो। भारत की भूमि पर जाड़ा, गर्मी और बरसात से मिलिये। तब पता चलेगा भारत क्या है। एयर कंडिशन में बैठकर कलम चमकाने से भारत कभी नहीं चमकेगा। श्री इरफान हबीब से मेरा अनुरोध है कि वे अपनी भाषा सुधारें और उनकी गंदी भाषा प्रोफेसर गिलानी के कारनामों से न जोड़ें । भारत सरकार से हमारा अनुरोध है कि उन लेखकों से, जो धूम मचा रहे है नर्सरी से लेकर 10वीं-12वीं तक और ऊपर जहाँ भगवाकरण हुआ है, क्रमानुसार (टेबुलर फार्म) में मन्तव्य माँगे, इतिहास के विद्वत्जन आप सब अपना-अपना मन्तव्य दें जहाँ भगवाकरण हुआ है इसे मानव संसाधन मंत्रालय में दीजिये।

संपर्क: बी-3, (द्वितीय तल) प्राची
सिद्धार्थ अपार्टमेंट जगदेव पथ
(बेली रोड) पटना -800014

With best compliments from:

Puja Food Products Ltd.

Manufacturer
&
Distributor

Maida, Atta,
Suji & Bran

Digha Ghat, Patna - 800 011

(: (Mill) 2263290, 2263200, 2260350, 2268757

Fax: 0612-2260350

Residence: 2262783, 2260925, 2262930, 2268079

याद किए गए लोकनायक जे०पी०

संपूर्ण बिहार में लोकनायक जय प्रकाश नारायण की जयंती मनायी गयी। पटना के गाँधी मैदान के पास स्थित जे०पी० की प्रतिमा पर यहाँ राज्यपाल एम०रामा जोईस तथा मुख्यमंत्री राबड़ी देवी ने माल्यार्पण किया वहीं कदमकुआँ स्थित जे०पी० के निवास पर डॉ मुरली मनोहर जोशी तथा भाजपा अध्यक्ष एम० वेंकैया नायडू ने उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। जे०पी० ने संपूर्ण क्रांति के जरिए व्यवस्था परिवर्तन की बात की थी किंतु कुछ शिखंडी राजनीतिज्ञों ने उनके सपने को चकनाचूर कर दिया।

दत्तोपंत ढेंगड़ी का निधनः

भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक दत्तोपंत ढेंगड़ी का निधन 84 वर्ष की उम्र में विगत 14 अक्टूबर को हो गया।

'सुपरमैन' क्रिस्टोफर रीव नहीं रहे

हॉलीवुड के जगप्रसिद्ध अभिनेता 52 वर्षीय क्रिस्टोफर रीव का विगत 10 अक्टूबर को वाशिंगटन में निधन हो गया। वे 1995 से लकवाग्रस्त थे।

बिहार के कृषि मंत्री गुलाम सरवर का निधन

बिहार के कृषि मंत्री तथा उर्दू दैनिक 'संगम' के संस्थापक संपादक गुलाम सरवर का विगत 17 अक्टूबर को 8 वर्ष की आयु में निधन हो गया। समाजवादी विचारधारा के पोषक स्व० सरवर एक अच्छे इंसान थे। वे अपने पीछे पत्नी तथा तीन पुत्रियाँ सहित अनेकों शुभेच्छुओं को छोड़ गए। 'विचार दृष्टि' की ओर से स्व० सरवर को हार्दिक श्रद्धांजलि।

दलित समाज का एक सशक्त सिपाही वी0पी0मौर्य का निधन

भारत सरकार के पूर्व मंत्री और जनपद गाजियाबाद के सृजनकर्ता बुद्ध प्रिय मौर्य का निधन पिछले 28 सितंबर को गाजियाबाद में हो गया। देश के एक समर्पित क्रांतिकारी कुशल राजनेता, ओजस्वी अधिवक्ता, प्रखर सांसद तथा प्रखर विद्वान स्व० मौर्य ने सदैव गरीबों व पिछड़े समुदायों के लोगों का नेतृत्व किया। उनके निधन से देश के दलितों ने अपनी एक क्रांतिकारी आवाज खो दी है। 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से भावभरी श्रद्धांजलि।

ठुमरी की मलिका शोभा गुर्टू का निधन

विचार ब्यूरो, मुबंई

ठुमरी की मलिका और दिलकश आवाज की धनी 79 वर्षीय शोभा गुर्ट का विगत 27 सितंबर को मुंबई में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। कर्नाटक के बेलगाम में 1925 को जन्मी शोभा बचपन से ही संगीत की दीवानी थी और अपना प्रारंभिक प्रशिक्षण अपनी माँ एक पेशेवर नृत्यांगना मीनीका बाई शिरोडकर से हासिल किया था।

अंग्रेजी लेखक मुल्क राज आनंद नहीं रहे

भारत के समाज का सत्य चित्रण कर लोगों के दिलों में घर करनेवाले अंग्रेजी लेखक मुल्कराज आनंद का विगत 28 सितंबर को 99 वर्ष की उम्र में पूणे में देहावसान हो गया। भारतीय अँग्रेजी उपन्यास के संस्थापकों में गिनेजाने वाले पद्मभूषण मुल्कराज आनंद अपनी कृति 'अनटचेबल' से शोहरत की बुलंदियों पर पहुँचे जिसमें उन्होंने भारतीय समाज में जड़ जमाए जाति व्यवस्था के साथ ही तत्कालीन ब्रिटिश साम्राज्य का बड़ा ही सशक्त चित्रण किया। इनके लेखन में गरीबों और शोषितों के शोषण-उत्पीड़न के खिलाफ आवाज बुलंद होती है और सामाजिक भेदभाव के खात्मे का पुरजोर आग्रह मिलता है। श्रद्धांजलि।

समाजवादी चिंतन किशन पटनायक चल बसे

विचार ब्यूरो, भुवनेश्वर

सुप्रसिद्ध समाजवादी चिंतक तथा जे०पी० के संपूर्ण क्रांति आंदोलन के प्रमुख नेता किशन पटनायक का 74 वर्ष की उम्र में भुवनेश्वर के एक निजी अस्पताल में बीमारी से निधन हो गया। उनके कोई संतान नहीं है। वे अपने पीछे अपनी विधवा पत्नी सहित देश भर के हजारों शुभेच्छु छोड़ गए।

राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से नई दिल्ली में वैचारिक क्रांति पर आयोजित दो-दिवसीय अधिवेशन के अवसर पर उन्हें 'विचार भूषण' से सम्मानित करने की घोषणा की गयी थी जिसे अब उनके मरणोपरांत उनके सहयोगी प्रो० प्रेम सिंह को 31 अक्टूबर 2004 को नई दिल्ली में प्रदान किया गया। मंच एवं विचार दृष्टि' परिवार की ओर से समाजवाद के प्रति समर्पित स्व० पटनायक को हार्दिक श्रद्धांजलि।

डॉ0 राजा रामन्ना का निधन

विचार ब्यूरो, दिल्ली

भारतीय परमाणुबम कार्यक्रम के जनक तथा प्रसिद्ध नाभिकीय वैज्ञानिक, लेखक, प्रशासक, दार्शनिक और पियानोवादक डॉ० राजा रामन्ना का निधन पिछले 24 सितंबर को मुंबई के एक अस्पताल में हो गया। विगत कई दिनों से उन्हें आँत की समस्या थी। वे अपने पीछे विधवा पत्नी सहित दो पुत्रियाँ तथा एक पुत्र छोड़ गए।

डॉ० रामन्ना 1983-87 के दौरान परमाण ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष तथा 1990 में रक्षा राज्य मंत्री भी रहे। उन्होंने 18 मई 1974 को राजस्थान के पोखरण में शांतिपूर्ण परमाणु में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए भारत को दुनिया के नाभिकीय नक्शे पर ला दिया। इस दौरान सिर्फ पाँच देशों को ही यह गौरव हासिल था।

राष्ट्रपति डॉ० एपीजे अबुल कलाम ने अपने गुरु व मार्गदर्शक डॉ० रामन्ना के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से आधात पहुँचा है। डॉ० रामन्ना के देहावसान से देश ने एक महान वैज्ञानिक खो दिया है। 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से डॉ० रामन्ना को भावभीनी श्रद्धांजलि।

हँसाते-हँसाते रूला गए 'मस्तमौला' महमूद

पाँच दशकों तक लोगों को हँसा-हँसाकर लोट-पोटकर देनेवाले जाने-माने हास्य अभिनेता महमूद का विगत 23 जुलाई को अमेरिका के पेनसिल्वेनिया शहर में लंबी बीमारी के बाद 72 वर्ष की उम्र मं निधन हो गया।

आकूत प्रतिभा के साथ सिर्फ अपने चेहरे के हाव-भाव से ही लोगों को जिंदगी खुशनुमा बनाने वाले महमूद ने अपने जीवन में 125 से अधिक फिल्मों मं काम किया जिनमें पड़ोसन, कुँआरा बाप, भूत बंगला, बांबे टू गोवा, हमजोली, मैं सुंदर हूँ जैसी फिल्मों में काम कर उन्होंने मील का पत्थर स्थापित किया। महमूद ही हिंदी सिनेमा के एक मात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हास्य को हाशिए पर नहीं शिखर पर पहुँचाया। इन्होंने हास्य को नयी परिभाषा दी। एक ऐसा व्यक्ति जो सिर्फ लोगों के सामने खड़ा होकर हँसने पर मजबूर कर देता था।

हिंदी फिल्मों में कामेडी के एक सितारे का अस्त हो गया। जॉनी वाकर के बाद महमूद ऐसे दूसरे कामेडियन थे जिन्होंने अपना स्वयं का दर्शक तैयार किया था। उनकी हँसाने की कला आज भी फिल्मों में आनेवाले नए कामेडी कलाकारों के लिए एक मिसाल रहेगी।

प्रो0 श्यामनन्दन शास्त्री को भावभीनी श्रद्धांजलि

राष्ट्रीय विचार मंच की बिहार इकाई एवं वीरचन्द पटेल समाज सेवा संस्थान की ओर से पटना में प्रो० रामबुझावन सिंह की अध्यक्षता में आयोजित शोक सभा में पटना कॉलेज के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो० (डॉ०) श्यामनंदन शास्त्री के असामयिक निधन पर

गहरा दुःख प्रकट करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने प्रो० शास्त्री के देहावसान को अपनी व्यक्तिगत क्षति बताते हुए उन्हें हिंदी एवं संस्कृति साहित्य का एक सच्चा साधक बताया। उनका साहित्य ही उनका जीवन था। लिखना उनके लिए स्वांस लेने जैसा था।

इसी प्रकार राँची में राहुल स्टडी सर्किल तथा अर्जक संघ की ओर से डॉ० पी०एन० विद्यार्थी की अध्यक्षता में हुई एक शोक सभा में प्रो० बी० दयाल, मतवर राम, 'दादाजी', बी०एन० प्रसाद, जगमोहन मेहता, सुभाष पासवान विनोद सिंह यादव तथा परमानन्द सिंह आदि ने प्रो० शास्त्री को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए रूढ़ियों, अँधविश्वासों और पाखण्डों से समाज को मुक्ति दिलाने का संकल्प लिया गया।

प्रस्तुति : डॉ० हेमंत पटेल, पटना तथा
डॉ० गिरधारी राम गौंझू, राँची से

'हिंदी फिल्मों की माँ' निरुपा राय का निधनः

अमिताभ सहित कई दिग्गज अभिनेताओं की माँ का किरदार सशक्त ढंग से निभानेवाली तथा' हिंदी फिल्मों की माँ' की संज्ञा से विभूषित 73 वर्षीय निरुपा राय का निधन विगत 13 अक्टूबर को दिल का दौरा पड़ने से हो गया। सन् 1953 में आई विमल राय की फिल्म 'दो बिघा जमीन' ने उन्हें सामाजिक उद्येश्यों पर बननेवाली फिल्मों की सशक्त अभिनेत्री के रूप में स्थापित कर दिया।

जयपुर का जांबाज कश्मीर में शहीद

विचार ब्यूरो, जयपुर

जयपुर के जांबाज मेजर योगेश अग्रवाल जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में आतंकवादियों से लोहा लेते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए।

मुरलीपुरा के गणेशनगर के निवासी अजय कुमार अग्रवाल और कुसुम देवी को अपने इकलौते वीर सुपुत्र के सहीद होने का गम तो था पर साथ ही देश के लिए शहादत का गर्व भी था।

- सुश्री पल्लवी, जयपुर से

सरदार पटेल की 129वीं जयंती पर हमारी शुभकामनाओं के साथ :-

मंजिल फैशन हाउस

फैन्सी सलवार सूट, मैक्सी, प्रफॉक्स
एवं आधूनिक डिजायन के सूट्स
और बने-बनाए वस्त्र उपलब्ध

ए-192, पिपुल्स कोओपरेटीव कॉलोनी, (कॉम्यूनिटी हॉल के उत्तर)
कंकड़बाग, पटना-800020
दूरभाषः 0312-2367647 (नि.)

सरदार पटेल जयंती की शुभकामनाओं के साथ:-

बाबू गुप्तनाथ सिंह स्मारिका समिति

भभुआ--कैमुर, बिहार

इस समिति द्वारा निम्न पुस्तकों का पुकाशन किया गया है:-

1. बाबु गुप्तनाथ सिंह - स्मृति ग्रंथ - संपादक - डॉ. गनौरी महतो : 125/-
2. छत्रपति शिवाजी - लेखक - गुप्तनाथ सिंह : 125/-
3. कुर्मी जाति का संक्षिप्त परिचय - लेखक - गुप्तनाथ सिंह : 125/-

पुस्तक प्राप्ति का सीन -
द्वारा - गाँधी कुष्ठ निवारण प्रतिष्ठान
गाँधी ग्राम, भभुआ, कैमुर
बिहार - 821101

इसके अलावे वीरचंद पटेल स्मृति ग्रंथ
के संपादक बीपीन बिप्लबी को 125 रु.
भुगतान कर उपर्युक्त पुस्तकें प्राप्त की जा सकती हैं ।
सभी पुस्तक 250 से 300 पृष्ठों की है।

निवेदक
समिति के सदस्य

सरदार पटेल जयंती की शुभकामनाओं के साथ:-

मे. सुपर सिमेंट ट्रेड़िंग

भवन निर्माण सामग्री के विक्रेता

के.सी., ए.सी.सी, लफार्ज

मीठापुर, खगौल रोड
पटना - 800001

साभार-स्वीकार

पुस्तकें :

1. **गंगा यमुना सभ्यता** - दोहा सतसई
2. **भारत हो सम्पन्न**
   दोहाकार : ए०बी० सिंह जे०के०पावर
   शम्भुपुरा-312612 चितौरगढ़, राजस्थान
3. **उन्मुक्त स्वर** - काव्य-संग्रह
   कवयित्री : डॉ० इन्दिरा अग्रवाल, अलीगढ़
4. **भारतीय साहित्य की झलक-**
   लेखक डॉ० इंदरराज बैद, चेनै
5. **स्वातंत्र्यवीर सावरकर**-जीवन-वृत
   लेखक : परमानंद दोषी, पटना
6. **जानिए 'योग्य' प्रधानमंत्री को**
   लेखक : प्रेम सिंह, दिल्ली
7. **Dawn's Delights**
   Writer : Prem Mohan Lakhotia, Jaipur
8. **अन्धेरे के खिलाफ**
9. **कोई वजह तो होगी**
   लेखक : डॉ० राकेश कुमार सिंह, आगरा
10. **हिंदी तुझे प्रणाम** - काव्य-संग्रह
    कवि : आचार्य भगवत दुबे, जबलपुर
11. **गाँधी की आत्मकथा से नैतिक शिक्षा**
12. **एक अछूत युवक की कहानी**
13. **गाँधी की शाश्वत प्रासंगिकता**
    लेखक : प्रो० के०डी० गंगराडे, नई दिल्ली
14. गोडसे की आवाज सुनो
    लेखक : जगदीश वल्लभ गोस्वामी, नई दिल्ली
15. **अपूर्व रामायण (सुंदरकाण्ड)**
    लेखक : द्विज महेन्द्र मोहन मिश्र
    संपादक : रामनाथ पाण्डेय, छपरा
16. **मान-अपमान -कहानी संकलन**
    लेखक : डॉ० राज कुमार सिंह 'कुमार'
    विष्णुपुरी, सारण
17. **पाँच विकल्प**
    लेखक : विशन स्वरूप गोयल, दिल्ली
18. **काश गाँधीजी ने कुरान पढ़ी होती, तो.....**
    लेखक : विशन सिंह गोयल, दिल्ली
19. **राजनीति के रंग**
20. **क्रांति**
    लेखक : जवाहर लाल 'मधुकर', चेन्नई
21. **दान एक मजबूरी**
    लेखक : डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर'
22. **धरती जानती है - काव्य-संग्रह**
    कवि : गिरीश पाण्डे, लखनऊ
23. **भिक्षु-गीता २४. अहिंसा प्रशिक्षण**
25. तेरापंथ 26. भिक्षु विचार दर्शन
    लेखक - आचार्य महाप्रज्ञ
27. **ऐसे थे भिक्षु**
    लेखक : मुनि मोहन लाल 'आमेट'
    प्रकाशन - जैन विश्व भारती प्रकाशन, लाडनू
28. **अहिंसा यात्रा पथ में**
    लेखक - मुनि मोहजीत कुमार
29. **आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन**
    लेखक : आचार्य महाप्रज्ञ
30. **आचार्य भिक्षु की अनुशासन शैली**
    लेखिका : साध्वी प्रमुखाकनक प्रभा
31. **क्षणांश - हाइकु संग्रह**
    हाइकुकार : रमेश चंद्र शर्मा 'चंद्र' अहमदाबाद
32. **सूखे हैं बसंत के प्राण - गीत संग्रह**
    गीतकार : डॉ० परमलाल गुप्त, सतना, म०प्र०
33. **विश्वकविता की ओर - काव्य संग्रह**
    कवि : डॉ० श्याम सिंह शशि, दिल्ली
34. **प्यासा बन पाखी -हाइकु-संग्रह**
    हाइकुकार : डॉ० रमाकांत श्रीवास्तव, लखनऊ
35. **कालांश - हाइकु संग्रह**
    कवयित्री : डॉ० इंदिरा अग्रवाल, अलीगढ़
36. **लय नहीं टूटी -गीत संग्रह**
    गीतकार : रमेश चंद्र शर्मा 'चंद्र', अहमदाबाद
37. **दोषी कौन ? -कहानी संग्रह**
    कहानीकार : कमल किशोर दुबे 'कमल',
    अहमदाबाद
38. **The Real Patriots of Hindusthan**
    Writers : Dr. Madhuri Madhok &
    Dr. R.N. Gupta
39. **A Comprative Stady of Early Novels in Hindi & Telugu**
    Writer : Dr. A.B. Sai Prasad, Bangalor
40. **Nature Cure - A way of life**
    Dr. S.R. Jindal, Bangalor
41. **Islam**
    Editor : Chaman lal Chopra, Solan, H.P.
42. **Evengelisation 2000 or Politecs of Subversion ?**
    Writer : P. Parmesharam, Bangalor
43. **Facts about Islam**
    Writer : Brother Abdullah, Cairo
44. Why Muslum distroy Hindu Temples?
    Writer : Anwar Shaikh, Delhi
45. **Untold Realties of Islam Terrorism**
    Swami Lakshmi Shankaracharya.

पत्रिकाएँ

1. **घरोहर** -स्मारिका
   प्र० संपादक : डॉ० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, सारण
2. **Rashtriya Chetna**
   Editor : Kanayalal M. Talreja, Delhi
3. **युग चिंतामणि** जून, 04
   संपादक : नरपत लाल मेहता, चेन्नई
4. **रैन बसेरा** -जून 04 से सितम्बर 04 तक
   प्र० संपादक : जय सिंह व्यथित, अहमदाबाद
5. **पुष्पक** -4
   प्र० संपादक : डॉ० ऋषभदेव शर्मा
   संपादक : डॉ० अहिल्या मिश्र, हैदराबाद
6. **चांस** जून-नवंबर 2003
   संपादक : सुरेन्द्र कुमार सिंह
   ग्रा०+पो० - राजापुर, जनपद-मऊ, उ०प्र०
7. **श्री प्रभा** मार्च-04
   संपादक : डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव
8. **मित्र संगम** अगस्त-सितम्बर 04
   संपादक : प्रेम वोहरा, दिल्ली
9. **राष्ट्रभाषा** -अगस्त-सितम्बर 04
   प्र० संपादक : प्रा० अनंतराम त्रिपाठी, वर्धा
10. **रेल दर्पण** फरवरी-जून 04
    प्रकाशक : पश्चिम रेलवे, मुंबई
11. **भारतीय रेल** सितम्बर 04
    संपादक : प्रमोद कुमार यादव, दिल्ली
12. अणुव्रत 1-15 अक्टूबर 04 तक
    संपादक : डॉ० महेन्द्र कर्णावट
13. नई धारा जून 2004
    सौजन्य संपादक : डॉ० शिवनारायण, पटना
14. सामयिक वार्ता अक्टूबर 2004
    कार्यकारी संपादक : योगेन्द्र यादव, दिल्ली
15. हरित क्रांति जून 2004
    संपादक : डॉ० मेहता नगेन्द्र, पटना

राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संवाहिका

विचार दृष्टि

अब नये तेवर व कलेवर में

विचारोत्तेजक एवं प्रभावोत्पादक आलेख जाने-माने लेखकों की कलम से
शानदार कागज पर जानदार छपाई
आकर्षक साज-सज्जा में बोलती तस्वीरें
सामाजिक राजनीतिक यथार्थ की कहानियाँ व कविताएँ
सम-सामयिक मुद्दों पर निष्पक्ष एवं निर्भिक विचार व दृष्टि
शिक्षा, सेहत, महिलाओं पर विशेष सामग्री
कला, संस्कृति एवं साहित्य पर गहरी पड़ताल
दिखने में सुंदर और पढ़ने में बेहतर
सदस्यता ग्रहण कर आप अपनी प्रति सुरक्षित कराएँ और एक अच्छी मानसिक खुराक पायें

प्रबंध संपादक, विचार दृष्टि

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास, बोकारो
झारखंड

दूरभाष: ६५७६५
फैक्स: ६५१२३

परीक्षा
प्रार्थनीय

सुरेश एवं राजीव

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस

(रूपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज,
पटना-८०००४
दूरभाष: २६६२८३७

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चाँदी तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल प्रा.लि.

Patna Bone & Spine Hospital Pvt. Ltd.

A Centre Dedicated to Advanced Care of Bone & Spine Surgery Only

1. टूटी हड्डियों को कम्प्यूट्रीकृत एक्सरे (IIT) के द्वारा बैठाने की सुविधा।
2. हाथ/पाँव की सभी हड्डियों के टूट बिना प्लास्टर, बिना ज्यादा चीर-फाड़ के क्लोज्ड इन्टर लौकिंग नेल (Close Interlocking Nail) द्वारा इलाज, ताकि मरीज तुरन्त चल सके।
3. छोटे छिद्र द्वारा (Arthroscopic) घुटने के अन्दर की खराबियों का इलाज।
4. जन्मजात, पोलियो, चोट के बाद टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियों का इलिजारोब (Ilizarov) तकनीक द्वारा इलाज।
5. रीढ़ (गर्दन समेत) की हड्डियों एवं नस का ऑपरेशन, छोटे छिद्र (Microdiscectomy) द्वारा डिस्क प्रोलैप्स का ऑपरेशन।
6. रीढ़ की चोट की सम्पूर्ण एवं विशिष्ट चिकित्सा।
7. पूर्ण जोड़ प्रत्यावर्तन (Total Joint Replacement)।
8. वास्कुलर, न्यूरो, प्लास्टिक, फेसियोमैक्जिलरी, माइक्रो सर्जरी के विशेषज्ञों द्वारा एक दल के रूप में बहुअंगीय (Polytrauma) कठिन चोटों का इलाज।
9. हृदय, न्यूरो, छाती के औषधि विशेषज्ञों की देख-रेख।

Dr. Vishvendra Kumar Sinha
M.B.B.S. (Pat.), D. orth. (Pat.) M.S. (orth.), FICS (USA) Ph.D. (orth.)

H-3, Doctors Colony, Kankarbagh, PATNA-800 020 Ph. : 2361180
एच.-3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800 020. फोन : 2361180

वर्ष : 6 अंक : 21 अक्टूबर–दिसंबर 2004 RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791

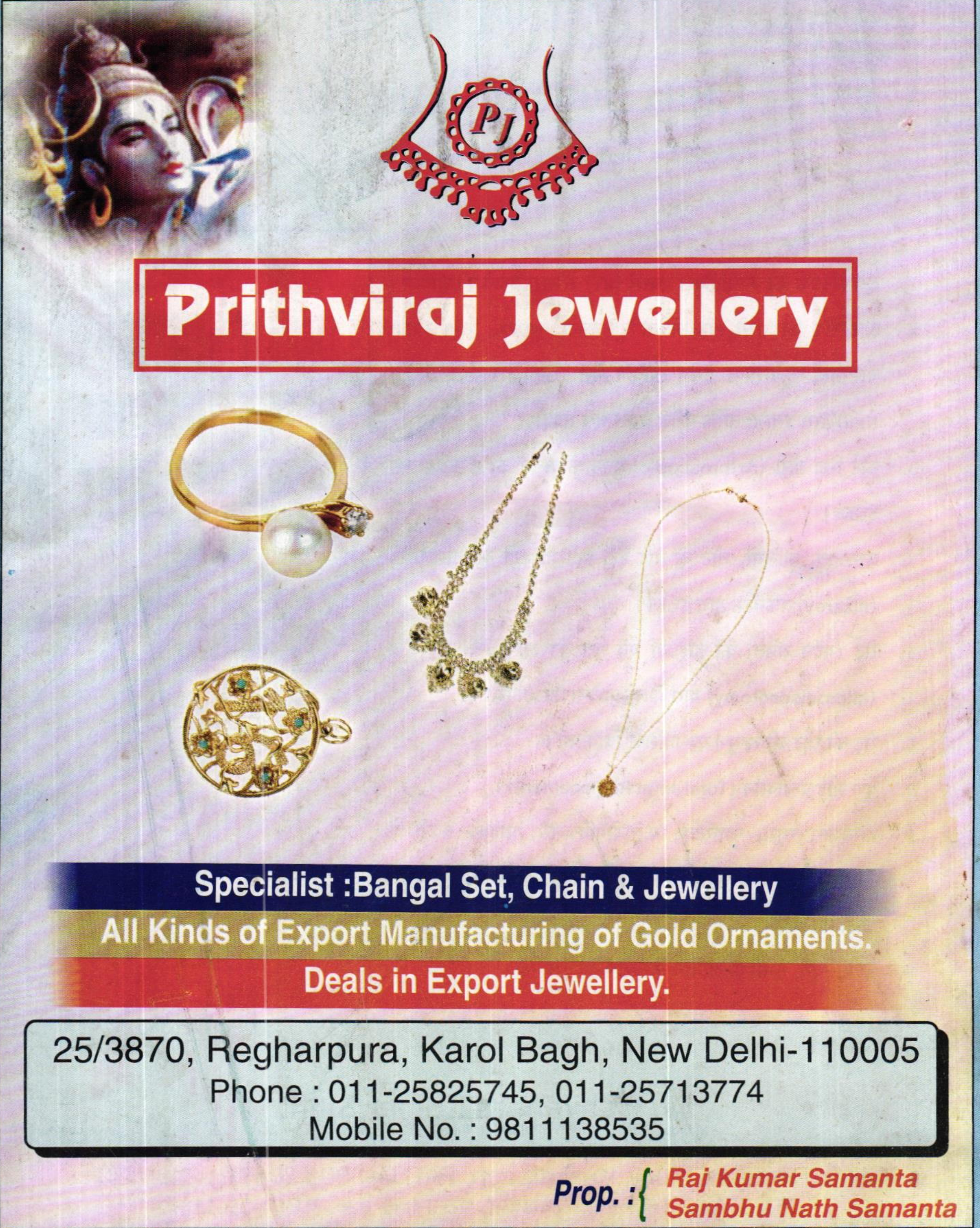

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। संपादक-सिद्धेश्वर